सखाराम बाइन्डर



मूल लेखक
विजय तेंडुलकर
अनुवादिका
सरोजिनी वर्मा

सखाराम बाइंडर





लोकभारती प्रकाशन

१५-ए महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद-१

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद-१ द्वारा प्रकाशित
●
प्रथम संस्करण : १९७३
●

●
लोकभारती प्रेस
१८, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद द्वारा मुद्रित

मूल्य : ९.००

विजयी भाई साहब और कचन को

आखिर क्यो ?

आखिर 'सखाराम बाइडर' पर इतना होहल्ला क्यो ?

महाराष्ट्र सरकार के सेन्सर ने इस नाटक पर प्रतिबन्ध लगाया, मुकद्दमेबाजी हुई--शोर मचा--फिर कोर्ट से प्रतिबन्ध हटाने का आदेश हुआ, सम्भ्रान्त अभिजात्य वर्ग ने पहले नाक-भौं सिकोडी फिर इस नाटक के दजनों प्रदर्शनो मे अपने लिए सीटें बुक करायी, अखबारो ने इसके पक्ष विपक्ष दोनो तरफ टिप्पणियाँ जडी, न्यस्त स्वार्थों ने नाटककार पर कीचड उछाला और उनके साथ 'समाज के नैतिक ठीकेदारो' ने शारीरिक हिंसा करने का दु साहस किया !

आखिर यह सब क्यो ?

सम्भवत इसीलिए कि रगमच के माध्यम से नाटककार विजय तेंडुलकर ने 'सखाराम बाइडर' को इस तरह निर्मित किया कि वह गलाजत से भरी दिखावटी सभ्रान्तता को पहली बार इतने सक्षम ढग से चुनौती देता है। रटे रटाए मूल्यो को सखाराम ही नही इस नाटक के सारे पात्र अपनी पात्रता की खोज मे ध्वस्त करते चले जाते हैं। जिन नक्ली मूल्यो को हम अपने ऊपर आडबर की तरह थोप कर चिकने चुपड़े बने रहना चाहते हैं, उसे सही सही इस आइन मे निर्ममता से उघडता हुआ देखते है। सखाराम बाइडर' वही आइना है।

प्रचलित जीवन के मूल्यो को चुनौती देना अब तक केवल बडे आदमियो का कार्य माना जाता था। सखाराम बाइडर कोई बडा आदमी नही है। वह तो एक अत्यन्त साधारण प्राणी है किन्तु उसकी सामाजिकता या उसकी अपनी निजता जिस प्रकार नैतिकता की स्वीकृत मान्यताओ पर प्रश्न चिह्न लगा देती है। वह अभूतपूर्व है उसके जीवन

के मूल्य तेंडुलकर के अनुसार—उसी के जीवन-आचरण से नि सृत होते हैं। वह कोई भी बाहरी मूल्य स्वीकार करने को तैयार नही है। यह भी सहज सम्भव है कि सखाराम अपने मुक्त यौनाचार को अपने जिन कधो पर उठाकर चलना चाहता है सम्भवत सक्षम रूप से उस भार को ढोने के लिए उसके कधे उतने मजबूत न दीखें। किन्तु उसके भीतर का एक आत्मविश्वास जिसके द्वारा वह अपने सही-गलत आचरण से सारे प्रतिमानो को लेकर खडा होता है—मैं समझती हूँ कि 'करनी' का इतना साहस भी आज के 'वक्वासी कथनी युग' में अत्यन्त दुर्लभ है। सखाराम का महत्व इसी दृष्टि से है। जिन्दगी जैसी है उसे उसी ही रूप में सहज स्वीकार करके चलना और उस पर अपने ही आचरण की निजी मुहर लगा देना चाहे उससे अन्ततः एक निरर्थकता की ही उपलब्धि हाथ आए—समस्त सखारामों की नियति है।

नाटक का ऐसा खुलापन खेलनेवालो के लिए जितनी बडी चुनौती है, उससे कम देखनेवालो के लिए नही। भाषा के स्तर पर सारे पात्र बडी खुली और ऐसी बाजारूपन से सयुक्त भाषा का प्रयोग करते हैं जिन्हें हमने अकेले-दुकेले कभी सुना जरूर होगा किन्तु उसे अपनी सस्कारिता का अश मानने से सदैव कतराते रहे हैं। पूरे नाटक मे कथावस्तु की विलक्षणता न होते हुए भी पात्रो का आपसी सयोजन भाषा के जिस स्तर पर नाटककार ने किया है, वह नाटकीयता को उभारने मे अद्‌भुत रूप से सफल हुआ। प्रमाणस्वरूप बम्बई और दिल्ली जैसे नगरो मे इस नाटक के अनेकानेक प्रदर्शन हुए जिन्होंने प्रबुद्ध दर्शकवर्ग को मन्त्रमुग्ध रखा।

मुझे जब यह नाटक बम्बई से श्री सत्यदेव दुबे ने अनुवाद करने के लिए भेजा तो मेरे सामने भारी धर्म-सकट उपस्थित हुआ। मराठी वाङ्‌मय का बहुत-सा अनुवाद कर चुकी हूँ। तेंडुलकर के कई नाटक भी अनूदित कर चुकी थी किन्तु यह नाटक मेरी अपनी उत्तर प्रदेशीय-सस्कारिता के लिए सचमुच ही एक धर्म-सकट पैदा करता था। जैसा मैंने

कहा है भाषा के स्तर पर नाटक अभिनेता, निर्देशक और दर्शक के लिए तो चुनौती है ही सबसे अधिक तो अनुवादक के लिए है। मराठी की इतनी बाजारू जनभाषा से परिचित होने के लिए उस वर्ग का सहज सम्पर्क चाहिए था। उसे हिन्दी मे उतारने के लिए भी उसी दुःसाहस की अनिवार्यता थी। नाटक मेरे लिए हर तरह से चुनौती था। पहले हिम्मत छोड दी थी किन्तु नाटक खेलनेवालो के उत्साह को देखकर मुझे अपनी उस 'तथाकथित सस्कारिता' को तिलाजलि देकर—(कहूँ कि बेहया होकर!) इस नाटक के साथ सर्जनात्मक स्तर पर जूझना पड़ा।

भाषा का चयन करते समय मैंने कई बातो का ध्यान रखा है। मूल मराठी में नाटककार को अपनी भाषा के साथ खेलने का जो सहज अधिकार प्राप्त है, वह तो मुझे हिन्दी मे प्राप्त नही है और, जितना है भी उसका मैं पूरी तरह से उपयोग नही कर सकी। मुझे पात्रो की भाषा की ऐसी बनावट रखनी पडी जो हिन्दी होते हुए भी केवल हिन्दी प्रदेश के दर्शकों तक ही नही वरन् हिन्दी के माध्यम से दूसरी भाषाओं के रसग्रहण करने वाले पजाब, बगाल, गुजरात और तमिलनाडु मे बसने वाले नाट्य-प्रेमियो तक के लिए सहज ग्राह्य हो। कुछ आलोचकों ने इस नाटक की प्रस्तुति की चर्चाओ मे इसकी भाषा पर सस्कारग्रस्त होने का जो आरोप लगाया है। वह किसी अर्थ मे शायद सही भी हो। इस नाटक के आलेख मे मैं एक विशिष्ट क्षेत्र को ध्यान मे रख कर भाषा को सहज ही ऐसा बना सकती थी जो हिन्दी क्षेत्र की लोकभाषाओ की समृद्धि से जुडकर दूसरा रग पैदा कर सकती थी। किन्तु वह 'भोजपुरी फिल्मो' की तरह एक ऐसी आचलिकता उत्पन्न करती जो दूसरे प्रदेश के दर्शको के इस बोध पर प्रतिरोध ही लगाती। फिर भी मैंने भाषा में अब दुबारा बहुत से ऐसे परिवर्तन कर दिए हैं जो उनके लोक-रग को उभारने मे सहायक होगे। वैसे अलग अलग प्रदेशो मे यह नाटक खेलनेवालो से मेरा अनुरोध है कि वे नाटक के पात्रो की बोलियो मे

यदि क्षेत्रीय पुट का प्रयोग स्वतः कर सकें तो नाटक में अधिक आनन्द आयेगा।

इस नाटक को मंच पर देखकर ही इसका संपूर्ण रस ग्रहण किया जा सकेगा। पात्र सखाराम बाइन्डर को नाटककार तेंडुलकर ने कहीं से ज्यों का त्यों उठा लिया था। यह उसकी प्रामाणिकता की कसौटी न भी हो तो भी आप उससे सीधे-सीधे साक्षात्कार करें और उसके अपने जीवन-दर्शन को समझें। इसके लिए आपको कोई बाहरी लेबुल लगाने की जरूरत न पड़े मेरा बस यही आग्रह है।

—सरोजिनी वर्मा

कार्तिकी पूर्णिमा
१० नवम्बर, १९७३

पात्र-परिचय



- सखाराम बाइन्डर
- लक्ष्मी
- दाऊद
- चपा
- चपा का पति

अंक पहला



पहला दृश्य

●

शाम का समय। खपरैला घर। जैसा गाँवों में होता है। बाहर का कमरा और उसके पीछे रसोई दिखाई दे रही है। घर के बाहर बच्चों का शोरगुल...

सखाराम : (बच्चों को संबोधित करते हुए गरजता है) क्या है ? है क्या यहाँ ? क्या देख रहे हो ? नंगा नाच हो रहा है क्या कोई यहाँ ? भागो यहाँ से—भागो यहाँ से ! भागो नहीं तो साले मार-मार के भूसा भर दूँगा, चलो भागो—

एक स्त्री को साथ लिए हुए दरवाजा खोलकर अंदर आता है। मध्यम वय का। रूखे किन्तु तेज व्यक्तित्व का। मूँछें तथा दाढ़ी के काले-सफेद खूँटे बढ़े हुए। बदन पर गंदा कुर्ता, धोती और जैकेट। सिर पर ऊलजलूल तरीके से लगी हुई टोपी। पैर में चप्पल। आगन्तुक स्त्री बहुत भयभीत-सी। पोटली छाती पर कसकर दबाए हुए। कृश शरीर थरथरा रहा है। दीवार से सटी-सिमटी खड़ी है।

सखाराम : आओ। देखभाल लो ठीक से घर। इसी घर मे रहना है अब तुम्हे। घर भी मेरी ही तरह है। बाद में चीं चपड मत करना।

वह जैसे-तैसे पूरे घर पर एक नजर डालती है।

: ठीक से देख दाख लो। समझ मे आए तो डालो पोटली नीचे नही तो ऐसी ही निकल जाओ बाहर। यह राजा का महल नही, सखाराम बाइडर का घर है। सखाराम बाइडर तुम्हारे पहले वाले आदमी की तरह नही है। वह क्या है यह अलग से समझना पडेगा तुम्हे। सब घोडे बारह टके वाला हिसाब यहाँ नही चलेगा। दिमाग गरम है अपना। गुस्सा आया तो मार मार के भुरता बना दूँगा। क्या समझी? मुँहफट हूँ। मुँह मे गाली और बीडी हर वक्त मौजूद रहती है। सारा गाँव यह कहता है। हालत बहुत अच्छी नही पर खाने को दोनो टाइम जरूर मिलेगा। दो धोती शुरू मे। फिर साल मे एक। वह भी बढिया नही, मामूली। बाद मे किटकिट सुनूँगा नही। घर का सब काम कायदे से और बिना भूल-चूक के करना पडेगा। निकम्मापन दिखाई दिया नही कि घर से बाहर। कोई रियायत नही। बाद मे तोहमत न देना। अपने घर मे राजा की तरह रहता हूँ। गाँव में मियाँ बीबी की तरह रहे या नही, घर, घर जैसा चाहिए मुझे। क्या समझी?

वह जैसे तैसे सिर हिलाती है।

: घर के पीछे एक कुआँ है। पाखाना दूर है। गर्मी मे कुआँ सूख जाता है। पानी नदी से लाना पडता है। नदी सवा मील पर है। बरसात मे इस तरफ बिच्छू निकलते हैं। घर से बाहर बिना काम आना-जाना मुझे पसन्द नहीं। घर मे

कोई आया तो सिर उठाकर बोलना नही। कोई गैर आदमी आए तो मुँह पर आँचल रखकर सिर्फ दो एक जरूरी बात करना। मैं न रहूँ तो घर मे किसी को बुलाना नही। मैं भँगेडी, गंजेडी, रडीबाज चाहे जो होऊँ—बल्कि हूँ भी। दारू पीता हूँ। पर अपने घर मे मेरी कदर रहनी चाहिए इस घर का मालिक मैं हूँ। मेरा अदब मानकर चलना होगा। क्या समझी ? सब बात कबूल है कि कहना है कुछ ? कुछ कहना हो तो बाहर का रास्ता नापो चटपट। इस घर मे कहना सिर्फ मेरा ही चलता है, दूसरो को उसके हिसाब से चलना होगा। क्या समझी ? किसी बात पर 'क्यो' नही सुनता मैं। एक बात और—ब्याही औरत की तरह रहना पडेगा। बाकी अपने आप समझो—

वह बकी-बकी नजर घुमाकर सारे घर को देख रही है।

करार मजूर है ? अगर मजूर है तो भीतर चाय मे जाकर लगो। चूल्हे के पास दूध ऊध होगा, जाओ।

वह हडबडा कर जल्दी से अंदर खिसक जाती है। पोटली एक तरफ रखकर चूल्हे के पास जाती है।

जब तक यहाँ हो किसी से डरने का काम नही। यह सखाराम बाइडर सब का बाप बनकर बैठा है यहाँ। परमेश्वर के बाप से भी नही डरता।

वह आतंकित होकर स्तब्ध खड़ी है।

सब करता हूँ, बस एक झूठ नही बोलता। बताया नो, रडीबाजी करता हूँ, दारूबाजी करता हूँ। जो कुछ करता हूँ डके की चोट पर। सब के मुँह पर यह कहता हूँ। किस कोठे पर कितनी बार चढा जिसको पूछना हो आकर पूछे

कोठा भी दिखा दूँगा कहोगे तो। आजकल नहीं जाता। गाँव में साले एक सिरे से सब चोरी-छिपे झक मारते हैं—सब घाट पानी पीकर बगुला भगत बने फिरते हैं। सब गुपचुप गुपचुप। अरे कलेजा हो तो खुल्लम खुल्ला करो न जो करना है। है क्या उसमें ? साला यह शरीर, यह वासना का भण्डार है भण्डार। इसे बनाया किसने है ? उसी ने तो। तो क्या उसे पता नहीं ? बाप है वह बाप सबका। तुम्हारा भी।

बीड़ी सुलगाकर स्टूल पर बैठ जाता है।

हम कोई सत महात्मा थोड़े ही हैं ? आदमी हैं हम। अपनी खुजली पूजा पाठों से नहीं मिटती कबूल करता हूँ। कोई चीज चाहिए तो बस चाहिए। उसमें चोरी कैसी ? किससे चोरी ? अपने बाप से ?

वह चाय बनाने के लिए चूल्हे के पास बैठती है। पर कोई चीज उसे मिल नहीं रही है। घबराई हुई आखिर वह उठ कर रसोई के दरवाजे पर आती है। धीरे से खँखारती है।

सखाराम : (जरा सुखी होते हुए) हाँ बोलो। बड़ा मुँहफट हूँ मैं। सुनकर तक्लीफ होती होगी तुम्हें। जनम से ही मैं ऐसा हूँ। पैदा हुआ तो नगा। माँ कहा करती थी कि मरे को हया शरम ही नहीं है। ब्राह्मण के घर, कहती थी कि चमार पैदा हुआ है। अब चमार पैदा हुआ तो तुम जानो। वह क्या मेरे करम से ?

वह बहुत सकुचाई सी खड़ी है।

तुम ब्राह्मण के घर की मालूम पड़ती हो। तुम्हें उस हिसाब से तक्लीफ होती होगी।

वह इनकार में सिर हिलाती है। कुछ कहना चाहती है।

: लो, यानी ब्राह्मण के घर की न होकर भी तुम ब्राह्मण और मैं ब्राह्मण के घर जनम लेकर भी चमार। साला अच्छा मजा है। ग्यारह बरस का था तभी घर से भाग गया। बाप के हाथ से मार खा-खाकर जी उकता गया था। मेरा सभी काम काटता था उन्हें। जैसे उनका दुश्मन होकर उनके घर पैदा हुआ था मैं। जब देखो बस पीटता ही रहता था। किसी चीज की जरूरत है शायद, क्यों ?

वह स्त्री : (झुकी गर्दन) दियासलाई नहीं है अन्दर।

सखाराम : (अपने पास की दियासलाई फेंककर) तो लो न। इस तरह शरमाने की जरूरत नहीं है। इस घर में जो लगे माँग लो। मगर न मिले तो हुज्जत न करो। यह राजा का नहीं सखाराम बाइडर का महल है।

वह भीतर जाते-जाते ठिठक जाती है।

सखाराम : अब और क्या ? चाय का चूरा होगा वहीं टीन के डिब्बे मे, कि खतम हो गया ? पहली वाली ने बहुत खर्च कर दिया—बहुत चाय पीती थी—अभी शुक्रवार को ही तो गई है—

वह स्त्री : (इनकार में सिर हिलाकर) ठाकुर जी कहाँ हैं ?

सखाराम : अच्छा अच्छा ! ठाकुर ? होगें वहीं कहीं भीतर। कबाड़ मे। उससे पहली वाली को था चस्का—दो-चार तस्वीर थी शायद। पता नहीं, है कि उठा ले गई— बाद में यह आई—बाद वाली। उसे उस सबका कुछ नहीं था—वह अपने मरद के कुर्ते की पूजा किया करती थी—जान लेने चला था उसकी—और वही उसका भगवान। जान लेनेवाला भगवान और जान बचाने वाला इंसान। यहाँ दो बरस तक

उसके कुर्ते की पूजा किया करती थी। तपेदिक हो गया इसलिए मिरज के अस्पताल मे शुक्रवार को पहुँचा दिया था। वही मर गई। कुर्ता तकिए के नीचे तब भी दबा था। ए सुनो ! चाय मे शक्कर बहुत लगती है मुझे और पत्ती भी ज्यादा डालना। गाढी बने, लाल रग की। जाओ जल्दी करो।

वह अन्दर जाती है। चूल्हे के पास बैठते-बैठते अलगनी पर टँगी हुई धोती पर नजर जाती है। पुरानी फटी सी धोती। उसे एकटक देखती है फिर चूल्हा जलाकर चाय चढ़ाती है। जरा विचार-मग्न होती है। सखाराम जैकेट उतार-कर खूंटी पर टांगता है। खिड़की से बाहर कुछ दिखाई दे जाता है।

: अरे ए ऽ तेरी माँ की साले, गाय सब बाड तोड रही है। आंख फूटी है क्या ? हँका इधर से। पैसे लगे हैं बाड बनवाने मे।

अन्दर वह स्त्री यह सब असह्य होने पर आँखें कसकर बन्द कर लेती है। सखाराम खूंटी से मृदग उतारकर बैठ जाता है। मृदग गोद में रखता है। बजाना शुरू करता है।

: बहुत अच्छे !

वह चाय लेकर जाती है। डरती है और ध्यान आकर्षित करने के लिए खंखारती है।

: हाँ, लाओ दो।

वह देती है। चाय-तश्तरी मे डालकर घूंट भरता है फिर गुरजता है।

: आ-हा-हा-हा-हा —

वह भयभीत है।

: बहुत अच्छे।

वह बहुत भयभीत। चाय पीकर प्याला-तश्तरी वह एक तरफ रखता है। वह उसे उठाकर अन्दर जाने लगती है।

: तुम भी पी लो चाय। जो खाना पीना हो अपने आप खाओ पियो। यह न सोचो कि कोई कहने जायेगा। यह सब लाड यहाँ नही होने वाला।

वह अन्दर जाती है। एक कटोरी मे चाय डालकर फूंकने को होती है कि बाहर पुकार, "सखाराम है क्या ?"

(चिल्लाकर) कौन—दाउद मियाँ ? आओ आओ। अन्दर आओ।

दाउद आता है।

दाउद : सलाम वालेकुम सखाराम भाई।

सखाराम (चिल्लाकर) और चाय देना बाहर। (दाउद से) वालेकुम सलाम दाउद भाई—आओ बैठो।

दाउद : सुना नया पछी लाये हो ?

सखाराम : हाँ। बस चला ही आ रहा हूँ। हुआ होगा-आधा घण्टा। तुम्हारा क्या हाल चाल है ?

दाउद : हमारा क्या हाल होगा भाई, चल रही है गाड़ी किसी तरह (नजर अन्दर) कहाँ से लाये ?

सखाराम . सोनावण से। खबर मिल गई थी इसीलिए सवेरे ही चला गया था। धरमशाले मे थी।

दाउद : दिखाओ तो जरा। (नजर अन्दर की तरफ)

सखाराम : देखने लायक कहो तो इस दफे कुछ नही है। किसी समय चेहरा-मोहरा ठीक ठाक रहा होगा पर अब तो मरद की मार खा-खाकर सारा नमक झर-झरा गया है।

कप में चाय लिए हुए वह दरवाजे पर खड़ी है।

तुम्हे बताऊँ दाउद मियाँ, ये सब के सब मरद साले पौने आठ, हिजड़े! खुद तो बच्चा पैदा कर नही पाते गुस्सा उतारते हैं औरत पर। उसी को पीसते कूंचते हैं नामर्द साले! अरे वह तो बिचारी ठहरी बेजबान जानवर। मिट्टी का लौंदा समझो—

दाउद उसे दरवाजे पर खड़ी देखकर सखाराम को इशारे से चुप कराता है।

सखाराम : (दरवाजे तक जाकर उसके हाथ से चाय लेकर वापस आता है) उन सालों की तरह की नामर्द जमात मैंने नही देखी। उससे तो हम कही अच्छे हैं।

दाउद चाय का प्याला पकड़ता है— चेहरे पर झेंप का भाव।

हालाँकि ऐसा कुछ नही है, मौके-बेमौके हम भी दो हाथ लगा देते हैं। पर अपनी कमजोरी छिपाने के लिए नहीं। यह मृदंग जैसे तपने के बाद बढ़िया बजने लगता है ना वैसे ही हमारा भी है। हाँ।

वह रसोई में कुछ खोजने लगी है।

: अच्छा हुआ यार! कि हमलोग किसी के ब्याहे मरद नहीं हुए। जो हैं उसी में मस्ती है। मिलता सब कुछ है, बंधन कोई नहीं। ऊब लगी, उमे लगी, अपने को लगी। चल साले खुला रास्ता। खतम खेल। साली बेकार की मगज-

पच्ची नहीं—उसको आसरे का आसरा और अपने को घर का खाना—सस्ते मे सब भूख मिट जाती है। उठ कर किसी के दरवाजे जाना नहीं पड़ता। और फिर घर मे वह दब कर रहती है। ठीक से काम धाम करती है क्योंकि उसे मालूम है कि गलती होते ही बाहर का रास्ता नापना पड़ेगा। वैसे औरत की जात होती चतुर है। पर ब्याह होते ही वह गाफिल हो जाती है दाउद मियाँ! वह सोचती है कि आदमी अब जायेगा कहाँ। मगर वह भी ठहरा एक पाजी। वह उसे फँसा लेता है पर आप नहीं फँसता। शादी करके भी छाँरदे पछी की तरह उड़ता फिरता है। और क्या! मैं तो साफ बात करता हूँ। लाग-लपेट करता नहीं। अपने को उनसे करना ही क्या है? अपन किसी के लगते ही क्या हैं?

मृदग के पास बैठता है आगे सरक कर
मृदग उठाकर गोद मे रखता है।

• यह है न मृदग? आज गोद मे है। समय आया तो ऐसे उठाकर छप्पर पर फेंक दूँगा। कुछ नहीं लगेगा। पलटकर इसे देखूँगा भी नहीं।

मृदग पर थाप मारता है।

• सब चीजें जब एक दिन खतम ही होनी हैं तब फिर उस साली से लिपटे रहने से क्या फायदा? क्यों लिपटे रह? किसी का नुकसान न करके अपनी जिन्दगी मौज से बिता दिया बस। मगर हाँ! फरेबी और झूठा नहीं होना चाहिए। पाप करो तो छाती पर चढ़कर कह दो कि पाप किया हमने। सजा भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए। उसमे क्या चोरी? उसने जैसे पैदा किया है वैसे ही तो सामने आओगे। ऐसा काम करो कि बाकी चाहे जो लगे, उसके लिए शरम न

लगे। शरम नहीं लगनी चाहिए।

दाउद : हाँ सखाराम भाई, हाँ (संकोच में) लेकिन जरा वह निकालो न—

सखाराम : क्या? चिलम? (दाउद उसे चुप रहने का इशारा करता है) अरे मियाँ! तो नाम लेने में क्या शरमाते हो?

कोने में जाकर चिलम आदि सामान निकालता है।

: गाँजा क्या कोई रईस की रखैल है कि सारा मामला चुप-चुप चुपचुप? अरे यह तो रंडी है रंडी। कोई चोरी चमारी का मामला नहीं। जिसका जितना जी चाहे तबियत भर ले। दो दम मार ले। तुमसे कहता हूँ दाउद मियाँ! रंडी जितनी जल्दी भगवान के पास पहुँच जायेगी न, उतनी जल्दी कोई नहीं। कोई भी नहीं पहुँच सकता। उसकी वजह यह है कि उसे जरा भी शरम नहीं होती। खुला खेल। परमात्मा के सामने भी वह सीना तान कर ही जायेगी। कहेगी, पेट के लिए जिन्दा रही मगर किसी भकुए को धोखा नहीं दिया, तकलीफ नहीं दिया। फँसा कर फरेब नहीं किया। जिसे दिया मजा ही दिया है। आदमजात की खुजली मिटाई है। खुजली! छोटे-बड़े, लूले-लंगड़े, गरीब-अमीर, बीमार-अच्छा, कुछ देखा नहीं। सब को एक बराबर माना। हे परमात्मा! पाप किया होगा दूसरों ने, हमने नहीं। हम पापी नहीं।

इसी बीच अन्दर के कबाड़ से ढूंढ़-ढांढ़ कर उस स्त्री ने तीन-चार तस्वीरें निकाल ली हैं। और उन्हें झाड़-पोंछकर करीने से एक जगह लगा दिया है।

: रुको, आग लेकर आता हूँ।

अन्दर आता है—उसे तस्वीर के सामने बैठी हुई देखता है।

: आग चाहिए।

वह चौंकती है। उठकर चूल्हे के पास जाती है।

: खाना सात बजे मिलना चाहिए मुझे। जोधरी की चार रोटी और साथ मे हरा मिरचा। लहसुन की चटनी उधर किसी डिब्बे मे होगी। मिरचा डलिया में है। और जोधरी का आटा उस बड़े वाले डिब्बे मे।

वह एक थाली में रखकर आग देती है।

: ऐसे नही चिलम की आग दी जाती।

किनारे पड़ी हुई पुरानी धूपदानी उठाता है।

: इसमे दिया करो।

वह देती है।

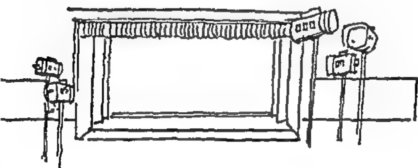
: तुम्हे भात खाने की आदत हो तो बना लेना। चावल होंगे घर में। पहली वाली खाया करती थी। खोज कर देखो। दाल भी होगी। मैं भात नहीं खाता।

वह चुपचाप सुन लेती है। सखाराम ठिठक कर एक नजर उसे देखता है फिर आग लेकर बाहर आ जाता है। वह खाना बनाने की तैयारी मे जुट जाती है। एक आरतीवाली मिलती है उसे उठाकर तस्वीरों के सामने रख देती है। बाहर दूर पर कहीं मंदिर का घण्टा बजता है वह उस दिशा मे नमस्कार करती है। बाहर के कमरे मे सखाराम

और दाउद गांजे में मस्त होकर दम मारते हैं।

: ओ...हो हो ..बम भोले......दाउद मियाँ मजा आ गया यार...

यह दृश्य अन्धकार में डूब जाता है।



दृश्य दूसरा

•

मृदंग बजने लगता है। रोशनी होती है तो वह स्त्री रसोई में फटी कथरी नुमा कोई चीज बिछाती हुई दिखाई देती है। सखाराम बाहर के कमरे में मृदंग बजा रहा है। वह कथरी बिछा कर भगवान को नमस्कार करती है और सिर के नीचे हाथ लगाकर लेट जाती है। सखाराम मृदंग एक तरफ रख देता है।

सखाराम : बम भोले। (अंगड़ाई लेकर ज़ोर से जँभाई लेता है फिर उठकर दरवाज़ा खोलकर बाहर जाता है।)

भजन रुक गया और पदचाप बाहर की तरफ जाती हुई सुनाई दी तो वह उठकर बैठ जाती है। बाहर कहीं भजन हो रहा है। वह उठकर धीरे से बाहर जाती है। देखती है। चिलम आदि उठाकर एक किनारे रखती है। झाड़ू से जगह को साफ करने लगती है कि सखाराम आ जाता है। वह चौंककर एक तरफ सिमट कर खड़ी रहती है।

: करो करो, सफाई करो।

खूँटी के पास जाकर वह कमीज उतारता है। रसोई मे जाकर मुँह पर पानी के छींटे मारता है। इसी समय उसकी कथरी बिछी हुई देखता है। बाहर के कमरे मे आता है। वह स्त्री उसका बिस्तर बिछा रही है।

: उधर नहीं! इस तरफ।

वह घबराकर जल्दी से बिस्तर उठाकर दूसरी जगह लगाती है। सखाराम गाँजे के नशे में भरी-भरी नजर से उसे देखता हुआ खड़ा है। वह बिस्तर ठीक करने के लिए बिस्तर पर बैठकर चादर ठीक करती है। फिर उठती है।

: उठो मत। बैठी रहो!

वह किनारे हटकर सिर झुकाए-झुकाए

जरा सा उठती है।

: कह रहा हूँ उठो नहीं। सुना नहीं ?

वह चुप

: आज यहीं सो जाओ।

वह थकी सी लग रही है। किसी तरह उठकर अन्दर जाने लगती है।

: सुनो। सोने से पहले पैर दबाने की रीत है यहाँ। बहुत सी आईं और चली गईं पर इसमें फेर-बदल नहीं हुआ, आज भी नहीं होगा।

बिस्तर पर बैठता है

: बम भोले !

वह चुपचाप खड़ी है

: समझ में आया कि नहीं ? पैर !

वह घबराई हुई सी आकर पैर के पास बैठ जाती है।

: हाँ दबाओ पैर। (स्वर में सौम्यता)

वह सकुचाई सी उसके पैर दबाने लगती है।

: ऊपर तक दबाओ !

वह हिचकिचाती हुई ऊपर तक पैर दबाती है।

: ठीक से...पैर तुम्हें खा नहीं जायेगा। बहुत थक गया आज। सबेरे ही सबेरे सोनावण चला गया। लौटते में उतनी ही कवायद फिर करनी पड़ी। बहुत चक्कर पड़ गया।

वह पैर दबाती रहती है। चुपचाप।

: अब जरा नाम बता दो अपना।

वह : लछमी !

सखाराम : लछमी ? (उसे एकटक देखता हुआ) अच्छा नाम है। आदमी का नाम क्या था ?

वह चुपचाप पैर दबा रही है।

: आदमी का नाम क्या था तुम्हारे ?

वह गुमसुम पैर दबाती रहती है।

: अच्छा अच्छा। नाम लिया नहीं जाता है न ? मुझे यह सब आदत नहीं......

वह आती हुई रुलाई रोकती है। आँचल से आँखें पोंछती है।

: क्या हुआ ? नहीं पूछूँगा बस ? तुम सब निकाली हुई औरतें और बातों में चाहे हो या नहीं, पर इस मामले में सब एक सी। आदमी की बात आई कि बस आँख में आँसू। वही लात मारकर घर से निकालेगा। जान लेने जायेगा। मगर वही देवता। ऐसे देवता की तो जूते से पूजा होनी चाहिए। ये साले सब-देवता नहीं, लात के देवता हैं। यह देवता है हरामजादे।

वह पाँव दबा रही है।

: तुम सब की सब एक ही मिट्टी की हो। मरी हुई माँ का दूध पिये हुए। मुर्दा हो मुर्दा तुम भी। जो लात मारे उसी के पैर चाटोगी।

वह गुमसुम पाँव दबा रही है।

: खाना खाया ?

वह पैर दबाती रहती है।

: मैं क्या पूछ रहा हूँ ? (चादर दूर फेंक देता है।)

लछमी : (जरा डरी हुई) आज चतुर्थी है। फिर भूख भी नहीं थी।

सखाराम : (यह उत्तर अनपेक्षित लगता है) इसीलिए उपवास ?

लक्ष्मी सिर हिलाकर हामी भरती है।

: सबेरे तो खाया ही न होगा। कल ?

लक्ष्मी इनकार में सिर हिलाती है।

: क्या मतलब ? उपवास करके जान देनी है ?

लक्ष्मी : आदत है मुझे।

सखाराम : क्या आदत है ? इस घर में यह सब नहीं चलेगा यहाँ पर दोनों समय कसकर खाना होगा। जी तोड़ सेवा करनी होगी। सब उपास कुपास बन्द। कान खोलकर सुन लो।

लक्ष्मी कुछ बोलती नहीं।

: जाओ सो जाओ अब।

लक्ष्मी : (संकुचित सी) एक बात पूछूँ ?

सखाराम : पूछो न—

लक्ष्मी : (हिचकिचाती हुई) रुई कहाँ रहती है ? भगवान के आगे दिया जला देती।

सखाराम : पहले वाली कहाँ रखती थी मुझे पता नहीं। मैंने कभी जानने की तकलीफ नहीं उठाई। चिलम कहाँ रहती है, मृदंग कहाँ रहता है यह पूछो तो बता सकता हूँ उसमें अपना राज है। न हो कल ला दूँगा रुई। और क्या।

लक्ष्मी : पहले वाली कैसी थी ?

सखाराम : पहले वाली ! यह बात जरूर पूछेंगी सब। बाद वाली को पहले वाली के बारे में जरूर पता हो जाय। छः हो चुकी पर इसमें फरक नहीं पड़ा। पहले वाली क्या थी। बिस्तर पर भी तो नहीं टिकी ज्यादा। सूखती ही चली गई दिन ब दिन। कमजोर होती जा रही थी। माँस तो जैसे था ही नहीं, हड्डी ही हड्डी। मगर ईमानदार थी बहुत। सिर उठा कर कभी देखा नहीं। उलटकर जवाब देना तो बड़ी बात। मिरज के अस्पताल में मर गई। अब तो एक महीना हो रहा है।



अरुण जोगलेकर—सखाराम

लक्ष्मी : बच्चे थे ?

सखाराम : दो थे। आदमी ने रख लिये। इसीलिए तो और घुली जा रही थी। आखिरी सांस तक अपने आदमी का और बच्चों का ही नाम रट रही थी। मुंह मे आखिरी बूंद पानी का मेरे हाथ से गया पर नाम साले मरद का ही था।

लक्ष्मी ठण्डी सांस भरती है।

: क्या हुआ ? सब कायदे से ही किया। आग मैंने दी। कौआ पिण्डा पर उतर नही रहा था तो गाली दिया भरपूर। कहा उस हरामखोर ने तुम्हे निकाल बाहर किया तो उसकी तकलीफ मुझे देती हो ? मैं तेरा क्या लगता हूँ ? तुझे घर मे आसरा दिया तो क्या गलती किया ? मुझे झटपट छुट्टी दे पहले। मेरे बिगडते ही कौआ घट आकर पिण्डा ले गया। नहा-धोकर छुट्टी पाई। इस घर की देहरी लांघकर एक बार अंदर आते ही यह आदमी इस घर का हो जाता है। दुबारा बाहर आया कि सब खत्म। तकलीफ नही चाहिए। मगर बाहर जाते समय भी कायदे से साडी-जम्पर और पचास रुपये देकर ही भेजता हूँ। ऊपर से टिकट। जहाँ जाना हो वहाँ का, यह कहना भूल ही गया था। अच्छा हुआ याद आ गई। साथ ही जो कुछ यहाँ मिला है उसे साथ ले जाने की छूट, यानी कपडे चप्पल, चूडी-ऊडी। इसमे कोई कसर नही होगी। यह सखाराम किसी की ब्याही औरत नही जो आदमियत छोड दे। जाओ, सो जाओ। ऊँघो नही। भूखे पेट ताकत नही रह गई है पर आगे से ऐसे बलि का बकरा बनने से गुजारा नहीं होगा इस घर मे। बताए देता हूँ। मेरी भूख मामूली नहीं है। याद मे किचकिच सुनूँगा नही। सुबह सात बजे प्रेस पहुंचना होगा मुझे। दुपहर बारह बजे घर आता हूँ। दो बजे फिर निकल

घर ८ बजे वापस। ओवर टाइम, अगर काम अर्जेंट देना हुआ तो। सुबह ठीक साढ़े छः बजे दो बाजरे की रोटी तैयार रहनी चाहिए। आज का दिन सोनावण जाने-जाने मे बरबाद हो गया। बस ओवर टाइम करना पड़ेगा।

करवट लेकर दूसरी तरफ मुंह करके लेटता है। वह भीतर चली जाती है। दूर पर भजन हो रहा है। अंधकार होता है। दुबारा रोशनी होती है तो खर्राटे भर कर सोता हुआ सखाराम दिखाई देता है। बाहर सन्नाटा। लक्ष्मी उसके पैर के पास घुटने पर ठुड्डी धरे चुपचाप बैठी है। बीच-बीच में आँखें झपकती हैं फिर खुलती हैं।

अन्धकार।



तीसरा दृश्य

●

दुबारा रोशनी होती है तब लक्ष्मी स्टोव के पास बैठी हुई दिखाई देती

है। कुछ कम उदास और कुछ पहले से चैतन्य भी है। बाहर के कमरे मे कोई नहीं है।

लक्ष्मी : (झुकी हुई खूब खिलखिला खिलखिलाकर हंस रही है) पाजी कहीं का। मुझे फंसाता है क्यो रे ? बाहर निकाल देती हूँ तो फिर लौट आता है ? तुझको रोज रोज खाने को चाहिए, क्यो रे ? चाट पड गई है तुझे। अब कुछ नही मिलेगा ! नही मिलेगा कह रही हूँ न ? ऊपर ही चढा जा रहा है मरा। मैं तुझसे कह रही हूँ मेरे बदन पे न चढ। मना कर रही हूँ ना ?

गुदगुदी लगने की तरह हँसती है।

: अरे नहीं। अच्छा देख आ, गोद मे चढ़ा तो दूँगी एक, हट दूर। दूर हट पहले, चिपकू कहीं का। आज तुझे कुछ नही मिलेगा। रोज रोज की मुसीबत बन गया है। पहले उतर मेरे ऊपर से।

खिलखिलाती है।

: उतर न मेरे ऊपर से पहले। उई माँ कितना सताता है मुझे ?

सखाराम काम पर से लौटता है और दरवाजे पर खडा होकर यह सुनता है।

: उतर रे मेरे ऊपर से—

सखाराम का पारा चढ़ने लगा है तेजी से भीतर आता है। लक्ष्मी अकेली ही बैठी-बैठी खिलखिला-खिलखिलाकर हँस रही है। सखाराम को देखकर चुप हो जाती है। आती हुई हँसी को दबाकर चुपचाप खडी हो जाती है।

सखाराम : (हर तरफ सशंकित होकर देखता हुआ) क्या हो रहा था ?

लक्ष्मी : (सिर हिलाकर) कुछ नही।

सखाराम : तो फिर इतनी हँसी क्यो आ रही थी ?(अभी भी संदेह मे) किसके साथ बात कर रही थी ?

लक्ष्मी : (हँसी दबा रही है)

सखाराम : (जरा गुर्राकर) क्या दिमाग खराब हो गया है जो अकेले मे बात कर रही हो ? (हर तरफ अभी भी सशंकित होकर देख रहा है।)

लक्ष्मी (हँसी गायब हो जाती है। गुमसुम खड़ी रहती है।)

सखाराम · किससे बात कर रही थी ?

लक्ष्मी : (सिर्फ इनकार मे सिर हिलाती है)

सखाराम : (जॅकेट उतारते हुए बाहर आता है) अकेले बात कर रही थी। हुँ।

जाते जाते फिर अविश्वास से देखता है। सखाराम के जाते ही लक्ष्मी जहाँ बैठी है वहीं जल्दी जल्दी कुछ ढूंढने लगती है।

सखाराम बाहर [redacted] कमरे से चिल्लाता है।

: फिर दुबारा यह सब न हो। कहे देता हूँ। अकेले बैठे बैठे हँसती है। हुँ।

लक्ष्मी चूल्हे पर से चाय उतारती है। फिर बाल्टी मे पानी और लोटा लेकर बरामदे की तरफ आती है। सखाराम वहाँ आकर खड़ा है। लक्ष्मी पानी डालती है। वह हाथ, पैर, मुंह साफ करता है। लक्ष्मी के हाथ से तौलिया

लेकर मुंह पोंछता है। दोनों अन्दर आते हैं। सखाराम आगे लक्ष्मी पीछे। सखाराम आकर तखत पर लेट जाता है। लक्ष्मी चुपचाप बैठकर उसके पैर दबाने लगती है। सखाराम बारी-बारी से उसकी तरफ और भीतर की तरफ कुछ नएपन से देखता है। दोनों की नजर मिलती है। लक्ष्मी नजर झुका लेती है।

सखाराम : (उसका हाथ पकड़कर) हँस क्यों रही थी ?

लक्ष्मी : (हाथ छुड़ाने की कोशिश में) छोड़ो कोई देख लेगा .

सखाराम : किसी से चोरी है क्या ?

लक्ष्मी : चाय लेकर आती हूँ

सखाराम : (लक्ष्मी का हाथ पकड़े-पकड़े कुछ सोचता है फिर हाथ छोड़ देता है) जल्दी आओ।

लक्ष्मी अन्दर जाकर चाय ले आती है उसे देती है।

सखाराम : (चाय उसके हाथ से लेकर अपने बगल में बैठने का इशारा करके) बैठो।

वह खड़ी है।

: मैं कहता हूँ बैठो यहाँ।

वह घबराई-सी बैठती है। जरा दूर खिसककर।

· ऐसी ब्याही औरत की तरह नहीं। यहाँ पास में बैठो।

उसे अपने पास खींचता है। अपने प्याले से चाय पिलाता है।

: लो पियो ..

लक्ष्मी . मेरी चाय है भीतर

सखाराम मुंह तोड़ दूंगा दुबारा बकबक किया तो। अपने में से दे रहा हूं तो कहती है अन्दर है। हूं!

वह एक घूंट चाय लेती है 'बस' कहती है। वह जबरदस्ती और पिलाता है। फिर खुब पीता है। वह चाय का प्याला तश्तरी लेकर जाने लगती है। उसे रोककर।

: किसके साथ चल रहा था अभी हँसी-ठट्टा?

लक्ष्मी : किसी के साथ नही।

सखाराम : तो मैंने सुना वह क्या था ऐसे ही?

लक्ष्मी : नही यह बात नही .

सखाराम : फिर?

लक्ष्मी : ऐसे ही ..

सखाराम : ऐसे माने?

लक्ष्मी : (हिचकिचाती हुई) चीटे के साथ।

सखाराम : क्या?

लक्ष्मी : (स्वीकृति सूचक सिर हिलाती है, 'हाँ, यही बात है' जैसे भाव से)

सखाराम : चीटे के साथ बात कर रही थी?

लक्ष्मी : हाँ! सच्ची.

सखाराम : चीटा तो नही बोल रहा था तुझसे?

लक्ष्मी : हाँ (फिर) नही।

सखाराम अचरज से उसे देखता है।

: मतलब कि उसकी तरफ से भी मैं ही बोल रही थी।

सखाराम : चीटे से बात कर रही थी। कुछ और तो नही?

चुप खड़ी है।

: दिमाग का इलाज करना चाहिए। क्यों चीटे से बात क्या

कर रही थी। कोई पहचान का चींटा होगा क्यों ?

लक्ष्मी : पहचान तो बात करते-करते हो जायेगी। मैं उसे शक्कर देती हूँ वह आता है।

सखाराम : चींटा क्या एक है घर में ? टोकरी भर होंगे। कोई भी आयेगा।

लक्ष्मी : मैं पहचानती हूँ उसे।

सखाराम : अच्छा ? कैसे ?

लक्ष्मी : ऐसे ही। वह आता है तो पता लग जाता है।

सखाराम : पता लग जाता है। किस बात से ?

लक्ष्मी : उसकी चाल से।

सखाराम : चींटे की चाल ?

लक्ष्मी : सच्ची। यह चींटा ज़ोर से दौड़कर नहीं आता धीरे-धीरे आता है और शक्कर के दाने पर मुँह लगाने से पहले दाने के चारों तरफ़ एक बार चक्कर करता है।

सखाराम : कौन ? चींटा ? और तो कुछ नहीं करता ?

लक्ष्मी : हाँ। एक बार शक्कर में मुँह लगा लेता है तो फिर एक पैर उठाकर अपना मुँह साफ़ करता है।

सखाराम : मुँह साफ़ करता है ? वाह ! और क्या करता है तुम्हारा यह चींटा ?

लक्ष्मी : दाना लेकर दीवार के पास जाता है।

सखाराम : और ?

लक्ष्मी : आजकल दो दिन से ढीठ हो गया है वह। शक्कर का दाना छोड़कर मेरे ही पीछे-पीछे भागता रहता है हरदम।

सखाराम : अच्छा ? वाह ! फिर ?

लक्ष्मी : बदन पे चढ़ जाता है फिर।

सखाराम : वाह ! बदन पर चढ़ता है ? फिर उसके बाद ?

लक्ष्मी : किसी तरह उतरता नहीं। (उठकर) दिखाऊँ क्या

सखाराम : क्या ? चींटा ? नही ! अभी मेरा दिमाग ठीक है। हुँह ! चींटा बोलता है। यह सब पागलपन यहाँ चलेगा नही। दिमाग खोलकर यहाँ रहना होगा। क्या समझी ? ठीक से याद रक्खो। जाओ अन्दर।

यह चाय का प्याला तश्तरी लेकर भीतर जाती है। सखाराम उसे अन्दर जाते हुए देखता रहता है। बेसुरी आवाज में लावणी का पहला चरण गुनगुनाता है।

सखाराम : यह अजीब ही है। वह पहले वाली साली मरद पर कुत्ता चिपकाए घूमती थी और यह चींटे से बात करती है। यह मरद भी हरामजादे क्या बना डालते हैं इन औरतों को।

वह भीतर जाकर कप-तश्तरी धोकर रखती है। फिर झुकी-झुकी इधर-उधर कुछ खोजती है। उदास होकर फिर वहीं बैठ जाती है। सखाराम 'आज दाउद मियाँ नहीं आए' कहता हुआ चिलम वगैरह कोने से उठाता है।

लक्ष्मी : (धीमी मगर सुनाई पड़ सके ऐसी आवाज में) तेरी वजह से .तेरी वजह से बात सुननी पड़ी मुझे और नही तो क्या ...तू शक्कर खाए और मैं तेरे पीछे डाँट खाऊँ। किसी को सच नही लगता कि चींटे, चींटी, गौरैया, कौवा सब मुझसे बोलते हैं। सब बात करते हैं। क्यो बोलता है तू मुझसे ? बोल ? क्यो बोलता है रे ? बोल ना। बोल। बोल मेरे बुद्धू रे बोल...

रसोई के दरवाजे पर आग लेने के लिए आया हुआ सखाराम यह देखता हुआ खड़ा है। वह आपे से बाहर हो उठता है।

सखाराम : (चीखकर) क्यों हो क्या रहा है यह? घर है या पागलखाना?

यह घबराकर खड़ी हो जाती है।

: क्या कहा था मैंने? खबरदार! इसके बाद यह तमाशा हुआ तो—यह सब पागलपन बन्द करो फौरन!

वह भय से थर-थर काँपती है।

: घर से बाहर निकाल दूंगा, दुबारा यह सब देखा तो। आग दो मुझे चिलम के लिए।

वह चुपचाप अगियारवाली उठाकर उसमें अंगारा रखकर देने के लिए आती है। उसके हाथ में पकड़ाती है।

: रोना बन्द। क्या है? मर गया क्या कोई? मर जाये तो भी इस घर में रोना नहीं है।

वह जल्दी से आँसू पोंछने का प्रयत्न करती है। अगियारवाली हिल जाती है अंगारा उसके पैर पर गिर जाता है। पैर जल जाता है। वह कराह कर बैठ जाती है। पैर पकड़ती है। सखाराम जल्दी से अंगारा पैर पर से हटा देता है।

सखाराम : जल जाने दो पैर अच्छी तरह। कोई तकलीफ नहीं होने की मुझे।

यह वेदना से व्याकुल है। किसी तरह उठती है धूपदानी उठाती है और आग समेट कर उसमें भरने लगती है।

: हरामीपन की सजा मिलनी ही चाहिए। नहीं तो वही काम होता रहेगा। ठीक से पकड़ नहीं, नालायक कहीं की। उठते-बैठते लात-घूंसे से

पड़ेगा तभी समझ में आयेगी बात। दो वह आग इधर और भीतर जाकर लगाओ कुछ पैर में। नहीं तो मरो जाकर।

धूपदानी में आग लेकर वह चिलम के पास आता है। वह अन्दर जाती है। चूल्हे के पास बैठकर पैर सहलाती रहती है। जलन कम करने का प्रयत्न करती है। सखाराम चिलम तैयार करते हुए।

: यह दाउद भी नहीं आया आज...न जाने कहाँ अटक गया—

वह चूल्हे के पास बैठी-बैठी पैर को बार-बार फूंक रही है। बाहर सखाराम आग को फूंक कर तेज कर रहा है। गाँजे का दम मारकर...

: बम भोले...

लक्ष्मी : (पैर सहलाते हुए जमीन की तरफ देखती हुई उदास स्वर में) तू क्या पूछता है मुँह उठाकर? कौन-सी कदर है? यहाँ आखिर हूँ तो निकाली हुई न! पाँव जलकर भसम हो गया तो क्या कोई पूछेगा? देख क्या रहा है? शरम नहीं तुझे? *जा उधर! काला मुँह न दिखा मुझे। जा! जा* कहती हूँ न! भाग यहाँ से! रख हाथ! जा भैया तू... ...जा। नहीं तो मारूँगी...

यह दृश्य अन्धकार में डूब जाता है।

दृश्य चौथा

•

रसोईघर मे किसी छोटी चिमनी के जितना मंद प्रकाश। बाहर के कमरे मे पूर्ण अन्धकार सिर्फ आवाजें सुनाई देती हैं।

सखाराम : ए उठ उठ ! जल्दी ..उठती है कि लगाऊँ एक लात। उठने के लिए कह रहा हूँ न ..

लक्ष्मी : (नींद से भरे हुए स्वर मे) क्या है, उठती हूँ जरा देर मे।

सखाराम : जरा देर मे नहीं—अभी फौरन उठ।

लक्ष्मी : उई क्या है ? अभी तो रात है।

सखाराम : इसीलिए जगा रहा हूँ।

लक्ष्मी : क्या ? है क्या ?

सखाराम : हँस उसी तरह।

लक्ष्मी : किस तरह ? क्या इतनी रात को .

सखाराम हँस पहले उसी तरह।

लक्ष्मी : उसी तरह क्या ओफ मुझे बहुत नींद आ रही है दा रात सोने को नहीं मिला ..

सखाराम · सो लेना थोडी देर मे। पहले हँस ! चीटा तेरे ऊपर चढ़ रहा था तब जैसे हँस रही थी उसी तरह हँस।

एक पल को चुप्पी।

लक्ष्मी : हँसती हूँ अभी ..उई पाँव दुखा दिया न मेरा उई रे • हाय...

सखाराम : तो हंसती क्यों नही ? हँस उसी तरह ? हँस जल्दी। हंस।

लक्ष्मी : मुझे नही आता।

सखाराम : चीटे के आगे फिदिर-फिदिर हँसती है और मैं कहता हूँ तो नही हँसते बनता। अभी यह जला वाला पैर और कुचल दूंगा...हंस नही तो...उठ। हँस उसी तरह। सोने का नखरा न कर ! उठ ..

लक्ष्मी : सचमुच नही आता मुझे। छोड़ दो न ! सोने दो मुझे—

सखाराम : नही बाद में सोना। उठ पहले...हँस ! हँस जल्दी...

लक्ष्मी पहले सप्रयास हँसती है फिर सचमुच हंसने लगती है। जैसे शाम को हँस रही थी। उसके बाद सखाराम की हँसी भी सुनाई देती है। दोनों की सम्मिलित हँसी चलती रहती है। उसके बाद खामोशी।

लक्ष्मी : उई रे। थक गई मैं। अब नही हँसा जाता। सोने दो अब मुझे। पैर भी बहुत दरद कर रहा है।

सखाराम : कहाँ देखूं ? फिर कभी पागलपन देखा तो यह पैर तोड़ ही दूंगा। नालायक कही की...

(अंधकार)



दृश्य पाँचवाँ



प्रकाश होता है। रसोईघर में लक्ष्मी जल्दी-जल्दी किसी तैयारी में लगी है। घर के बाहर से आवाज आ रही है, "मंगलमूरति मोर्‌या" यह आवाज सखाराम की है। बच्चों का झुण्ड भी मो ऽऽऽ र या ऽऽऽ कहता है। सखाराम पीठे पर गणपति की मूर्ति को लिए हुए आता है। पीछे पीछे दाउद-मियाँ झाँझ लिए हुए आते हैं, दोनों उत्साहित।

सखाराम : (दरवाजे पर आकर) मंगलमूरति...

दाउद : मोर्‌या।

लक्ष्मी पूजा की तैयारी में जल्दी से बाहर आती है। मूर्ति की पूजा होती है। मूर्ति के लिए सजाई हुई जगह पर सखाराम मूर्ति की स्थापना करता है।

सखाराम : बैठो मंगलमूरति जी, अपने बाप-दादा की बात तो नहीं जानता पर मेरे घर तो तुम पहली ही बार आए हो। चलो आराम करो।

दाउद : मैं तो यार सभी धरम के खुदा-उदा पूज लेता हूं। पाप क्यों लूं। क्या पता कब कौन-से खुदा खफ़ा हो जायें और अपना बुरा-भला कर दें।

सखाराम : यह बात नहीं है दाउद ! अगर अपने में साफ रहो तो किसी खुदा के बाप की भी हिम्मत नहीं कि एक बाल भी बाँका कर दे, हाँ !

दाउद : मगर सखाराम ! मैं तो साफ-वाफ नहीं हूँ। खुदा की अदालत की सालो याद ही नहीं रहती अपने को। हर वक्त एक नया गुनाह हो ही जाता है।

सखाराम : वह तो कचहरी का है यार परमात्मा की कचहरी का गुनाह एक ही है—झूठ बोलना। झूठ की सजा काला पानी। वह गुनाह सबसे बड़ा है। बाकी जिसने यह साला शरीर बनाया है वह क्या शरीर की खुजली नहीं जानता होगा। सब जानता है वह। वह भी जब अवतार लेकर आता है तो क्या होता है। जरा कृष्ण की याद करो दाउद मियाँ बैठकर मौज करो। मास-टास उड़ाओ। साथ देने के लिए ये चूहे जी तो हैं ही तुम्हारे पास।

लक्ष्मी : क्या कहते हो ? इस तरह नहीं बोलना चाहिए।

सखाराम : क्या बोल रहा हूँ ? दाउद मियाँ अब तुम ही बताओ मैंने इस समय क्या गलत कहा ? न तोंद का मजाक उड़ाया न दाँत की बात की। सूँड तक की बात तो की नहीं।

लक्ष्मी : अच्छा अच्छा बहुत हुआ। चुप रहो अब।

सखाराम : नहीं ! दाउद तुम्हें बताना पड़ेगा कि मेरी गलती क्या थी इस समय ?

दाउद : अरे छोड़ यार ! गल्ती-वल्ती कुछ नहीं थी। जो कहा सब ठीक ही है। अरे मंगलमूरति तो सब कुछ खुद ही जानते-बूझते हैं। खुदा हैं वह तो।

सखाराम : मगर देखो न आते ही इसने मुझे टोक दिया क्यों टोका ? आखिर खुद ही जाकर मैं आज गणपति को घर ले आया कि नहीं ? जो काम हमारे सात पुरखों ने नहीं किया था

वह आज मैंने किया। उस पर से यह बकवास—

दाउद रहने दो यार! लाओ, दो कुछ परसाद-वरशाद जल्दी मुझे भी काम पर जाना है।

लक्ष्मी आरती के बिना कोई न जाए। बस, अभी आरती का सामान ले कर आती हूँ मैं। (अन्दर जाती है)

लक्ष्मी आरती का सामान लेकर आती है।

लक्ष्मी : (सखाराम से) हाँ, यह लो।

सखाराम आरती की थाली हाथ में पकड़ता है वह आरती जलाती है। दाउद-मियाँ मदद करते हैं।

तुम अलग रहो दाउद भैया (दाउद अलग हट जाता है। लक्ष्मी सखाराम की तरफ मुड़कर) हाँ अब शुरू करो आरती ..

सखाराम दाउद बोलो गाइए गणपति जगवदन शंकरसुवन भवानी के नंदन

दाउद झाँझ लेकर साथ देता है दोनों गाने लगते हैं। मोटी-मोटी बेसुरी आवाज में। लक्ष्मी किनारे हट जाती है। उसे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है।

लक्ष्मी : (इशारे से दाउद को चुप रहने का इशारा करके) तुम मत गाओ।

वह चुप हो जाता है।

सखाराम : (गाना रोककर) क्या हुआ दाउद? गा यार 'गाइए गणपति जगवदन, शंकरसुवन भवानी के नंदन, सिद्धि-सदन गजवदन विनायक—'

दाउद चुप।

अरे यार मुंह खोल। चुप क्यो हो गया ?

दाउद की नजर लक्ष्मी पर।

: क्या हुआ दाउद आरती क्यो नही गा रहा है ?

दाउद चुप।

: क्यो नही गा रहा है बोल ?

दाउद धीरे से लक्ष्मी की तरफ देखता है।

· गाने को मना किया है ?

दाउद खामोश।

: किसने मना किया ? अच्छा।

लक्ष्मी की तरफ घूमता है।

: दाउद को आरती के लिए मना किया ?

लक्ष्मी : वह मुसलमान है कि नही !

सखाराम बहुत तैश मे आरती नीचे फेंक देता है। लक्ष्मी और दाउद भयभीत।

सखाराम : दाउद मियाँ को आरती के लिए तूने मना किया ? क्यो मना किया ?

दाउद : जाने दो सखाराम...

सखाराम . तुम चुप रहो जी। (लक्ष्मी से) क्यो नही कर सकता वह आरती ?

लक्ष्मी : वह मुसलमान हैं हमलोग हिन्दू हैं

सखाराम उसकी कनपटी पर जोर से झापड मारता है। वह दर्द से तिलमिलाकर कान पर हाथ रखती है।

सखाराम : फिर कभी कहेगी ?

लक्ष्मी · मैंने झूठ क्या कहा ? गणपति की पूजा मे मुसलमान कैसे आरती कर सकता है ?

सखाराम · कैसे नही कर सकता ? जब मैं कर सकता हूँ तो वह क्यो नही कर सकता ?

लक्ष्मी : मुसलमान के हाथ से..

सखाराम फिर उसे मारता है। उसके बाद फिर मारता है।

दाउद : सखाराम छोड दे यार! जाने दे।

सखाराम : (खूंटी पर से पेटी खींचकर उतारते हुए लक्ष्मी से) फिर बोल। बोल फिर से!

लक्ष्मी : जो सच बात है वही कह रही हूँ। मेरे घर के गणपति को मुसलमान के हाथ की आरती...

सखाराम उसे पेटी से मारता है।

दाउद : सखाराम .

लक्ष्मी : (वेदना से तिलमिलाती हुई फिर धीठ होकर) मारना ही है तो भीतर चलकर मारो गणपति के आगे नही। आज ही ठाकुर हमारे घर आए हैं।

दाउद : सखाराम! यार सुन तो. .

सखाराम : (लक्ष्मी की थरथराती हुई देह को उसका अकडभरा पैतरा समझकर और भी क्रोधित होता है और उसे खींचता हुआ अन्दर ले जाता है।) चल, अन्दर चल तो बताऊँ तुझे।

वह मुडकर अन्दर जाती है। पीछे-पीछे पेटी लिए हुए सखाराम जाता है। दाउद परेशान-सा वहीं खडा रहता है। अन्दर से पेटी की मार की आवाज आती है। लक्ष्मी की अस्पष्ट कराहें सुनाई देती हैं पर शोरगुल नहीं। दाउद यह सह नहीं पाता, जल्दी से बाहर निकल जाता है। अन्दर से मारने और कराहने की आवाजें आ रही हैं।

दृश्य छठवाँ



हल्का आलोक फैलता है। सखाराम नहीं दिखाई देता। रसोई से लक्ष्मी की कराह सुनाई दे रही है। वह किसी तरह उठकर लंगड़ाती हुई मूर्ति के सामने आती है। आरती का बिखरा हुआ सामान एकत्र करती है। दिया जलाकर मूर्ति के सामने रखती है। फिर उसी तरह लंगड़ाती हुई अन्दर जाकर लेट जाती है। कुछ क्षण बाद।

सखाराम (बाहर से ही) साली कहती है कि मुसलमान आरती नही कर सकता। दाउद तू सच्चा है। अच्छा, ठीक है अभी जा मेरे दोस्त। कल आना आरती के समय। देखता हूँ साली कैसे नही करने देती आरती।

नशे मे कुछ बडबड करता हुआ तेजी से अन्दर आता है। खूँटी के पास जाकर जैकेट तथा शर्ट उतारता है। एकाएक मूर्ति की तरफ ध्यान जाता है।

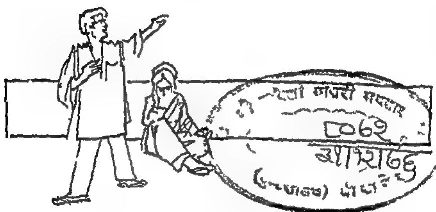
सखाराम नहीं-न-न-तेरा कोई कसूर नहीं तेरा कसूर नही

मूर्ति के नजदीक जाता है। आरती का सामान खोजता है। दियासलाई ढूँढकर आरती जलाता है। हाथ मे आरती

पकड़े हुए लड़खड़ाता हुआ-सा जैसे-तैसे खड़ा रहता है।

पी लिया है आज माफ कर (बेसुरी आवाज मे आरती करने लगता है। आरती हाथ मे। चेहरा और आँख नशे मे धुत)

अन्धकार



दृश्य सातवाँ

•

बाहर के कमरे मे आरती के दिए का उजाला। रसोई मे अन्धकार। सिर्फ संवाद।

सखाराम हँस। हँसेगी कि नही ?

लक्ष्मी (कराहती हुई) नही।

सखाराम हँसेगी कि नही ?

लक्ष्मी बदन बहुत दर्द कर रहा है—(कराहती है) आग जल रही है सारे बदन मे...

सखाराम : जलने दे । हँस पहले । कुछ कह रहा हूँ मैं ? इस घर मे रहना है तो मेरी बात माननी पड़ेगी । जो मैं कहूँगा करना पड़ेगा । हँस, नही तो अभी घर से निकाल बाहर कर दूँगा । निकालूँ ? चल-उठ...

लक्ष्मी : ओह छोड़ो मुझे...उई दैया...हाय ..

सखाराम : जब तक हँसेगी नही, नही छोड़ूगा ..

लक्ष्मी : जान निकल रही है मेरी । मर जाऊँगी ऐसे तो...

सखाराम : मर जा साली पर हँस पहले...

लक्ष्मी : (कराहती है)

सखाराम : हँस जल्दी...हँस...हँसती है कि मरोड़ूँ हाथ ? मरोड़ूँ ? ठहर पेटी ले आता हूँ सबेरे वाली । हँस नही तो...हँस ! उसी तरह हँस—हँस जल्दी साली...सुनाई दिया कि नही...

लक्ष्मी हँसने का प्रयास करती है । बीच में दर्द की कराह मिली-जुली । फिर उसकी हँसी बढ़ती है । हँसती ही जाती है । जैसे कोई जोर से गुदगुदाता जा रहा हो । रुदनभरी कराह उसमें मिली-जुली । उसी में सखाराम की वहशियाना भरी हँसी भी मिली हुई है । बाहर के कमरे का दिया बुझता है ।



दृश्य आठवाँ



मृदंग बज रहा है। कुछ क्षण अन्धकार फिर उजाला। सखाराम तल्लीन होकर मृदंग बजा रहा है। लक्ष्मी बाहर के दरवाजे से पानी का घड़ा लेकर आती है, थकी-थकी-सी रसोई मे जाकर उसे रखती है और हाँफने लगती है हाँफते-हाँफते किसी चीज का सहारा लेकर सुस्ताती है।

सखाराम : (उसे आया जानकर चिल्लाता है) चाय दे एक प्याला—जल्दी—(रसोई मे लक्ष्मी वैसी ही खड़ी है। सखाराम फिर चीखता है) मर गई क्या ? चाय दे जल्दी से।

लक्ष्मी . (चूल्हे के पास जाकर भुनभुनाती हुई) देती हूँ चाय भी। पानी ढोते-ढोते जान आधी रह गई। बदन है कोई ठेला गाड़ी नही। मर जाती तो भी छुट्टी मिलती।

सखाराम : (उठकर रसोई मे आते हुए) क्या कहा ?

लक्ष्मी : कुछ नही। यह चाय ले जाओ। बन गई। (चाय छान कर देती है)

सखाराम · बक-बक क्या कर रही थी अभी ?

लक्ष्मी : (एकदम बिफर कर) झूठ कुछ थोडे ही कह रही थी। आखिर कोई कितना सहेगा। आज एक बरस हुआ यहाँ आए। एक दिन को भी चैन नही। तीज-त्योहार, बीमारी-बरामी सब बराबर। दिन-रात कभी छोड़ा है

तुमने ? मर जाऊँगी किसी दिन छुट्टी मिल जायेगी।

सखाराम : हाँ-हाँ मर जा ! फूंक-ताप दूंगा ठीक से। आदमी ने जब कुतिया की तरह दुत्कार दिया तब था क्या कोई टके को पूछने वाला ? घर लाकर तुझे खाना दिया, कपड़ा दिया रहने को ठिकाना दिया कोई खैरात बँट रही थी क्या यहाँ ?

लक्ष्मी : ठिकाना कहीं भी मिल जाता। नहीं तो नदी-तलाब में कूद के मर-मरा गई होती। तुम्हारे दरवाजे आया ही कौन था आसरा माँगने ! मर गई होती तो छुटकारा मिल जाता।

सखाराम : तो जा अब से डूब मर। रोज तो जाती है नदी पर। रोका किसने है ?

लक्ष्मी : जान भारू नहीं है मेरी। अम्मा ने पाला-पोसा है तो इसके लिए नहीं। आदमी ने निकाल दिया तो क्या। ऐसी वैसी नहीं हूँ मैं ! बाप मुन्सिफ था मेरा।

सखाराम : मुन्सिफ जाय भाड़ में ! आदमी के घर से निकाली औरत सब ऐसी ही वैसी होती हैं। कोई टके को नहीं पूछता। मैंने तो कहो सहारा भी दे दिया।

लक्ष्मी : सहारा तो रोज किसी को देते फिरते हो कोई टिकी भी ? मेरी जगह कोई और होती तो कब की भाग-भूग गई होती।

सखाराम : छ' रही छ' ! तू तो सातवीं है।

लक्ष्मी : उसमें से एक भी टिकी होती तो क्या करने को मुझे ले आते ?

सखाराम : तो क्या मारे गरज के तुझे लाने गया था ?

लक्ष्मी : नहीं तो क्या उपकार किया मुझ पर ?

सखाराम : अच्छा तो जा यहाँ से—चाय बनाने को रहने दे।

लक्ष्मी कप में चाय डालती है।

: जा भाग यहाँ से—निकल फौरन—

लक्ष्मी : चाय पी लो पहले। चली जाऊँगी।

चाय का प्याला सखाराम को पकडाती है।

सखाराम : सालभर रह कर घमड चढ गया है ? क्यो ? (पलथी मारकर चाय पीने लगता है) निकल जा मेरे घर से। फिर मुँह न दिखाना।

लक्ष्मी : नही दिखाऊँगी। अमलनेर मे मेरा भतीजा रहता है। उसके पास चली जाऊँगी।

सखाराम : जा उजा ! मर साली ! दफा हो यहाँ से ?

लक्ष्मी : जब मेरा मन करेगा तब जाऊँगी।

सखाराम : क्या ?

लक्ष्मी , मुर्दे को आग से क्या डर ? सब तरह से तो सता लिया। अब बचा ही क्या है जिससे डरूं ? सारी दुनियाँ जानती है कि यहाँ क्या होता है। जरा-जरा से छोकरे भी कहते फिरते हैं।

सखाराम : (चाय जल्दी से पीकर) क्या कहते-फिरते हैं ?

लक्ष्मी : उन्ही से जाके पूछो सुनने की गरज है तो !

सखाराम : ऐरो-गैरो से नही पूछता फिरता मैं—तू बोल क्या कहते है लोग ?

लक्ष्मी : मैं क्या करने को अपनी जबान गदी करूं बेमतलब मार खाने को ?

सखाराम : बेमतलब नही मारता कोई। अपनी गलती जाना करो।

लक्ष्मी · बहुत जाना है। यहाँ आई यही गलती की।

सखाराम : जीभ सभाल के बोल लक्ष्मी !

लक्ष्मी : क्या करोगे ? मार लो जितना मारना है। ऐसे ही क्या

कसर छोडी है ? सारा बदन तो पहले ही भरता कर दिया है । इतने दिन मार छोड खाया ही क्या है ?

सखाराम : लक्ष्मी कहे देता हूँ गुस्सा न दिला मुझे...

लक्ष्मी : सीधे से दो बोल कभी कसम खाने को भी नही । जब देखो तब हाय-तोबा, गाली-गलोज जब-तब घर से निकाल देने की धौंस ऊपर से लात-घूंसा (आँचल से आँख पोंछती है) पेटी मार-मार के खाल उधेड दिया और ऊपर से कहते रहे 'हँस : हँस और हँस ।" दरद से जान निकलती रहे तो भी हँस । इससे तो नरक भी अच्छा होता होगा (सिसकती है) मर जाऊँ तो छुटकारा मिले तुम्हारे इस नरक से ।

सखाराम : पहले ही दिन बता दिया था जैसा हूँ । अपने पास ढँका-मुँदा कुछ नहीं है सब खुला खेल । बता दिया था कि नहीं तुझे ? यह भी कह दिया था कि ठीक लगे तो रहो वरना बाहर का रास्ता नापो । कहा था कि नही ? तब क्या कान मे ठेंठी लगी थी तेरे, कि पैर में छाला पड़ा था ? गई क्यों नही ? पिछले बरस भर से दारू पीना भी कम कर दिया । कर दिया कि नही ? कभी एकाध दफे पी लेता हूँ । तूही बोल चौमासे मे पिया है कभी ? गाँजा भी इस महीने बस दो दफे चढाया । पूजा भी करने लगा तेरे आने के बाद से । रोज नहा-धोकर पूजा करता हूँ कि नहीं ? बोल । दे जवाब नही तो मुँह तोड दूंगा तेरा । बोल कपड़े साफ रहते हैं कि नही, अब मेरे ? क्यों ? अब क्यों मुँह बन्द है । रोने का नखरा न कर ।

लक्ष्मी : बड़ा उपकार किया मेरे ऊपर ।

सखाराम : छ' छ- आ चुकी किसी की एक बात मान कर नहीं दी । मैं वह हूँ जिसने कभी बाप को बाप नही माना । पर

तेरी बात मानी कि नही बोल ?

लक्ष्मी हाँ, और उसके बदले दिन रात मार-पीट और गाली

सखाराम तो क्या यहाँ तुझे पलग पर बैठाकर तेरी आरती उतारूँगा ? तेरे पीछे दुम हिलाऊँगा ?

लक्ष्मी जब चली जाऊँगी तब लगेगा पता ।

सखाराम जा जा सडक की कुतिया की तरह मारी-मारी फिरेगी तब पता लगेगा ।

लक्ष्मी तो अभी कौन सा फरक है ?

सखाराम फरक नही है ? फरक नही लगता तुझे ? तो जा भाग यहाँ से । जा उठ ।

उसे चूल्हे के पास से घसीटता हुआ दरवाजे के बाहर ठेल कर दरवाजा बन्द कर देता है और हाथ झाडता हुआ अन्दर आ जाता है ।

दुबारा घर मे पैर रक्खा तो गला घोट दूँगा । फाँसी चढ जाऊँगा फाँसी, अगर जरूरत पडी तो । तेरी ऐसी नाकारा को मार के तो फाँसी चढने को भी तैयार हूँ । नमक हराम साली ।

दरवाजा बन्द कर लेता है ।

जा यहाँ से पाप कटे ।

एक तरफ जाकर कुढ़ा हुआ बैठ जाता है । बाहर कोई आहट नहीं ।

खबरदार । दुबारा अन्दर आई तो टाँग तोड दूँगा । जा भाग अपने रास्ते । कोई रख ही लेगा । रानी जी को पलग पे बिठाकर आरती-पूजा करेगा । जा ब्याह रचा जा के उसके सग । जा भाग । मैं मर गया तेरे ~ कमीनी साली ! दिमाग चढ गया है । ऊपर से

ही हो गया। आसरा दिया इसीलिए ?

पूरे घर मे चक्कर लगाता है। दरवाजे पर थपथपाहट।

: जा जा ! मर गई तू मेरे लिए। भीतर आने का काम नही। चलो जा यहाँ से।

दाऊद : (दरवाजा खटखटाकर) सखाराम ! अमाँ ओ सखाराम भाई।

सखाराम : कौन ? दाऊद ?

दरवाजे के पास जाता है। खोलने को होता है फिर रुक जाता है।

: दाऊद भाई ! बाहर अकेले ही हो न तुम ?

दाऊद : (बाहर से ही) खोलो भी तो। बिल्कुल अकेले ही हूँ यार।

सखाराम : वह साली हरामजादी चली गई न ?

दाऊद : अमाँ दरवाजा तो खोलो यार। (सखाराम दरवाजा खोलता है दाऊद अंदर आकर)

: क्या तमाशा बना रक्खा है ?

लक्ष्मी जल्दी से घुसकर अन्दर रसोई मे जाने लगती है।

सखाराम (चीखकर) फिर घुसी आ रही है भीतर ?

दाऊद : जाने दो सखाराम।

सखाराम : अब यहाँ क्या करने आई है ? यहाँ किसी को गरज नही है।

लक्ष्मी चूल्हे के पास जाकर काम मे लग जाती है।

: अपने को किसी की गरज नही है। अकेलेदम रह लूँगा। साली समझती क्या है मुझे ? मरद बच्चा होऊँगा तो

पचास और लाकर रख लूँगा। एक अकेले तू ही सोना मोती जड़ी नहीं है। जा निकल यहाँ से—उठ ! जा यहाँ से।

दाऊद यार भैया रोज-रोज बेमतलब किचकिच किया करता है। छोड़ भी ! आदमी औरत में तो यह सब चलता ही रहता है।

सखाराम आज तक किसी को मेरी तरफ़ आँख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं हुई। और यह निकाली हुई साली टके की औरत मेरे ऊपर रोब जमाती है। हरामजादी को रंडी बना के छोड़ूँगा। बैठो तुम, मैं अंगारा लेकर आता हूँ।

धूपदानी लेकर अन्दर आता है। लक्ष्मी रसोई में चूल्हे के पास बैठी है।

आग दे निकाल के।

लक्ष्मी निकाल लो अपने से गरज है तो।

सखाराम मैं कहता हूँ आग दे निकाल कर।

लक्ष्मी जब गरज नहीं है तो फिर आए काहे को ? करो न अपने हाथ से।

सखाराम (क्रोध से तिलमिलाकर चीखता है) आग चाहिए मुझे।

लक्ष्मी क्यों मैं तो रंडी हूँ, टके की औरत हूँ कुतिया हूँ मार डालो मुझे। मारो न। रुक क्यों गए हो ? मारो जित्ता जी करे। मार डालो नहीं तो जिन्दा ही फूँक ताप दो ले जा के। मेरा अपना कोई नहीं है इसी से तो जान तो फालतू है मेरी।

सखाराम अपने ऊपर बहुत काबू करता है। किसी तरह अपने आप ही आग निकालकर बाहर दाऊद के पास जाता है। बिना कुछ कहे-सुने चिलम भरने

लगता है। लक्ष्मी बार-बार आँख पोंछती हुई खाना बनाने लगती है।

अंधकार



दृश्य नवाँ

•

मृदंग खूब जोर-जोर से बजने लगता है। रसोई और बाहर के कमरे में हल्की रोशनी। अंदर लक्ष्मी जमीन पर कथरी बिछाए हुए लेटी हुई है। बाहर सखाराम भूत जैसा बैठा बेतहाशा मृदंग बजाए जा रहा है। उसी में तन्मय है। दाँत होंठ भींचे हुए हैं।

बाहर से एक खीझी हुई आवाज : ए! अरे बन्द करो यह...यह क्या आधी रात को शोर मचा रखा है?

दूसरी आवाज : ए...ए ढोलक वाले...

सखाराम-बदहवास-सा बजाता ही जा रहा है। फिर एकाएक बजाना बन्द करके उठता है। रसोई की तरफ जाता है।

सखाराम : जाग रही है ?

उत्तर नहीं मिलता।

: कुछ पूछ रहा हूँ, जाग रही है कि सो गई ?

उत्तर फिर भी नहीं।

: मादरचो-साली ! कोई जवाब ही नही, उठ पहले, उठ ! सुन जो कहता हूँ।

उसे जबरन उठाकर बैठा देता है। बिस्तर अलग फेंक देता है।

: सुन ! गलती हुई मेरी तरफ से। एक तो ऐसे ही दिमाग मेरा गरम है, ऊपर से तू उल्टा-सीधा बोलकर और भी आग लगा देती है। अच्छा बोल झूठ कहता हूँ ? साल भर मे दारू पीना कम कर दिया कि नही ? पूजा भी करने लगा। इतना किया यह क्या कुछ भी नही है ?

वह मुँह पर आँचल लगाए बैठी है।

: छ आकर चली गई कभी किसी की एक बात भी नही मानी। जैसे रक्खा वैसे रही। एक तू आई है अनोखी। ऊपर से लगती है सीधी पर भीतर से घाघ है घाघ पूरी। क्या झूठ कह रहा हूँ बोल ? उठ। नींद का नखरा न दिखा मुझे। बहुत हुआ सोना। सुन कान खोल के। सुनती है कि नही ? हुंकारी भर। भर हुंकारी। 'हाँ' कह !

लक्ष्मी : *(नींद से बोझिल स्वर मे) हाँ !*

सखाराम : साल भर तूने मुझे सताया—मैंने तुझे सताया। मैं तुझसे

ऊब गया। तू भी मुझसे उबिया गई। क्यों ? ठीक कहता हूँ न ? हाँ कह !

लक्ष्मी (नींद मे हो) हाँ !

सखाराम तुझे अब मेरे पास मजा नही आता। मुझसे भी तेरा स्वभाव मिलता नही। दिमाग भड़क जाता है। बदन मे आग लग जाती है।

लक्ष्मी (उसी स्वर मे) हाँ !

सखाराम 'हाँ' क्या ? साली पागल कर देगी मुझे !

लक्ष्मी हाँ

सखाराम बन्द कर यह हाँ-हाँ। बहुत हुआ। सुन ! तेरा मेरा कोई ब्याह नहीं रचा है। कोई बन्धन नही है। एक दूसरे के साथ रहने की कोई जबर्दस्ती नही है। तेरे लिए तेरा रास्ता खुला है। मेरे लिए मेरा। तेरी कोई देनदारी मुझ पर नही। मेरी कोई देनदारी तुझ पर नही। चल हम अब एक दूसरे से छुटकारा ले लें। तेरा कोई भतीजा है कह रही थी न अमलनेर मे कल तू उसके पास चली जा। टिकट-विकट ले दूंगा। साथ मे साडी-जम्फर कायदे से दे दूंगा। जो साथ लाई है वह भी ले जा। पहने हुए कपडे भी तेरे। ऊपर से दस पाँच खर्चे के लिए दे दूंगा। बाद मे कहने को न रहे कि कुछ किया नही। आराम से जहाँ जाना हो चली जा। मैं तुझे कोई तोह-मत नही देने का। पर हाँ ! अपने बीच सब नाता आज से खतम है। समझ मे आया ? क्या ?

लक्ष्मी (अस्पष्ट स्वर मे) हाँ !

अन्धकार

दृश्य दसवाँ

उजाला।

दरवाजे के पास गठरी बँधी रखी है। एक ट्रंक भी है। लक्ष्मी रसोईघर में सामान सहेज रही है। सखाराम दरवाजे के पास खड़ा है।

सखाराम खतम हुआ काम कि नहीं ? गाड़ी का बखत हो गया।

लक्ष्मी बस ठाकुर जी को हाथ जोड़ के आई।

भगवान की तस्वीर के आगे दिया जलाती है। झुककर नमस्कार करती है। फिर वापस आती है। एकाएक कुछ याद आ जाता है। फिर लौटकर कुछ सामान ठीक-ठाक करती है।

सखाराम (सामान उठाकर) चल जल्दी।

लक्ष्मी जरा रुको] सामने जरा उन लोगों से कह आऊँ ! ऐसे जाना अच्छा नहीं लगता।

बाहर जाती है। सखाराम ट्रंक गठरी रखकर खड़ा रहता है। लक्ष्मी आती है।

सखाराम हो गया सब काम ?

लक्ष्मी कोई बाहर जाये तो फौरन झाड़ू नहीं लगाना चाहिए। गरीबी आती है। जाने से पहले अपने हाथ से लगाए देती हूँ।

सखाराम पर गाड़ी चल देगी .

लक्ष्मी जल्दी-जल्दी झाड़ू लगाती है।

: अब चल निकल जल्दी...

लक्ष्मी : लो ! (एकाएक रुककर) एक काम छूटा ही जा रहा था।

अन्दर जाती है। सखाराम खीझता है। लक्ष्मी वापस आती है।

सखाराम : *क्या छूट गया था ?*

लक्ष्मी : चींटों को शक्कर देना भूल गई थी। अच्छा हुआ याद आ गई (खिड़की के पास जाती है बाहर कौओं की काँव-काँव) जाती हूँ रे काऊ ! रोज आता था बिचारा। मैं खिलाती थी तभी खाता था। अब कौन देगा खाना उसे ?

सखाराम : *मैं खिला दूँगा। तू निकल किसी तरह यहाँ से...*

लक्ष्मी : पाँव उठता नहीं है।

सखाराम : वह तो दिखाई ही दे रहा है।

लक्ष्मी : (घर की तरफ देखकर) साल भर रही। सारा घर ऐसा चमक गया था। अब फिर...(आँचल से आँख पोंछती है) माया बड़ी बुरी है ..

सखाराम इस उतावली में है कि वह कब किसी तरह जाये घर से।

सखाराम : तो फिर छोड़ न माया-वाया चल जल्दी—

लक्ष्मी उसके पैर छूती है वह पैर पीछे हटा लेता है।

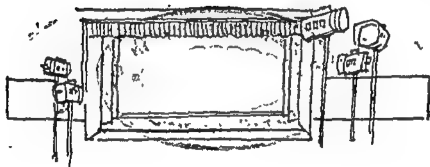
: यह क्या...यह किस लिए ..

लक्ष्मी : फिर भेंट नहीं होगी। माँ-बाप ने जिसके गले बाँधा वह नसीब में नहीं रहा। उसको मेरी जरूरत नहीं रही। यहाँ आई तुम्हारे पास ! तुमको अपना माना। अपना मान के सब कुछ दिया। कुछ रक्खा नहीं। ..अपनी *देखभाल करना। बहुत पीना नहीं। ठीक समय से खाना*

खा लेना। पूजा करते रहना भूलना नहीं। उससे पुत्र होगा। देवी की भभूत भीतर सिकहर पर पुड़िया में रखी है, प्रेस जाते वखत लगा लिया करना।

सखाराम : सब कर लूंगा। तू जा यहाँ से किसी तरह।

सिसकती हुई लक्ष्मी को बाहर ठेलकर खुद भी बाहर निकल जाता है। दरवाजा बन्द करके ताला लगाता है दोनों चले जाते हैं। कुछ क्षण स्तब्धता।



दृश्य ग्यारहवाँ

आहिस्ते से प्रकाश फैलता है। दाउद और सखाराम गाँजा चढ़ाए हुए।

सखाराम : दाऊद भाई। इतनी आई गई पर इसके जाने से पता नहीं क्यों कुछ खाली-खाली लगता है।

दाउद : (नशे में कुछ बुदबुदाहट भरे स्वर में) हाँ लगता होगा…

सखाराम : मगर उसे अब चलाए रखने से कोई फायदा नहीं था। बेमतलब रोज-रोज की किचकिच साली। फिर उसे बहुत

तकलीफ भी होती थी। कमजोर तो पहले ही मरद की मार खा-खाकर हो गई थी। कुछ उमर की वजह से भी थक गई थी। फिर अपना हाल तो तुम जानते ही हो यार। कुछ भी कहो यह शरीर है तो आखिर वासना का भण्डार अपने काबू मे रहता नही—इसीलिए सोचा अब बिचारी को तकलीफ देना ठीक नही। रहेगी अपने भतीजे के पास। बची खुची जिन्दगी पूजा पाठ मे गुजार लेगी

दाउद (उसी पीनक में) अच्छा किया।

सखाराम तुम भी इस बात को ठीक मानते हो न ?

दाउद हाँ हाँ, एकदम पक्की बात है। मैं भी आजकल यही सोचता था।

सखाराम क्या ?

दाउद यही कि अब तुम्हारा यह सरदद खत्म होने का समय आ गया।

सखाराम न उसको सर दद न कहो यार।

दाउद ठीक है नही कहूँगा।

दोनों गाँजे का दम मारते हैं। उसी मे तल्लीन से बैठे रहते हैं। एक क्षण की चुप्पी फिर दाउद बोलता है।

सखाराम भाई। अगली का क्या सोचा है ?

सखाराम अगली का ? यानी क्या ?

दाउद यानी नया कुछ।

सखाराम नया ?

दाउद मतलब क्या पछी कब लाने वाले हो ?

सखाराम (विचार-निमग्न सा) अच्छा अच्छा वह ! हाँ ! अभी दो दिन पहले एक खबर कान मे पडी है। चिमखडे के कोई हिसमिस पुलिस फौजदार के बारे में। उसकी औरत दग

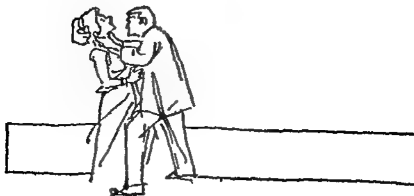
पन्द्रह दिन मे शायद उसे छोडने वाली है। औरत की मां सौतेली है। और दूसरा कोई है नही। हो सकता है कि कल हो परसो मे कुछ न कुछ बात बन जाये।

दाउद · अच्छा है तब तो।

सखाराम : अब कल से उसी के चक्कर मे रहूँगा।

दाउद : हां जरूर। लो, चिलम लो।

दोनों उसी तरह बैठे रहते हैं धीरे-धीरे अन्धकार। परदा गिरता है।



अंक दूसरा



दृश्य एक

•

सखाराम बाहर से चिल्ला रहा है, 'ए ...क्या है ? इतनी बार कहा समझ मे नहीं आता क्या ? हरामजादे साले .. चलो भागो यहाँ से। सिनेमा हो रहा है क्या यहाँ कि नौटंकी ? सालो ! खाल खींच लूंगा एक एक की . भागो .'

बाहर का दरवाजा खुलता है। सखाराम घर के अंदर जाता है। हाथ मे चमड़े की एक अटैची। पीछे-पीछे कुछ ठहर कर एक स्त्री आती है। यह लक्ष्मी की तुलना मे कुछ-कुछ युवा, कुछ स्थूल और देखने मे आकर्षक है। यह चंपा है।

सखाराम पहले अंक के आरंभ मे जो कुछ लक्ष्मी से कहता है, क्रम से चंपा को भी सुनाता है। फर्क इतना ही है कि उसकी नजर बार-बार चंपा के शरीर पर फिरती रहती है। और चपा रह-रहकर अकारण खिल-खिल करती हुई हँसती रहती है। जिसकी वजह से सारी अपनी शर्तें और बातें उसे सुनाते-सुनाते सखाराम शिथिल होता जाता है। किसी तरह 'अपने घर मे मेरी कदर रहनी चाहिए' इस वाक्य तक पहुँचता है।

अंक दूसरा



सखाराम : अब जैसा है यही है ।

चंपा : छिः पुराना किता है । एकदम बाबा आदम के जमाने का है ।

सखाराम : (अपने को काबू में करता हुआ) पसंद नहीं है तो जाओ। बाहर का रास्ता नापो ! चलो उठो ।

चंपा : बाहर का रास्ता ? का बाहर कौनो और घर है ?

सखाराम : नहीं, बस यही है । और यह भी कोई राजा का महल नहीं । सखाराम बाइंडर का घर है ।

चंपा : सखाराम बेंडर कौन ?

सखाराम : (जरा अचकचा जाता है) मैं ही ।

चंपा : हाय दैय्या ! हम तो समझी कि कौनो और ! सच्ची ! राम कसम ।

सखाराम : (चंपा के शरीर के आकर्षण से अपने आपको जबरन उबारता हुआ) शर्त मन्जूर हो तो चूल्हे के पास जाकर चाय बनाओ । दूध ऊध वहीं चूल्हे के पास होगा । अरे हाँ ! एक बात कहनी रह ही गई । ब्याही औरत की तरह रहना पड़ेगा इस घर में .

चंपा : हमें बडी भूख लगी है । खाने के लिए दे कुछ जल्दी ।

सखाराम : अन्दर देखो जाकर कुछ होगा रसोई में ।

चंपा : (पसर कर बैठती हुई) तो देख न तू ।

सखाराम : (सकपकाता है । फिर कहने लगता है) इस घर में आई औरत को अदब के साथ रहना चाहिए । मेरी कदर और इज्जत रहनी चाहिए इस घर में ।

चंपा : ए ! देख न भीतर खाने को है का कुछ ? कल से पेट में कुछ गया नहीं । चलने बखत एक अमरूद हाथ लगा था । वही खाया है । पेट कुडकुडा रहा है ।

सखाराम : (उसके शरीर पर से जबरन अपनी आँखें हटाता हुआ)

दोनों की आँखें मिलती हैं और सखाराम एकदम स्तब्ध हो जाता है। इसी बीच किसी समय दरवाजे पर दाउद आकर खड़ा है।

दाउद : (अनजाने में) याहूऽ !

सखाराम और चंपा चकित होकर उसे देखते हैं। दाउद झेंप जाता है।

: माफ करना यार, मगर...

सखाराम : नहीं-नहीं कोई बात नहीं।

दाउद : बात यह है कि कभी ऐसा देखा नहीं था न इसलिए—

सखाराम : ऐसा यानी क्या ?

दाउद : क्या यार बातें बनाते हो—लेकिन सखाराम भाई—(आँख मारकर, चुटकी से 'क्या बात है' जैसा भाव दर्शाकर, धीरे से सखाराम के कान में) बड़ा किस्मत-वाला है यार तू तो ! क्या था और क्या आ गया तेरे हाथ ! मैं चला। फिर आऊँगा।

जाते-जाते चंपा पर फिर एक नजर डालता हुआ चला जाता है। सखाराम और चंपा एक दूसरे को देखकर अकारण ही हँसते हैं। सखाराम उसके शरीर के आकर्षण में घायल हुआ-सा है।

सखाराम : (स्वर के तेवर में नर्मी) घर पसंद आया।

चंपा : उहुंक ! पहिले वाला हमारा घर बहुत बढ़िया रहा। बड़ा भी रहा।

सखाराम : अब जैसा है यही है।

चंपा : छिः पुराना कित्ता है। एकदम बाबा आदम के जमाने का है।

सखाराम : (अपने को काबू मे करता हुआ) पसंद नहीं है तो जाओ। बाहर का रास्ता नापो। चलो उठो।

चंपा : बाहर का रास्ता ? या बाहर कौनो और घर है ?

सखाराम : नहीं, बस यही है। और यह भी कोई राजा का महल नहीं। सखाराम बाइंडर का घर है।

चंपा : सखाराम बेंडर कौन ?

सखाराम : (जरा सकपका जाता हूं) मैं ही।

चंपा : हाय दैय्या ! हम तो समझी कि कौनो और ! सच्ची ! राम कसम।

सखाराम : (चंपा के शरीर के आकर्षण से अपने आपको जबरन उबारता हुआ) शर्त मंजूर हो तो चूल्हे के पास जाकर चाय बनाओ। दूध ऊध वहीं चूल्हे के पास होगा। अरे हाँ ! एक बात कहनी रह ही गई। ब्याही औरत की तरह रहना पड़ेगा इस घर में .

चंपा : हमे बड़ी भूख लगी है। खाने के लिए दे कुछ जल्दी।

सखाराम : अन्दर देखो जाकर कुछ होगा रसोई मे।

चंपा : (पसर कर बैठती हुई) तो देख न तू।

सखाराम : (सकपकाता है। फिर कहने लगता है) इस घर मे आई औरत को अदब के साथ रहना चाहिए। मरी मदर और इज्जत रहनी चाहिए इस घर में।

चंपा : ए ! देख न भीतर खाने को है या कुछ ? कल से पेट मे कुछ गया नहीं। चलते वखत एक अमरूद हाथ लगा था। वही खाया है। पेट कुड़कुड़ा रहा है।

सखाराम : (उसके शरीर पर से जबरन अपनी आँखें हटाता हुआ)

यहाँ रहते किसी से डरने की जरूरत नही। यह सखाराम बाइडर सबका काल बन के बैठा है यहाँ।

चंपा : डर ? हमें कैसे डर है। ऊ हरामी भतार से (थूंकती है) बड़चो-कर का लेगा हमारा ? चार छ दिन और रह गई होती हरामी के घर तो मजा चखाय देती। वह तो हमी ऊब गई रही बड़चो के साथ रहि रहिके। जब देखो तब दारू पी पी के हमे धौंस दिखाता रहा, 'जान दै दूंगा। जान दै दूंगा' हुंह। हरामी जान देगा मुँह-जला ! कुछ दे न खाने को जल्दी से।

सखाराम : (जरा ठिठकता है फिर रसोई की तरफ जाता है) हाँ-हाँ, ला रहा हूँ।

चंपा : ए ! ढोलकी बजाता है का तू ?

सखाराम : ढोलकी नही है। मृदग है।

चपा : दोनों एक जैसा। बड़चो हमरे भतार के मूं की तरा। कहने को फौजदार रहा मगर चोरी न भूतें हरामी के मूं पे। सरकार ने डिसमिस कर दिया। पिस्तौल चोरी चली गई रही। चोरी की खबर हरामी को दूसरे दिन लगी ऐसा धुत्त पड़ा रहता रहा पी पी के।

अन्दर से थाली मे कुछ खाने का सामान लेकर आ रहे सखाराम को यह सुनकर आश्चर्य से धक्का लगता है।

सखाराम : (बाहर के कमरे मे आकर क्रोध को दबाता हुआ) इस घर मे रहकर औरत को तमीज से बातचीत करनी चाहिए। उल्टी-सीधी बकबक यहाँ नहीं चलेगी।

चपा : हाँ (खाने लगती है) सोच-सोच के बदन में आग सुलग जाती है ; हरामी हमसे धधा करावै चला रहा। बड़चो की अम्मा फिर से बियायगी तब पैदा होगा हमसे धधा

करावै वाला। (खाना खाकर उँगली चाटती है) और नही तो का? हम का कोई रडी-मुडी हैं? ए—जरा चाय बना के दे न बढिया-सी!

सखाराम : इस घर मे यह सब काम औरत करती है।

चंपा : तो कह न औरत से।

सखाराम : यहाँ नोकरानी नही रहती। इस घर मे जो औरत आती है वही करती है।

चंपा : हाय दैय्या! हमे कह रहा है तू? हमैं नही चाय-फाय बनानी आती?

सखाराम : बनानी नही आती?

चंपा : न न! हमैं नही आती। ऊ घर मे सास बनाती रही, भतार के घर। ओ मैके में बाप करता रहा। खाना भी वही पकाता रहा। अम्मा की पान-तम्बाकू की दुकान रही। बढिया बिजनेस रहा अम्मा का। दारू भी बिकती रही। वहीं तो आया रहा यह मुरदार। मरद हमारा। रेड करने आया रहा औ जबरदस्ती रेड करके चला गया। फिर तो जब देखो तब हाजिर। 'ब्याह कर ब्याह कर' रट लगाए था। हमने कर लिया। हमैं का पता रहा कि हिजडा है हरामजादा! नहीं कोई गदी बात नहीं करेंगी हम। याद है हमैं तेरी बात। चाय का कर न कुछ जल्दी से। खाना खाया कि ऊपर से चाय लगती है फौरन।

सखाराम सकपकाया-सा खडा है। आँखें अभी भी चंपा के शरीर से खेल रही हैं। सहसा दरवाजे पर दाउद आ खडा होता है।

सखाराम : (पहले दाउद को देखकर चौंकता है फिर उसे बुलाता है) आओ यार! (उसे एक तरफ ले जाकर) यार दाउद!

जरा चाय बना दोगे क्या ?

दाउद : हाँ-हाँ क्यों नहीं ? अमाँ यार ऐसे माशूक के लिए तो ·· माफ करना।

दाउद रसोई की तरफ जल्दी से लपकता है। बर्तन वगैरह खोज-खाज कर चाय चढ़ाता है। ध्यान बाहर वाले कमरे में है।

सखाराम : (कुछ याद करके चंपा से) तुमसे पहले वाली जो थी यहाँ पर। सातवीं। गई कल ही तो

चंपा : च्च च्च च्च् च्च क्या बीमार रही ?

सखाराम : क्या मतलब ? मर थोड़े ही गई। यहाँ से चली गई। मैंने ही भेज दिया। जो गरजू होती है उसी को यहाँ रखता हूँ। यहाँ सब कुछ उस ब्याही औरत का तरह करना पड़ता है। दोनों को या किसी एक को ऊब लगी कि बस पत्ता कट। जहाँ उसे जाना हो फौरन भेज देता हूँ। टिकट-विकट ले देता हूँ। ऊपर से साड़ी-जम्पर। अलावा यहाँ मिली हुई सब चीजें ले जाने की खुली छूट।

चंपा : हमे नहीं जाना इत्ती जल्दी।

सखाराम : (उतावले मन से) मैं ही कहाँ अभी भेज रहा हूँ ?

दोनों एक दूसरे को देखकर बेमतलब पागल की तरह हंसते हैं। पहले चंपा फिर सखाराम। फिर सखाराम अपने पर जबरन काबू करता हुआ।

: मगर यहाँ पर यहाँ का तौर-तरीका मान कर रहना पड़ेगा।

चंपा : (जोर से पुकारकर) दाऊद ! भागा दौड़ा हुआ आता है।

: जरा एक बीडा पान और तम्बाकू ला दे मेरे लिए

दाउद : (एकदम पिघलकर) आँ ? हाँ-हाँ—क्यों नहीं...लाता हूँ ...लाता हूँ...

भागता हुआ बाहर जाता है।

सखाराम : ए—

दाउद अनिच्छा से रुक जाता है।

: एकदम गधे की तरह भागने क्या लगे। पैसा ले जाओ। दो पान ले आना। और हाँ, वह चाय का क्या किया ?

दाउद : बस अभी बनी जाती है...मैं अभी आया...

भागता हुआ जाता है। मुड़-मुड़कर चंपा को देखता जाता है।

चंपा : अच्छा है।

सखाराम को जरा ईर्ष्या होती है। दाउद से कुछ कहने के बहाने दरवाजे के पास जाता है और दाउद के जाते ही धीरे से दरवाजा बन्द कर लेता है। दोनों फिर एक दूसरे को देखकर अकारण हँसते हैं। सखाराज अब चंपा के खिंचाव में बेहाल-सा हो चला है।

सखाराम : (चंपा के करीब आता हुआ) और क्या ! अच्छा तो है ही बहुत अच्छा है।

अब दोनों एक दूसरे के बहुत करीब हैं। सखाराम बेसब्र होकर उसके कंधे पर हाथ रखता है। दरवाजे पर खटखटाहट दाउद की पुकार, 'सखाराम भाई। दरवाजा खोलो।' सखाराम होश में आकर दरवाजे के पास आता है। दर-

बाजा खोलता है।

दाउद : (अन्दर जाता हुआ) यार इतनी जल्दी दरवाजा भी बन्द कर लिया...(चम्पा को पान देता है। वह उसकी तरफ देखकर जानलेवा हँसी हँसती है। दाउद भागता हुआ रसोई में जाकर चाय बनाने लगता है।

चंपा : (दाउद जिस ओर जाता है उधर देखती हुई) बहुत अच्छा है।

सखाराम : हाँ, मगर इस घर में बाहरी आदमी के साथ ज्यादा बातचीत करना मुझे पसन्द नहीं। मैंने शुरू मे ही जो-जो बातें बता दी हैं वह सब याद रखना।

चंपा : ए! अब हम जरा कपड़े बदलने जा रही हैं (अटैंची खोलने लगती है।)

सखाराम : रुको! दाउद बाहर आ जाये तो रसोई मे जाकर बदलो कपड़े।

चंपा : मगर जब यही घर में रहना है तो शरम काहे की?

जरा किनारे आकर निःसंकोच साड़ी बदलने लगती है। दाउद दो कप चाय लेकर आता है। यह दृश्य देखकर जीभ काटता है। अनदेखा करने का भाव जाहिर करता है। चंपा को कोई संकोच नहीं।

सखाराम : दाउद! अब आगे से मैं ही तुम्हारी दुकान पर आ जाया करूँगा। वहीं मिल लिया करूँगा। क्यो? मेरे ख्याल से वही ठीक रहेगा।

दाउद : (सखाराम के हर वाक्य के बाद) हाँ, वाकई यही ठीक होगा—अच्छा। (मगर ध्यान कपड़े बदलती हुई चम्पा पर। अन्ततः रहा नहीं जाता। बोल पड़ता है।) अहा

वाह

सखाराम : क्या हुआ ?

दाउद : गजब .(उसी भाव में डूबा सा) अच्छा भाई। चलता हूँ। (फिर रुककर) फिर आऊँगा।

सखाराम : नहीं-नहीं। मैं ही आ जाऊँगा।

दाउद : हाँ। आ जाना। (चंपा को सम्बोधित करता हुआ) भा (भी मुँह से निकल नहीं रहा है) मैं चलता हूँ। चाय रक्खी है भीतर (जल्दी से बाहर निकल जाता है।)

चंपा : (जिधर वह जाता है उधर देखते हुए) बड़ा सुन्दर है।

सखाराम : समझ गया। कितनी दफे कहोगी ? लो चाय लो—

दोनों चाय पीने लगते हैं।

चंपा : (चाय का घूंट भरकर) बहुत बढ़िया चाय है।

सखाराम : (क्रोध मे बिफर कर) बस बहुत हुआ, अच्छा है, सुन्दर है, बढ़िया है। बंद करो यह बकवास।

चंपा क्यों चाय बढ़िया नहीं है ?

सखाराम : (सहसा गलती का एहसास होने पर) ओ चाय के लिए कह रही थी। मैं समझा

चंपा : (पान गाल मे दबाकर सखाराम से) ले तू भी खा।

सखाराम : अपने हाथ से खिला दो।

चंपा : (उपेक्षा से) ला दे खिला दें। (पान लेकर उसके मुँह मे डाल देती है) ले खा। हमे तो बड़ी नींद आ रही है। चार दिन चार रात सोने नहीं दिया बडचो कलमुँहे ने। दिन रात जान दे दूंगा, जान दे दूंगा की धौंस (जँभाई लेकर) सोने जा रही है जरा देर हम।

सखाराम : दिन मे ?

चंपा : और नहीं तो का रात मे ? खाना बन जाय तो उठा देना। कहाँ, खटिया वटिया बिछौना-उछौना कहाँ धरा है ?

सखाराम : यह सब यहाँ नहीं है।

चंपा : नही है ? का माने ? घर है कि सड़क ?

सखाराम : और खाना भी खुद बनाना पड़ेगा। औरत वाला काम औरत को ही करना होगा। यहाँ का नियम है यह।

चंपा : नियम चलाने को यह कोनो स्कूल है क्या ? कि पचायत ?

सखाराम : नियम यहाँ मानकर रहना होगा। जिसको मंजूर न हो वह बाहर का रास्ता नापे।

चंपा : (बड़ी सी जंभाई आवाज के साथ लेती हुई) बड़ी नींद आ रही है। (पास में पड़ी हुई एक कथरी उठाकर जमीन पर बिछाने लगती है।)

सखाराम : यहाँ पर नही, अन्दर। कोई आ जायेगा तो क्या कहेगा ?

चंपा : (कथरी उठाकर अन्दर जाती हुई) का, कहेगा का ? यही कहेगा कि सो गई है और का ? नींद भी क्या किसी के बाप की गुलाम है ?

रसोई में जाकर जमीन पर कथरी बिछाती है और सिर के नीचे हाथ लगाकर लेट जाती है। जरा देर में ही सो जाती है। सखाराम रसोई के दरवाजे पर खड़ा यह देखता है। कमरे में चक्कर काटता है। सोती हुई चंपा को बार-बार देखता है। उसके मन की वासना अब पूरी तरह जाग्रत हो गई है। इसी समय बाहर कौआ चीखने लगता है।

सखाराम : (कौए को धीरे से हँकाता हुआ) है है हक् (कौवा चिल्लाता रहता है। सखाराम बेचैन है। बाहर का दरवाजा बन्द-कर लेता है। चंपा जहाँ सो रही है वहाँ आता है। जरसी उतार कर फेंक देता है उसके पास जमीन पर

बैठ जाता है। गरम स्वर मे) सो रही हो क्या...उठो ..उठो...सो गई क्या ..

बाहर कौआ और जोर से चिल्लाता रहता है। वह उस व्यवधान को बर्दाश्त नहीं कर पाता। बैठा-बैठा आवाज़ ही आवाज लगाकर उसे हड़काता है।

: ए भाग साले मादरचो ..

नजर फिर चंपा पर। उसके ऊपर एका-एक हाथ रखता है। चंपा जोर से चिल्लाकर कथरी पर उठ बैठती है। सखाराम घबराकर अलग हट जाता है।

चंपा : का है ? है का ? आंय ? ओ तू है ! मैं समझी वह कल-मुहाँ हरामजादा। मरद हमारा। का हुआ ? खाना बन गया ? काहे को उठाया हमे ?

सखाराम सकपकाया-सा खड़ा है। उत्तर नहीं दे पाता।

: हाय दैय्या यह बात है ? आया समझ मे। अच्छा सूझा तुझे। बडी बात हुई कि जाग गई हम। ए सुन ! मरद का घर छोडा जरूर है पर हम कोई कोठे वाली रंडी नही। इज्जत बचाने को ही छोडा है उसका घर। क्या करने चला था मुरदार। आपे मे रह जरा। तू भी क्या सड़क का कुत्ता है ? नीद तो ले ही डूबा हमारी अब जरा खाने-वाने का जल्दी से कर कुछ जा !

बड़ी-सी जँभाई लेती है। सखाराम जल्दी से अरसी ढूँढ़कर पहनता है। बाहर निकल जाता है। वह अकेले ही बैठी हुई है। चेहरे पर नींद और सुस्ती

है। बगल की कमरी के नीचे से एक छोटी सी डिबिया निकलती है और उसमें से तबाकू निकालकर मलती है फिर होंठ में दबा लेती है। वह तम्बाकू चुबलाती रहती है कि अंधकार।



दृश्य दूसरा

●

उजाला। दिन का समय। धूप जैसी रोशनी। सखाराम बाहर के कमरे में बिछावन पर पेट के बल, अस्त-व्यस्त पड़ा सो रहा है। मुर्दे की तरह। दरवाजा खुला है। कमरे में और कोई नहीं है। खाकी वर्दी [illegible] एक व्यक्ति दरवाजे से झाँकता है। सिर पर थानेदारों वाली टोपी तिरछी लगी हुई है। दाढ़ी के खूंटे बढ़े हुए। चेहरा पियक्कड़ों की तरह। मगर इस वक्त होश में है। बगल में दबा हुआ एक सामान से कसा हुआ भरा कैनवस का थैला।

वह एक बार अन्दर नजर डालता है फिर ढीठ होकर भीतर घुस आता है। जूता उतारता है। थैला धीरे से उतार कर एक तरफ रखता है। पेट के बल पड़े हुए सखाराम के चारों तरफ चक्कर लगाकर उसे देखता है। एक भद्दी सी डकार लेता है। फिर एक कोने में जाकर चुपचाप बैठ जाता है। कुछ देर इसी तरह बैठा रहता है फिर उठकर रसोई के पास जाकर भीतर झांकता है। अन्दर जाकर हाथ-मुंह धोता है। ढके हुए बर्तन खोल-खोलकर देखता है, फिर वापस आकर थैले से बोतल निकालकर एक घूंट गले के नीचे उतार देता है। बोतल थैले मे डालकर चुपचाप बैठा रहता है। अब सखाराम कुछ भुनभुनाता है। फिर करवट लेता है। जागने को है।

सखाराम : ए...

घर में कोई नहीं है। दुबारा।

: ए...जरा देख यह धूप कहाँ से आ रही है...

कौन देखे।

: मादरचो-फिर. .

बिछावन से मुंह पर पड़ती हुई धूप को रोकना चाहता है पर सफल नहीं हो पाता। कोने मे खड़ा-खड़ा वह व्यक्ति यह सब बड़ी उत्सुकता से देख रहा है।

: अरे ए कान फूटे हैं क्या तेरे

कोई रिस्पॉन्स नहीं। आँखें बन्द किए-किए ही बहुत क्रोधित होकर।

घर मे आदमी रहते हैं या पत्थर ? इतना चिल्ला रहा हूँ फिर भी खिडकी बन्द नही करती

उठकर बैठ जाता है आँख अभी भी खुल नहीं पा रही है।

: कहाँ गई ? सबेरे-सबेरे चली कहाँ गई ?

किसी तरह आँख खोलता है। सामने उत्सुक और निस्पृह से बैठे हुए खाकी वर्दीवाले उस व्यक्ति को आँख मिच-मिचाकर देखता है।

: कौन ? कौन है इधर ?

वह व्यक्ति सिर्फ नर्वस-सा मुस्कुराने की कोशिश करता है पर साहस नहीं जुटा पाता।

: कौन है तू ? सीधे घर के भीतर ? यह चली कहाँ गई ? दरवाजा एकदम खुला ?

हड़बड़ा कर उठता है।

: धूप भी कितनी चढ आई है। अरे ए मगर पहले तू बोल ! तू कौन है ! सीधे घर के भीतर ही घुस आया ? (रिस्पॉन्स नहीं) क्या काम है ? यह घर है कि धर्म-शाला ?

अब नींद पूरी तरह उचट गई है।

: खड़ा हो जा झटपट। किससे काम है ? बोल ! कौन है तू ?

वह विवश होकर उठता है। सिर हिला-

कर संकेत करता है कि उसे किसी से काम नहीं है—चेहरे पर स्नेहयुक्त मुस्कान।

: तब फिर चोर की तरह क्यों घुस आया घर में ?

वह व्यक्ति इनकार में सिर हिलाता है।

: पुलिस के हवाले कर दूंगा तुझे (उसे ठीक से देखकर) पर पुलिस थानेदार की तरह सो तू ही लग रहा है। सचमुच। मगर थानेदार का यहाँ क्या काम है ? इस सखाराम बाइंडर को समझा क्या है तूने ? सड़क का उचक्का ! भाग यहाँ से निकल जा फौरन। बाहर से कह जो कहना-सुनना हो, चल। जा बाहर

वह जाने को जरा भी उत्सुक नहीं दिखता। दुबारा बैठने के चक्कर में है।

: बैठ नहीं। खड़ा रह।

वह खड़ा रहता है। उसे अच्छी तरह देखकर।

: तू ..

व्यक्ति : (नर्वस-सा मुस्कुराकर अधूरा नमस्कार करता हुआ) आदमी चपू का—फौजदार शिंदे कहते हैं सब मुझे। हिसमिस हूँ।

सखाराम : (सिर तप जाता है) वही है तू ? तू यहाँ कैसे आ गया ? किसने आने दिया तुझे घर में ? चपू कहाँ है ? तूने तो नहीं कुछ उसका भला-बुरा ..

वह इनकार में सिर हिलाता रहता है।

: तो फिर वह कहाँ गई ? कहाँ गई चपू ?

व्यक्ति : (कंधे उचकाकर) भगवान जाने—मुझे क्या पता ? थी ही नहीं जब यहाँ आया मैं। मगर आप सो रहे थे यहाँ।

इसीलिए बैठ गया, बस। अच्छा हुआ जान-पहचान हो गई।

फिर अधूरे ढंग से नमस्कार करता है।

सखाराम : क्या काम है तुझे यहाँ पर ? उसे वापस ले जाने के लिए आया है ? वह नही जायेगी, जा .

व्यक्ति : मैं भी कहाँ लिवाने आया हूँ। यही अच्छी तरह है। आराम से रहे बस .करना क्या है।

सखाराम : तो फिर क्या करने आया है यहाँ ?

व्यक्ति : सोचा देख जाऊँ कैसी है। जी नही माना।

सखाराम : बड़ा प्यार है उसके ऊपर ?

व्यक्ति : औरत है वह मेरी। घर से चली आई तो क्या।

सखाराम : गई कहाँ आखिर ? समझ मे नही आ रहा है। पता नही चाय भी बनाकर रख गई है या नही।

व्यक्ति : नही।

सखाराम : क्या नही ?

व्यक्ति : चाय तैयार नही है।

सखाराम : तुझे क्या पता ?

व्यक्ति : चाय नही है।

सखाराम : (चिढ़कर) तू क्या जाने ?

व्यक्ति : (ज़रा भयभीत होकर) ऐसे ही। मेरा पीने को मन था इसलिए ढूँढा था—अन्दर।

सखाराम : घर भर ढूँढ आया तू ?

व्यक्ति : नही बस बर्तन देखा था चाय का। और नहीं...

सखाराम : भाग यहाँ से। जा भाग नही तो जान ले लूँगा तेरी।

व्यक्ति : चिल्लाइए नहीं। बेकार बदनामी होगी।

सखाराम : तुझे क्या करना है ?

व्यक्ति : चंपी का आदमी हूँ। उसकी बदनामी मेरी बदनामी

भी तो—

सखाराम : तेरा उससे अब क्या सबध ?

व्यक्ति : सबध जनम भर का होता है। वही तय होता है। ऊपर वाले के यहाँ।

ऊपर नमस्कार करता है।

सखाराम : अब वह यहाँ मेरे पास रहती है।

व्यक्ति : पता है। तभी तो आया हूँ ढूंढ़ते-ढूंढते।

सखाराम : वह अब वापस नही जायेगी।

व्यक्ति : न जाय। सुखी है तो ठीक है।

सखाराम : वह तुझे पूछेगी भी नही

व्यक्ति : तकदीर की बात है।

सखाराम : तो तुझे फिर चाहिए क्या ? क्यो आया यहाँ ?

व्यक्ति : (नर्वस निरीह मुस्कान चेहरे पर) ऐसे ही। चपा के बिना मुझे चैन नही पड़ता ..

सखाराम : चुप रह। उसने तुझे छोड दिया है।

व्यक्ति : मगर चपा बहुत सुन्दर है। ऐसा-ऐसा पुट्ठा इतनी-इतनी छाती .ऐसे ऐसे .

सखाराम : चार लात दूँगा दिमाग सही हो जायेगा। जा, भाग यहाँ से। साला, अपनी औरत के लिए ऐसे बोलता है हरामी कही का ..

उसकी गर्दन पकडकर उसे दरवाजे तक ले जाकर छोडता है।

: जा दफा हो यहाँ से।

व्यक्ति : झोला रह गया। (दरवाजे से वापस जाकर फिर बैठ जाता है) मैं रुकता हूँ जरा। चपी से मुलाकात हो जायेगी बहुत याद आती है उसकी

सखाराम : (उसके बेहयाई से बहुत असहाय होकर) साली मादरचो-

मुंह भी नहीं धुला रही है। ठहर मैं मुंह धोलूं फिर बताता हूं तुझे।

रसोई में जाता है। खिड़की से बाहर कुल्ला करता है। मुंह पर पानी के छींटे देता है। यह सब करते हुए चम्पा के नाम पर बड़बड़ाता जाता है। फिर चंपा के पति के पास जाता है। वह निश्चित-सा बैठा-बैठा बोतल निकालकर एक घूंट पीता है। सखाराम को देखकर नर्वस-सा मुस्कुराता है। अनाथ लड़के की तरह लगता है।

: उठ यहां से! जा दफा हो यहां से!

वह उसी तरह बैठा है। अब ठीक से टेक लगाकर बैठ गया है। पैर फैला लिया है। सखाराम परेशान है कि क्या करे।

दाउद : (बाहर से पुकारता हुआ) सखाराम भाई—ओ सखाराम भाई! (अन्दर आकर) पछी कहां है?..

फौजदार शिंदे को देखकर चुप हो जाता है। 'यह कौन है' यह इशारे से सखाराम से पूछता है।

सखाराम : मरद है चंपू का।

दाउद : (देखकर) देखते ही मैंने यह सोचा था यार। तो यह है पछी का पिंजड़ा (उस व्यक्ति से) खुदा हाफिज़!

वह नर्वस-सा मुस्कुराता है।

दाउद : पछी आया तो पिंजड़ा तो पीछे-पीछे आयेगा ही। वह पछी के बिना अकेला कैसे जियेगा सखाराम भाई?

सखाराम : सूरत शकल से सीधा लगता है पर महा पाजी है यह। साला अपनी बीवी का इतना गदा बखान अपने मुँह से कर रहा था कि क्या कहूँ .

दाउद : अच्छा, क्या कह रहा था ?

सखाराम : छोड़ो यार। एक तो कब से भगा रहा हूँ जाने का नाम ही नहीं ले रहा है ..बैठा है माठू की तरह...

दाउद : जहाँ उसका पछी वहाँ यह (उससे) क्यो जनाब सच कह रहा हूँ या झूठ ?

चम्पू का पति फिर नर्वस-सा मुस्कुराता है।

सखाराम : दिखाता ऐसे है जैसे बडा चाहता हो औरत को। चल उठ। दफा हो मेरे सामने स। केंचुआ साला ..

दाउद : सखाराम भाई। इस बार लगता है पछी के साथ साथ उसका पिजडा भी तुम्हे रखना पडेगा (धीरे से) मारो गोली यार पछी बढिया हो तो फिर पिंजड़े से क्या घबराना।

चंपू का पति यह सुनता हुआ बोतल निकालकर नया घूंट भरता है और नर्वस मुस्कान के साथ बैठा रहता है।

सखाराम : (क्रोध से होठ चबाकर) जी करता है उठाकर फेंक दूं साले मादरचो-को।

दाउद : समझने की कोशिश करो यार। मगर पछी है कहाँ ?

अन्धकार



सखाराम : सूरत शकल से सीधा लगता है पर महा पाजी है यह। साला अपनी बीवी का इतना गंदा बखान अपने मुँह से कर रहा था कि क्या कहूँ .

दाउद : अच्छा, क्या कह रहा था ?

सखाराम : छोड़ो यार। एक तो कब से भगा रहा हूँ जाने का नाम ही नहीं ले रहा है ..बैठा है माठू की तरह...

दाउद : जहाँ उसका पंछी वहाँ वह (उससे) क्यों जनाब सच कह रहा हूँ या झूठ ?

चम्पू का पति फिर नर्वस-सा मुस्कुराता है।

सखाराम : दिखाता ऐसे है जैसे बड़ा चाहता हो औरत को। चल उठ। दफा हो मेरे सामने स। केंचुआ साला ..

दाउद : सखाराम भाई। इस बार लगता है पंछी के साथ साथ उसका पिंजड़ा भी तुम्हे रखना पड़ेगा (धीरे से) मारो गोली यार पंछी बढ़िया हो तो फिर पिंजड़े से क्या घबराना।

चंपू का पति यह सुनता हुआ बोतल निकालकर नया घूँट भरता है और नर्वस मुस्कान के साथ बैठा रहता है।

सखाराम : (क्रोध से होंठ चबाकर) जी करता है उठाकर फेंक दूँ साले मादरचो-को।

दाउद : समझने की कोशिश करो यार। मगर पंछी है कहाँ ?

अन्धकार



सुषमा सेठ—चम्पा, किमती आनंद—चम्पा का पति



सुषमा सेठ—चम्पा, किमती आनंद—चम्पा का पति

मैं उठा तो यह यहीं बैठा था। फिर किसी तरह गया ही नही।

चंपा : वाह वा। गया नही ? देखती हूँ कैसे नही जाता हरामी।

आगे बढ़कर पति का कॉलर पकड़कर झटके से खड़ा करती है।

: क्यो बे मुरदे।

उसके मुँह पर एक थप्पड़ लगाकर।

: कौन सी रोकड धरी है तेरी यहाँ पे ? बोल !

उसे लात-घूंसो से बेतहाशा मारने लगती हैं।

: किसने दिया था न्योता तुझे यहाँ आने का ? क्यो ?

सखाराम और दाउद अवाक् होकर यह देख रहे हैं। उस आदमी का हाथ छोड़ कर वह दरवाजे के पास जाती हैं। वहाँ रखली हुई चप्पल उठाकर तेजी से लौटती है। फिर उसका हाथ पकड़कर झटके से खडा करती है। और चप्पल से तड़ातड़ मारने लगती है। अवहृवास सी हैं। वहाँ पर खड़े हुए सखाराम और दाउद यह देखकर भयभीत हैं। चंपा अब उस व्यक्ति को बोरे की तरह घसीटती हुई दरवाजे के पास डाल देती है।

: जा यहाँ से। दुबारा मुँह दिखाया तो मुँह नोच लूंगी तेरा। हमारे रास्ते मे न पड बताए देती हूँ। तेरा मेरा अब कोई नाता नही।

चंपा : (आगे बढ़कर उसे फिर लात मारती है) ले .और ले। और ले कलमुँहे मुरदे और ले हरामी।

सखाराम : (चंपा से) औरत है कि आफत की पुड़िया तू .कितना मारती जा रही है उसे...कलेजा है कि नहीं तेरे...?

चंपा : नहीं; कलेजा नहीं है हमारे। इसी हरामजादे ने चबाय डाला है कलेजा, बहुत पहले। जरा-सी बच्ची थी तभी। पैसा देके अम्मा से खरीद लाया था हमे, फिर ब्याह कर लिया। तब कुछ समझ मे भी नहीं आता था हमारे। सारी-सारी रात यह नोंचता-खसोटता था हमे मुरदार। सुई चुभोता रहता था। आग लेके सारी देह जलाता रहता था। हमें गंदी-गंदी बात करने को कहता था हरामी। जब सहा नहीं गया तो भाग गई हम घर से। यह फिर पकड़ लाया। हमे बाँध के बदन मे मिर्चा भर दिया हरामजादे ने। कलेजा कहाँ से रहता ..यह ..यही हरामजादा ..यही नोच-नोच के खा गया उसे .मेरा खून पी गया यह.हरामी...उठ बे चमरचिह तेरे भी मिर्चा न भरा तो कहना...

आगे बढ़ने लगती है। सखाराम उसे पकड़ता है वह अपने को छुड़ाना चाहती है। सखाराम पूरी ताकत से उसे पकड़े रहता है वह छूटने का जोर लगा रही है।

सखाराम : दाउद ! साले को जल्दी से बाहर ले जा यार...जल्दी कर...

दाउद आगे बढ़कर चंपा के पति को पकड़कर खींच-खींचकर किसी तरह ले जाता है। चंपा देख रही है। उसको

दृश्य चौथा

•

रसोई घर में हल्का उजाला। चंपा कथरी पर सो रही है। एक परछाईं बाहर के कमरे से रसोई घर में आती है। परछाईं सखाराम की है। सखाराम सोती हुई चंपा को देखता हुआ खड़ा रहता है। फिर बाहर के कमरे में आता है। टहलता रहता है फिर अन्दर जाता है। बेचैन है। सोई हुई चंपा पर झुकता है फिर खड़ा हो जाता है। कुछ अलग हटता है फिर रहा नहीं जाता। उसके पास बैठ जाता है। कुछ निश्चय नहीं कर पाता। चंपा करवट बदलकर सो जाती है उसकी साँस की तेज आवाज सुनाई दे रही है। सखाराम बेसब्र होकर उसके ऊपर हाथ रखता है। स्पर्श से चौंककर वह झटके से उठकर बैठ जाती है।

चंपा : (आँखें फाड़ फाड़-कर देखती हुई) क्या है ? कौन है ? तू ? फिर दिमाग बिगड़ गया तेरा ? क्या कहा है हमने ?

समझ में नही आया क्या ? बताए देती हैं तुझे । हम बहुत बुरी हैं । समझ से बड़ा खराब गुस्सा है हमारा ।

अस्त-व्यस्त आँचल ठीक करती है ।

: हमे गुस्सा न दिला कहे देती हैं । हमें वह सब अच्छा नही लगता समझा ? वह औरत मरद के बीच का ।

सखाराम दूर हट कर खड़ा है ।

: जा । बाहर जाके सो जा उस तरफ ।

सखाराम : करार है । जो औरत यहाँ रक्खी जायेगी उसे मेरी औरत होकर रहना पड़ेगा । उसी तरह सब करना पड़ेगा मैंइसी शर्त पर रखता हूँ यहाँ । सात आई-गईं किसी ने चूं तक नही किया ।

चंपा : वह होंगी वैसी । हम नहीं । हमें सोने दे ।

सखाराम : मुझे तकलीफ होती है । घर मे रहकर भी न मिले इसके क्या माने ? सामने छप्पन पकवान फिर भी पेट भूखा । बहुत तकलीफ होती है ।

चंपा : हमसे नहीं होगा वह सब । जा बाहर जा के सो । नही तो खड़ा रह ! हम भी ऐसे ही बैठी रहेंगी ।

सखाराम जरा देर वैसे ही खड़ा रहता है ।

सखाराम : मर साली ।

बाहर के कमरे में आता है । रसोई घर में चंपा कथरी पर बैठी हुई है । सखाराम कोने से दारू की बोतल निकालता है । मुंह से लगाता है ।

: मर मादरचो...मर...

फिर पीता है । बैठी हुई । आवाज में चीखकर 'मर हरामजादी मर कमीनी ।'

दरवाजा खोलकर बाहर अंधेरे में चला जाता है। रसोई में चंपा पहले तटस्थ सी बैठी रहती है। फिर कुछ निश्चय करके उठती है। बाहर के कमरे में आती है। फिर बाहर जाती है। बाहर से सखाराम का हाथ पकड़कर अंदर ले जाती है।

चंपा : अच्छा चुप कर। हम देती हैं तुझे सब कुछ हमें दारू दे तू पहले।

वह स्तब्ध-सा खड़ा उसे देखता है।

: मुरदे। दारू दे हमें। कहाँ है ? कुछ कह रही हैं हम कहाँ है बोतल ?

वह ताख पर से बोतल उठाता है। चंपा बोतल छीन लेती है।

: बैठ वहाँ।

उसे जबरन बिठाती है। बोतल खोलकर गट-गट पीने लगती है। वह निश्चल सा उसे देखता रहता है। यह सब हल्की रोशनी में।

अन्धकार।

तुरन्त ही फिर हल्का उजाला।

चंपा : (छके हुए स्वर में ?) थोड़ी देर में ले ले हमें मुरदे। कर जो करना है तुझे।

सखाराम हकबकाया-सा उसे देख रहा रहा है।

अन्धकार।

दृश्य पाँचवाँ



उजाला। दिन चढ़ आया है। कोई बाहर खड़ा दरवाजा खटखटा रहा है। रसोई घर मे चंपा के बगल मे सोया हुआ सखाराम हड़बड़ाकर उठता है। अलसाया-सा बाहर के कमरे मे आता है दरवाजा खोलता है।

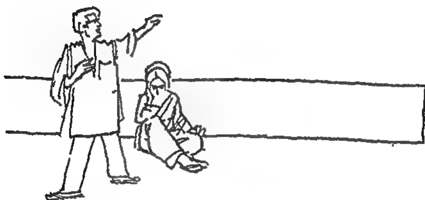
दरवाजे के बाहर से कोई : सखा चल रहे हो क्या। प्रेस पर पहुँचने मे देर हो जायेगी कितनी देर से दरवाजा भडभडा रहा हूँ। बाबा रे! सोते हो घोडा बेंच कर।

सखाराम : (अभी भी नींद गई नहीं) बस आया अभी।

दरवाजा उढ़का कर रसोई में जाता है। गहरी नींद मे सोई हुई चंपा को देखता है। झुक कर, अस्तव्यस्त ओढ़ना ठीक करने के बहाने उसे धीरे से स्पर्श करता है। नाली की तरफ आकर मुँह पर पानी के छींटे देता है। कुल्ला करता है। बाहर के कमरे मे आते-आते फिर चंपा को

तरफ देखता है। फिर गुनगुनाता हुआ बाहर आता है। शर्ट, जरसी, टोपी पहनता है। पाँवों में चप्पल डालकर बाहर निकल जाता है। जाते-जाते दरवाजा खींचकर ठीक से बन्द कर लेता है। थोड़ी देर तक रसोई में शान्त सोई हुई चंपा दिखती है।

अन्धकार।



दृश्य छठा

•

उजाला। दुपहरी। चंपा रसोई में चूल्हे के पास बैठी हुई खाना खा रही है। सखाराम बाहर से आता है। चप्पल उतारता है। खूंटी पर जरसी टोपी आदि टाँगता है।

सखाराम : मैं आ गया

चंपा : (भीतर से) इतनी जल्दी ? प्रेस में छुट्टी-उट्टी हो गई का ?

सखाराम : (भीतर जाता हुआ) नही । ऐसे ही आ गया । बोल ! क्यो आया ?

चंपा : हमें का पता !

सखाराम : मन नही लगा ।

चंपा : ये बात अच्छी नही ।

सखाराम : पर सच्ची तो है (उसके करीब जाकर) ए...

चंपा : दूर हट । खाना खाने दे हमे । अभी नहाया भी नही । सबेरे कितनी देर से आँख खुली ।

सखाराम : रात बहुत मजा आया ''

चंपा : (चुपचाप काम करती हुई) हमे कुछ नही याद ।

सखाराम : अरे जा झूठी'''

चंपा : झूठ नही कहती ।

सखाराम : खूब मजा आया, दिन भर वही-वही याद आती रही । मन नहीं लगा । मन किया कि बस घर चलूँ...

चंपा : बाहर बैठ चलकर । हमे खाने दे'''

सखाराम : नहीं ।

चंपा : फिर क्या ?

सखाराम : पहले यह ।

पीछे पकड़ी हुई दारू की बोतल निकाल कर उसे दिखाता है ।

चंपा : (उसकी तरफ देखकर) खाना खाने दे हमे ।

सखाराम : उहूंक !

उसका हाथ पकड़ लेता है यह अनपेक्षित दृढ़ता से झिटक देती ।

: हरसाली यह गुमान !

चंपा : खाते वखत हमे ऐसे तग न कर कहे देती हूँ।

सखाराम : इस घर मे मेरी बात चलती है। मैं जो कहूँगा करना पडेगा।

चंपा खाना खाती रहती है।

: हुकुम मेरा मानना पडेगा नही तो मुझसे बुरा कोई नहीं। मार मार कर भुरकुस निकाल दूँगा। आगा पीछा नही देखूँगा फिर।

चंपा : आय हाय! यह हमसे कह रहा है तू! क्यो?

सखाराम : तू क्या कोई दूध की धोई है। मुझे जो चाहिए वह लेकर रहता हूँ।

चंपा : जा उधर बाहर। काम है हमे।

सखाराम . (हाथ पकडकर) चंपा।

चंपा : (हाथ झिटकती नहीं। समझाती हुई कहती है) समझ बात। तग न कर हमे।

सखाराम हाथ छोडकर बाहर के कमरे में चला जाता है। और बेचैन सा चक्कर काटता रहता है।

सखाराम : (एकाएक रुककर चिल्लाता है) बाहर निकाल दूँगा साली घर से! तब पता लगेगा। सडक की कुतिया की तरह रहना पड़ेगा ऐरा-गैरा सब के साथ बाजार लगा के बैठना पडेगा बाजार

चंपा अभी भी खाना खा रही है। पर अब वह भी बेचैन हो उठी है। कुछ समय ऐसे ही गुजरता है। चंपा खाना रोककर चुप बैठी है। फिर एकाएक भयकर आवेश के साथ सामने की थाली दूर फेंक देती है। और जो

आवाज के साथ थाली दूर जा गिरती है। बाहर सखाराम इस आवाज से स्तब्ध हो उठता है। आवाज जरा देर मे शान्त हो जाती है। चम्पा उठ कर नाली के पास जाती है। पानी डाल कर हाथ धोती है फिर आँचल मे पोंछती है। गिरी हुई थाली उठाकर उसमें जूठन बटोरकर रखती है और नाली के पास रख देती है। फिर बाहर के कमरे में आती है।

चंपा : (सखाराम के पास आकर) चल ! दे दारू इधर—

सखाराम चुपचाप हतप्रभ होकर उसके उग्र रूप को देखता रह जाता है।

क्या कह रही हैं हम दारू दे हमे।

सखाराम चुपचाप उसे बोतल पकड़ा देता है। चम्पा क्रोध में दाँत पीसती हुई बोतल का ढक्कन खोलती है। जल्दी-जल्दी पीने लगती है।

ले ! तू भी पी ! पी हरामी !

जबरन उसके मुंह में बोतल ठूंसती है। खुद भी पीती है। खिलखिला खिल-खिलाकर हंसती रहती है—रुक तुझे मजा देती हूँ ! अभी मजा देती हूँ तुझे ! पीती रहती है। सखाराम के मुंह मे भी जबरन डालती रहती है। बराबर खिल-खिलाकर हँसती ही रहती है।

आ जिसे मजा लेना हो। आ ! सब को मजा देंगी हम !

साले कुत्ते को भी ! मुरदे को भी ! आ मुरदे ! तुझे भी लेना है मजा ?

बाहर के दरवाजे से दाउद अन्दर आता है और घबराया-सा दरवाजे के पास ही खड़ा रह जाता है।

कौन दाऊत ? आ। चल तुझे भी लेना है न मजा ? आ तू भी ले। ले मुरदार ! आ। अरे आ न मुरदे। ले हमे मुरदे...

दाउद हक्का-बक्का-सा खड़ा है। सखाराम बदहवास। चम्पा सखाराम के गले से लिपटी हुई है। दारू मे छकी-सी बदहवास हँसे जा रही है। अस्त-व्यस्त।

अन्धकार।



दृश्य सातवाँ

•

क्षीण आलोक। जो घर की बाहरी खिड़की के रास्ते आ रहा है। शेष घर में घना अन्धकार। कुछ देर चंपा की अस्पष्ट कराह। अर्ध चेतनावस्था में कही जानेवाली बुदबुदाहट।

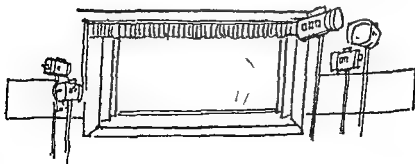
चंपा : कौन है ? चल रे हरामजादे ? आ। मजा ले मजा। ए मुरदे दूर हट ! ! दूर हट !

दारू के नशे में डूबी हँसी। फिर कराह।

दारू दे ! दारू दे हमे। दे दारू हरामी !…दारू…

हँसी, कराह।

अन्धकार।



दृश्य आठवाँ



तेज उजाला दिन का। चंपा घर मे नहीं है। दाउद और सखाराम। सखाराम के चेहरे पर नई जिन्दगी के चिन्ह। वह पहले से भिन्न लग रहा है।

दाउद : लेकिन सखाराम ! यार तू काम पर नही जायेगा तो कैसे तेरा निभेगा ! काम तो करना ही पड़ता है। घर-गृहस्थी है। पिछले पूरे हफ्ते काम पर गया ही नही तू।

सखाराम : देखा जायेगा। मन हुआ तो फिर चला जाऊँगा।

दाउद : और नौकरी से निकाल दिया गया तो ?

सखाराम : वह नही उसका बाप निकाल दे नौकरी से तो क्या ! अपने राम को फिक्र नही। यह न सही दूसरी मिलेगी। कुलीगीरी कर लूँगा साले को ! नही तो कही मजदूरी। काम तो करना ही है दाउद मियाँ। यह सखाराम बाइडर काम से कभी नहीं डरा। अपने डील की मशक्कत पर इतनी उमर पार किया है दाउद ! बाप को बाप नही समझा। माँ जब-तब मुझे चमार की औलाद कहा करती थी। मियाँ यह सखाराम काँटे वाले बबूल की तरह अकेला मैदान मे खड़ा हुआ इतनी जिन्दगी काट के आया है। उसको किस साले का डर है ? उसे

अब सिर्फ चपा चाहिए ! चपा बस ! और कुछ नही ।

दाउद : लेकिन गाँव वाले क्या बकबक करते हैं…

सखाराम : (फ्लेयर अप होकर) गाँव वाले ? गाँव वालो के बाप का कौन कर्जा खाया है सखाराम बाइंडर ने ? भूखा मर रहा था तब तो कभी दो कौर खाने को नहीं पूछा साले गाँव-वालो ने ? मिरज के मिशन अस्पताल मे जब बुखार से जल रहा था तब कोई हरामजादा गाँववाला पूछने नहीं आया कि मरा कि जिया ? नही दाउद मियाँ ! गाँव-वालो की बात मुझसे मत कहो । ये साले मादरचो- खुद तो सत्तर कोठे झक मारते घूमते है और दूसरो की नाक नापते घूमते हैं । गाँव मे अपने से साफ कोई नही । सब साले एक सिरे से नाली के कीड़े । बस ऊपर से सफेद चकमक कपड़ा देख लो, भीतर जिसको उधेड़ोगे गोबर ही पाओगे । उनकी बात क्या करते हो ? अपने से साफ तो बस एक ही है दाउद भाई । रंडी । वह क्या कभी कहेगी कुछ ? कभी नहीं ! वह कभी मुझे शराबी नहीं कहेगी । कभी नही कहेगी कि सखाराम औरत के पीछे आवारा हो गया या चपा के पीछे बिगड़ गया । क्योंकि वह जानती है सब । रंडी और आदमी मे कुछ फरक नहीं होता मियाँ दाउद !…फरक बस एक ही है कि आदमी झूठा होता है और रंडी झूठी नही होती । बस ।

दाउद : लेकिन सखाराम । अपनी हालत तो आप ही देखनी चाहिए न ? तुम्हारा यह घर कैसा था और कैसा हो गया । सखाराम भाई । याद है तुम्हें…उसको अभी बहुत दिन भी नही हुआ…जब यहाँ वह वाला पछी था… वही 'लक्ष्मी भाभी । कैसा लगता था तब'…

सखाराम : अरे लक्ष्मी गई जहन्नुम मे ! मर गई वह मेरे लिए । अब

उससे क्या मतलब । उन दिनो की बात छोडो दाउद मियाँ । यहाँ कोई किसी की याद मे नही बैठा रहता । अब तो बस चपा है । चपा के नाखून के मैल की भी बराबरी नही कर सकती कोई । अरे तुम क्या जानो कि चपा क्या चीज है

दाउद : जो दिखाई देता है और जो सुनाई देता है यार वह अच्छा नही लगता मुझे । बस यह कहना है मुझे तुम मानो या न मानो । अच्छा तो मैं चलूँ—धधे का टाइम हो गया

सखाराम : जा जा

दाउद जाता है । अकेला सखाराम । कुछ देर उसी तरह बैठा रहता है फिर उठकर लाख के पास जाता है । अन्धकार ।



दृश्य नवाँ

•

उजाला दिन का।
बाहर दूर पर जोर-जोर से शहनाई नगारा बज रहा है। रसोई में चंपा दारू के नशे में अपने को संभालने का प्रयत्न करती हुई काम कर रही है। बाहर सखाराम आता है।

सखाराम : (चप्पल उतारकर खूंटी की तरफ जाता हुआ) चंपा'' '' चंपा''

चंपा किसी तरह लटपटाती-सी सामने आती है।

: तूने पिया ? सबेरे-सबेरे ? आज दशहरा, त्योहार का दिन ' और'''

वह नशे में हँसती है।

: त्योहार के दिन सबेरे-सबेरे यह क्या तमाशा कर रखा है ? यह अच्छा नहीं है चंपा। क्यों पिया तूने ? क्या कहा था मुझसे प्रेस जाते समय ? अभी नहाई तक नहीं और पी के बैठी है। त्योहार के दिन घर की औरत को कैसे रहना चाहिए'''कोई आयेगा तो क्या कहेगा ? जा भीतर जा पहले। जा ! जल्दी जा भीतर'''

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] दरवाजा बन्द कर देता है। उसकी [illegible] है। [illegible] है। [illegible] कर साफ करता है। और उसे एक [illegible] में लाकर रखता है। भगवान की तस्वीर खोज-खाजकर लाता है। उसको भी [illegible] साफ करके [illegible] के पास रखता है। पूजा का कुछ और सामान तलाश करके लाता है। [illegible] है। फिर [illegible] बाहर से कुछ फूल उसमें ले आता है। [illegible] के पास जाकर हाथ पैर धोता है। [illegible] लड़खड़ाती [illegible] काम कर रही है। एकाएक वह गिरने लगती है। सखाराम उसे सँभालता है। वह उसके गले से लिपट जाती है। सखाराम उसे अलग करने का प्रयत्न करता है। वह उससे अलग नहीं होती। गले से चिपकी रहती है—हँसती रहती है।

: [illegible] । [illegible] । [illegible] रहा हूँ ना। मुझे पूजा करनी है। [illegible] है कि नहीं? [illegible]!

यह वैसे ही झूमती हुई-सी हँसे जा रही है।

: साली मादरचो- ! शरम ही नहीं। निकल जा मेरे घर से।

यह कहते हुए उसके उन्मत्त शरीर से एक तरफ अधिक मदहोश भी होता जा रहा है।

: दूर हटती है कि लगाऊँ एक लात कमर में ?

वह नशे में और हँसे जा रही है।

: दूर हट ! हट अलग ! कुतिया साली ! (उसे ढकेल देता है। वह जोर से गिरती है। दर्द से लोटने लगती है)

चंपा (दर्द से) हाय हाय ऽऽ उई ऽऽ

सखाराम उसके पास जाता है। यह देखने के लिए उस पर झुकता है कि कहीं उसे चोट तो नहीं लगी।

सखाराम : देखूँ कहाँ लगी ? अरे लगी कहाँ है तुझे ? बोलती ही नहीं हरामजादी। बोल कहाँ लगी ? नहीं तो जा ! मर

अन्धकार।



दृश्य दसवाँ

०

उजाला।

रसोई में मंद उजाला। चंपा, सखाराम रसोई में बिछावन पर। बाहर दरवाजा खटखटाया जा रहा है।

कोई व्यक्ति : कोई है घर में ? सखाराम···ए सखाराम···

कुछ देर रुककर फिर कोई दरवाजा खटखटाने लगता है।

कोई और व्यक्ति : सखाराम···अरे ओ सखाराम पंत···लगता है घर में नहीं है···

कोई तीसरा व्यक्ति : कोई है तो शायद घर में···

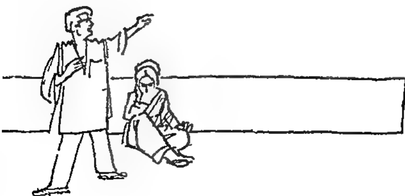
दूसरा व्यक्ति : औरत होगी।

तीसरा व्यक्ति : दोनों होंगे···

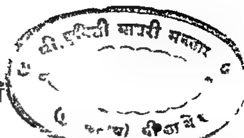
पहला : (पुकार कर) ए सखाराम···अरे हो कि नहीं ?

दरवाजा बराबर खटखटाया ही जा रहा है। रसोई में लेटे-लेटे ही सखाराम जरा-सा कुनमुनाता है। पर उठता नहीं। जवाब भी नहीं देता। थोड़ी-थोड़ी

देर मे दरवाजे पर इसी तरह खटखटा-हट, पुकार और आपस मे बातचीत।
फिर सब शान्त।
रसोई मे भी सब शान्त। बीच बीच मे दारू के नशे मे बेहोश सखाराम की कुछ बुदबुदाहट। बाहर दूर पर नगारा शहनाई बजने की आवाज। घर पर कौवा आकर चिल्लाने लगता है।
फिर दरवाजे पर थपथपाहट, पुकार। इसके बाद आया हुआ वह व्यक्ति लौट जाता है। सब शान्त।
अन्धकार।



दृश्य ग्यारहवाँ



उजाला। रात का समय।
रसोई में चिमनी की मंद रोशनी। बाहर दूर पर कहीं कुत्तों के भूंकने की आवाज़, झींगुर की आवाज। दरवाज़े पर थपथपाहट। रुक-रुककर बार-बार होती रहती है।

सखाराम : (नशे के स्वर में) ए उठ'

फिर थपथपाहट।

: लगता है दरवाजा खटखटा रहा है कोई। उठ ए' उठ कह रहा हूं न'''उठ जल्दी। कैसी पसरी है। उठ देख कोई दरवाजा खटखटा रहा है।

फिर थपथपाहट। कुछ ठहर कर फिर।

: कौन आया है आधी रात को' साली उठती भी नहीं बेहोश पड़ी है (किसी तरह उठकर बैठता है। सिर को जोर से पकड़ लेता है) आह' सिर ठनक रहा है एकदम।

फिर थपथपाहट सखाराम अलसाई आवाज में।

: अरे हाँ, सुन लिया' कौन है इतनी रात को ?

किसी तरह अपने को संतुलित करता हुआ उठता है। झूमता, लड़खड़ाता बाहर के कमरे में आता है। पूजा के लिए रखे हुए मृदंग से टकरा जाता है। पूजा का सारा सामान बिखर जाता है। वहाँ से वह दरवाजे के पास जाता है।

: कौन है इतनी रात को ?

दरवाजा खोलता है। दरवाजे पर कौन है यह दिखाई नहीं देता।

: कौन है ? (आँखें मलकर गौर से देखकर) कौन तू ? (भौंचक्का सा) सपना है क्या, कि सच ! (फिर आँखें मलकर देखता है) तू कैसे यहाँ, तू क्यों ?

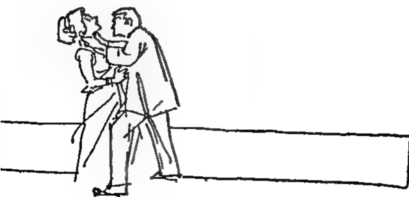
जरा देर वह वैसे ही चकराया-सा खड़ा रहता है। इसी समय पोटली पकड़े हुए एक आकृति सिमटी सिकुड़ी सी उसकी बगल से होकर अन्दर आ जाती है। बहुत दयनीय अवस्था। बहुत कुछ सिकुड़ी-सी। मानो भय से काँप रही हो। मुँह पर आँचल दबाए हुए है। झुककर पोटली नीचे धरती है। यह लक्ष्मी है।

लक्ष्मी : (सपाट स्वर में) भतीजे ने घर से निकाल दिया। उसकी औरत ने चोरी लगाई मुझे। मैं चोरी करूँगी भला ? पुलिस में दे रहा था मुझे। कहाँ जाती ? सीधे यहीं आ गई। यही तो एक ठिकाना था मेरे पास।

सखाराम अचकचाया-सा उसे देख रहा है।

• अब यही रहूंगी जब तक जियूंगी। कही नही जाऊंगी। यही जियूंगी यही मरूंगी।

दरवाजे के पास सखाराम हक्का-बक्का सा खड़ा है। जरा अन्दर की तरफ लक्ष्मी कांपती हुई उसके सामने खड़ी है। रसोई मे बिछावन पर चंपा नशे मे कुछ बुदबुदाती हुई करवट बदलती है। दूर पर कहीं कुत्ते भूक रहे हैं। परदा।



अंक तीसरा



दृश्य पहला

•

दूसरे अंक का अंतिम दृश्य यथावत ।

लक्ष्मी : (समतल स्वर मे) भतीजे ने घर से निकाल दिया । उसकी औरत ने चोरी लगाई मुझे । मैं चोरी करूँगी भला ? पुलिस मे दे रहा था मुझे । कहाँ जाती ? सीधे यही आ गई । यही तो एक ठिकाना था मेरे पास । अब यही रहूँगी जब तक जियूँगी । कही नही जाऊँगी । यहीं जियूँगी यही मरूँगी ।

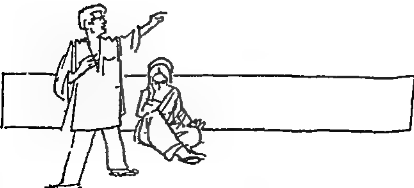
सखाराम भौचक्का सा खडा है । लक्ष्मी कुछ और अन्दर आ गई है । सखाराम के पास खडी हुई है । भय से थरथरा रही है । रसोई मे चपा बिछावन पर पडी हुई नशे मे कुछ बडबडा कर कर-वट बदलती है । सखाराम को एकाएक परिस्थिति का एहसास होता है । वह खीजकर लक्ष्मी के पास बढ़ता है और उसका हाथ पकडकर उसे खींचता हुआ दरवाजे के बाहर करके दरवाजा बन्द कर लेता है । दरवाजे पर दुबारा कोई आहट नहीं है यह देख कर निश्चिन्तता की साँस लेता है ।

चपा (बिछावन पर पडे हो पडे इस घटना से कुछ सचेतन होकर) कौन है ? आँ ? कौन था ? कौन आया था ?

फिर सन्नाटा।

अभी अभी जो कुछ घटित हो गया उस पर सखाराम विश्वास नहीं कर पा रहा है। लक्ष्मी आई थी यह सच है या झूठ? और उसे बाहर निकाल दिया यह भी सच है या झूठ? इसे वह समझ पाने में असमर्थ है। वह इस मन स्थिति मे ही नहीं है कि इस पर विचार कर सके। इतना सच है कि दरवाजे पर दुबारा थप-थपाहट नहीं हो रही है। कोई आहट नहीं है। वह कुछ क्षण सर पकड़े हुए हतबुद्धि सा खड़ा रहता है। फिर तेजी से रसोई की तरफ बढ़ जाता है और बिछावन पर निढाल-सा पड़ जाता है। फिर सो जाता है। चपा पड़े-पड़े ही नशे मे बड़बड़ा रही है, टूटे फूटे बिखरे शब्द। दूर पर कुत्ते भूंकते हैं। रुक रुक कर बार बार।

अन्धकार।



दृश्य दूसरा

•

दुबारा रात की हल्की रोशनी। बाहर अनवरत मूसलाधार बारिश की आवाज। अन्धकार।



दृश्य तीसरा

•

उजाला। सुबह का समय। घर के भीतर धूप आ रही है। चंपा हाथ में झाड़ू लिए हुए बाहर के कमरे में आती है। बाहर का दरवाजा खोलती है। दरवाजे से भी धूप अन्दर आने लगती है। चम्पा झाड़ू लगाने लगती है—अपने में तल्लीन-सी कोई पंक्ति गुनगुनाती है। इसी समय दरवाजे पर एक आकृति। यह लक्ष्मी है। चम्पा का उस पर ध्यान नहीं जाता।

चंपा : (एकाएक उस पर नजर पड़ती है) रोज-रोज नहीं मिलने वाली भीख तुझे बाई। जा अगला दरवाजा देख।

लक्ष्मी दरवाजे पर अचल खड़ी है।

: हम क्या कह रही हैं तुमसे। बहरी है क्या? तुझे यहाँ भीख नही मिलने को। जा आगे बढ। नई लगती है।

लक्ष्मी उसी तरह खड़ी है।

: अच्छी भली हट्टी-कट्टी है तू। फिर भीख क्यो माँगती फिरती है?

लक्ष्मी फिर भी अचल खड़ी है।

जाती है कि आऊँ? करने को भिखमंगिया और ढिठाई ऐसी—जा भाग यहाँ से •

चम्पा आगे बढ़ती है। लक्ष्मी दरवाजे पर वैसी ही खड़ी है।

लक्ष्मी : (समतल स्वर में) मैं भिखमंगिन नही हूँ।

चंपा : नही तो क्या रजवाड़े की महरानी है?

लक्ष्मी : इसी घर मे रहती थी मैं।

चंपा : (जैसे नई बात सुन रही हो) क्या?

लक्ष्मी : हाँ इसी झाड़ू से यहाँ साफ सुफ करती थी। जैसे तुम। तुमसे पहले यहाँ मैं रहती थी।

चंपा : अच्छा तो तू •

लक्ष्मी : लछमी। एक बरस और इक्कीस दिन यहाँ रही मैं। पिछले बरस सावन मे मुझे लाए थे यहाँ। छ दिन की भूखी थी। खूब अच्छी तरह याद है।

चंपा : तो अब क्या करने आई है?

लक्ष्मी • सगमनेर भतीजे के पास गई थी। राजा रानी की गिरिस्ती। बीच म मुझे कौन रखता! और कोई ठिकाना नही। यहीं आ गई और कोई नही है मेरे।

चंपा आदमी •

लक्ष्मी (ठण्डी साँस भरती है)

चपा : (झाड़ू लगाने लगती है) वह घर मे नही है प्रेस गया है जिसके पास आई है तू। वही सखाराम।

लक्ष्मी : पता है मुझे। देखा था जाते वखत।

चपा देखा था ? तो पुकारा नही ?

लक्ष्मी नही। उनको देर हो गई थी। फिर मेरी वजह से और देर होती।

चपा : तव तू थी कहाँ अब तक। दो घण्टे तो हो गए होगे उसे गए।

लक्ष्मी : रात भर बाहर ओलती के नीचे थी। पानी बरस रहा था। सबेरे सबेरे जरा आँख लगी। मगर वह प्रेस जाने लगे तो पता नही कैसे फिर आँख खुल गई थी अपने आप ही।

चपा : तू रात की ही आई है ?

लक्ष्मी : हाँ।

चपा : फिर ?

लक्ष्मी : बाहर ही थी। पानी न वरसता तो आँगन मे मो रहती।

चपा : तो दरवाजा तो खटखटाती ?

लक्ष्मी : (जरा रुककर) नही खटखटाया। सोचा क्या करने को रात मे बहुत रात भी हो गयी थी। ऐसे ही कौन बहुत नीद आती है। बेकार तुम लोगो की नीन्द खराब होती।

चपा : हम तो दारू के नशे मे मुरदे की तरा सोई रहती हैं।

लक्ष्मी . (चकित सी) तुम दारू पीती हो ?

चपा : हाँ। क्यो ?

लक्ष्मी : रात को भी दारू पिये हुए थीं तुम ?

चपा हाँ। रोज पीती हैं हम। वह भी पीता है।

लक्ष्मी : (कुछ दुखी होकर) कल दशहरा था। त्योहार का दिन था कल।

चंपा : तो क्या ?

लक्ष्मी : त्योहार के दिन, पूजा के दिन यह अच्छा नहीं।

चंपा : तू पूजा-ऊजा करती है ?

लक्ष्मी : हाँ पहले से ही। बहुत छुटपन से यह सब मुझे अच्छा लगता है। बुरे समय में भगवान की इसी पूजा की बदौलत बची रही। नहीं तो कब की मर-खप गई होती। पर जीती रही। (जरा रुककर उत्सुकता से) तुम कब से आई हो यहाँ ?

चंपा . हो गए होंगे एक दो महीने। दो हुए होंगे।

लक्ष्मी : मेरे जाने के फौरन बाद ?

चंपा . तू कब गई, मुझे क्या मालूम ?

लक्ष्मी · भादों की अष्टमी को गई थी मैं। दिन याद है मुझे। यहाँ का हर दिन याद है। एक एक बात बता सकती हूँ। मैं बताती हूँ। दो महीने, यानी मेरे जाने के फौरन बाद आईं तुम।

चंपा : अब आगे क्या इरादा है तेरा ?

लक्ष्मी : क्या होगा ?

चंपा . हाँ सचमुच। तेरा तो दूसरा कोई ठिकाना ही नहीं। तो बोल ना कि यहीं रहेगी।

लक्ष्मी : हाँ यही सोचा है।

चंपा : (जरा रुककर) अन्दर चल चाय बनाती हूँ।

लक्ष्मी . नहीं रहने दो।

चम्पा रसोई में जाती है। लक्ष्मी अकेली ही बाहर खड़ी है।

चंपा : (भीतर जाते-जाते) हम भी तो पीनी है। रात भर बहुत चूसता है यह सखाराम।

बाहर सख्यो पर इस बात की प्रति-
क्रिया ।

: सवेरे फिर खुद ही उठके चाय बनाना बहुत भारू लगता है । जी नहीं करता कुछ करने को । सारा बदन और माथा ठनकता रहता है ।

लक्ष्मी से रहा नहीं जाता वह अन्दर
रसोई में पहुँच जाती है ।

लक्ष्मी : लाओ ! बनाना है तो मैं ही बनाए देती हूं चाय ।

चंपा : (तुरन्त) नहीं नहीं । दो दिन को आई है तू, तुझे क्यों सताएं ?

लक्ष्मी : (असमंजस में) इसमें तकलीफ कैसी···

अनजाने में ही वह काम में जुट जाती
है । चम्पा देखती रहती है ।

: यह वर्त्तन अभी भी यही रहता है ना ?

चंपा : हाँ ।

लक्ष्मी : (सब तरफ देखती है । बगैर बोले रह नहीं पाती) ठाकुर जी कहाँ है ?

चंपा : ठाकुर जी ? क्या पता ?

लक्ष्मी : तुम्हें मिले नहीं ? मैं जाते बखत यहाँ दो छोटी-छोटी तस्वीरें धर गई थी ।

चंपा : होंगी (चिंता भरे स्वर में) क्या पता कहाँ चली गईं···

लक्ष्मी : (फिर बोले बिना रहा नहीं जाता) ये अभी भी पूजा करते हैं ना ?

चंपा : कौन ? सखाराम ? उसको तो बस एक ही पूजा आती है ।

लक्ष्मी : मैं थी तो रोज बिना भूले वह नहा-धोके भगवान के आगे

धूपदीप-फूल चढाया करते थे । तुम करती हो कि नही पूजा ?

चंपा : हमने कोई उधार नही खाया है तुम्हारे ठाकुर-फाकुर का !

लक्ष्मी : ऐसा क्यो कहती हो ! सब कुछ तो उसी का दिया है।

चंपा : उसका दिया क्या है ? हमारा कुछ उसका दिया किया नही है समझी ! ले चाय पी ले। (चाय का प्याला उसके आगे धरती है) क्या देख रही है इसमे ?

लक्ष्मी : (चाय के प्याले मे एकटक देखती हुई) किसने कहा था तुझे यहाँ आके मरने को ? बोल ! किसने कहा था ? अब मुँह नाक म चाय भर गई तो लगी छटपटाने । बुद्दू कही की !

खिलखिला कर हँसती है फिर बहुत धीरे से चाय मे उँगली डालकर चींटी को निकालती है।

: जरा सा तो पेट है चाय पीने चली प्याला भर ! फिर होगा क्या ! डूब तो जायेगी ही। रुक तुझे सुखा दूँ। ठहर !

आँचल से चींटी को धीरे से सुखाती है।

: हूँ ! अब तो नही जायेगी न चाय पीने ? नही जायेगी न ? जा ! भाग जा यहाँ से।

लक्ष्मी चींटी को छोड देती है। चंपा भिखारिन जैसी लक्ष्मी का यह रूप देखकर स्तंभित है। चाय पीना छोडकर उसी की तरफ देखती रहती है।

जब पहले मैं यहाँ रहती थी तो ऐसे ही एक चींटा आया करता था। वह पाजी ऐसा नखरीला था, ऐसा घमण्डी कि बस पूछो मत। उसको राजा कहके बुलाया करती थी

में। एकदम राजा जैसा था भी। बहुत हिल गया था मुझसे। और एक तोता भी था।

बाहर कौवे की कॉंव कॉंव।

। वह देखो वही आया होगा।

जल्दी से खिड़की के पास जाकर देखने लगती है। एकाएक उसे चक्कर आ जाता है वह आँख बन्द करके दीवार का सहारा लेती है।

चपा : (दौड़कर उसे सँभालती है और वापस ले आती है) चाय पी ले पहले। कौवा कहीं भागेगा नहीं। पेट में जाने कब से कुछ गया नहीं तेरे—चल पी पहले।

लक्ष्मी को जबरन बैठाती है। दोनों चाय पीने लगती हैं।

ले यह बटर बिस्कुट खा (देती है) खा चाय के साथ। कित्ते दिन रहेगी यहाँ पे ?

लक्ष्मी : और अब जाऊँगी ही कहाँ ? भतीजे का घर तो बन्द ही हो गया। आदमी का पहले ही बन्द हो गया था।

चपा : क्यों निकाल दिया मरद ने ?

लक्ष्मी निपूती जो रही। लड़का नहीं हुआ इसी से निकाल दिया।

चपा तो फिर दूसरी से हो गया क्या ?

लक्ष्मी : क्या जानूँ ? मुझे क्या पता ! उधर की कुछ खबर ही कहाँ मिली ! तुम ? तुम्हारा क्या हुआ था ?

चपा : अरे होयगा का ! मरद हरामी साला केंचुआ ! खुद तो रहा हिजड़ा ऊपर से हमें सताया करे। हमी छोड़-छाड़के भाग आईं उधर से। दिखावे के लिए भतार रख के का चाटना है ?

लक्ष्मी : अब कहाँ रहता है वह ?

चंपा : का पता जिन्दा है कि मर-मरा गया हरामी ।

लक्ष्मी : (व्याकुल होकर) ऐसे न बोलो ।

चंपा : और नहीं तो कैसे बोलें ?

लक्ष्मी : चाहे जैसा हो है तो तुम्हारा आदमी । भगवान के आगे पंडित-पुरोहित के आगे उसी के साथ गाँठ जोड़ी है ।

चंपा . अय हय ! फिर जब वह मारता कूटता रहा तब साले पंडित पुरोहित कहाँ गए रहे ?

लक्ष्मी : वह तो अपन करम का भोगमान है ।

चंपा : वाह रे वा भोगमान ! तेरे हिसाब से तो हमें मुंह बांधे सब जोर-जुलुम सह लेना चाहिए । पर सहन की कोई हद भी तो हो । बहुत सहा है जब बहुत हद कर दी तब मुरदे को लात मार दिया और घर छोड़ दिया । वहाँ से यह यहाँ पे ले आया । यह तेरा सखाराम ।

लक्ष्मी : (ठण्डी साँस भरकर) मेरे कहाँ ? अब तो तुम्हारे हैं ।

चंपा : ए सुन ! हमारे लिए हमी बहुत हैं ! हमें किसी नास पीटे की जरूरत नहीं समझी ? सब साले मतलब के यार हैं ।

लक्ष्मी . (बिना पूछे रहा नहीं जाता) तुम्हारा यहाँ पर कैसा चल रहा है ?

चंपा : चल का रहा है ! दारू मे धुत्त रह के तो किसी का भी चल सकता है । जित्ता खाने को देता है उसका दूना दाम झपट लेता है तेरा सखाराम ! हम तो इसी से टिकी हैं । चारा भी का है । बाहर दस तरा के जानवर और खसो-टेंगे मरे । उससे तो यह एक अकेला कुत्ता भला ।

लक्ष्मी : (ठण्डी साँस भरकर साहस जुटाकर कहती है) तो मैं यहाँ रह जाऊँ ? अगर रह जाऊँ, हमेशा के लिए तो—तो तुम—तुम्हे कोई तकलीफ तो नही—

चपा (जरा सोचकर) रह न। पर हमारे बीच टाँग न अड़ाना फिर ठीक है। पर हमें बाहर निकाले की बात की तो फिर हमसे बुरी कोई नही यह अभी से बताए देती हैं हम!

लक्ष्मी ऐसा कैसे करूँगी? मुझे कुछ चाहिए नही! अब पहले की तरह अपने से मिभता भी नही। अब तो बस सर पे जरा-सा छप्पर और दो रोटी। और कुछ नही। जैसे कहोगी वैसे रहूँगी। सब काम करूँगी—

चपा • (जरा सोच विचारकर) अच्छी बात है रह जा! तू घर का काम घधा देख। हम हरामी की भूख पूरी करेंगी। दोनो अपने बस का नही। तू भी गुजारा कर हमें भी गुजारा करने दे। चल।

लक्ष्मी (अत्यन्त कृतज्ञ होकर) हाँ हाँ! अच्छा! ठीक है। मैं—मैं कह दूंगी उनसे। सचमुच मैं जरा भी नही सताऊँगी तुम्हें। उल्टे तुम्हे सहारा ही दूंगी। काम-धाम सब करूँगी। तुम्हे कुछ करना नही पडेगा। देखने मे दुबली पतली जरूर हूँ पर काम जितना कहोगी सब करूँगी। फिर खाना भी कम खाती हूँ। दिन मे एक दफै थोडा सा बासी भात एक कटोरी छाछ। बस इतने से ही चल जायेगा मेरा—कोई झंझट नही और मेरे साथ। फिर उपवास भी बहुत करती हूँ। धोती भी एक पहनने को, एक धोने को बस दो चाहिए। वह भी जरूरी नही कि नई हो—तुम्हारी पुरानी धुरानी भी चलेगी—

क्रमश अधकार।

दृश्य चौथा



उजाला। शाम का समय। रसोई में काम करती हुई लक्ष्मी। वह अब सुबह से अपेक्षाकृत साफ़ सुथरी और सहज लग रही है। बगल में चंपा बाल संवार रही है। सखाराम आता है। चप्पल उतारता है। पहले से ही किसी वजह से नाराज़ है।

सखाराम : (भीतर चंपा को संबोधित करके) मैं आ गया हूं।

अन्दर चंपा लक्ष्मी को इशारा करती है। सखाराम खूंटी के पास जाकर जरसी टोपी उतारता है। साथ ही भुन-भुनाता जा रहा है।

: मजदूरी उतनी ही देंगे और काम बोझा भर माँगेंगे साले! कौन करेगा? मेरे ताऊ लगते हो साले तुम? या खरीद लिया है मुझे? मैं भी नाकों चने न चबवा दूं तो कहना—

पैर धोने का पानी लिए हुए लक्ष्मी बाहर के दरवाजे पर खड़ी है। सखाराम बिना देखे हुए अपनी ही धुन में भुन

भुनाता हुआ आवतन पैर धोने के लिए जाता है। लक्ष्मी को देखकर एकदम उत्तेजित हो उठता है। लक्ष्मी की देह मे क्षण भर में सीमातीत भय सिमट आता है। वह सिर झुकाए कांपती रहती है।

सखाराम (कठोर स्वर मे) तू क्यो आई लौटकर ? किसने यहाँ घुसने दिया तुझे ?

लक्ष्मी (साहस करके) भतीजे ने घर से निकाल दिया। यहाँ आ गई। कैदखाने भेज रहा था चोरी लगा के—

सखाराम तो फिर यहाँ क्या करने आई है तू ?

लक्ष्मी तो और कहाँ जाती

सखाराम . जहन्नुम म। बता दिया था पहले ही मुझसे अब तेरा कोई नाता नही।

लक्ष्मी मुझे रोज याद आती थी। एक दिन भी ऐसा नही गया जब यहाँ की याद नही आई।

सखाराम . मगर मुझे नही आई कभी याद फाद। यहाँ से जो एक दफा चली गई वह मर गई मेरे लिए। यही कायदा है इस घर का। आज चौदह बरस से यह ऐसे ही चल रहा है। तू जानती नही क्या ? तुझे लेकर आया तभी सब कुछ समझा दिया था।

लक्ष्मी हाँ। मगर वह घर बन्द जो हो गया। कहाँ जाती ? दूसरा कोई ठिकाना भी तो नही था। तभी तो यहाँ आ गई।

सखाराम • ठिकाना नही था तो कही मर खप जाती। मुझसे तेरा क्या नाता है ? मैंने क्या जिन्दगी भर का ठेका ले रखा है तेरा ? मैं हूँ कौन तेरा ?

लक्ष्मी : (किसी तरह) देव···

सखाराम : (कर्कश स्वर मे) क्या ? खबरदार ! दुबारा फिर कहा तो । हरामजादी गला घोट दूँगा ! अपना साथ बस गरज भर के लिए था समझी ? गरज खतम कि नाता भी खतम । फिर यहाँ रहने का काम नही । किसने रख लिया तुझे । निकल बाहर इस घर से । चल निकल यहाँ से···

लक्ष्मी भयभीत हो सर्वांग काँप उठती है । अन्दर से चंपा बालों को लपेटती हुई आकर रसोई के दरवाजे पर खड़ी खड़ी यह देख रही है । उस पर इस सब को कोई प्रतिक्रिया नहीं ।

लक्ष्मी : (लोटा और बाल्टी नीचे रखकर सखाराम का पैर पकड़ लेती है ।) मुझे बाहर न निकालो ! कोई और ठिकाना नही है । और कोई नही है मुझे पूछने वाला । मैं एक कोने मे पड़ी रहूँगी । सारा काम करूंगी बदले मे कुछ नही चाहिए । बस सर पर जरा-सा छप्पर और मरते वखत तुम्हारे पाँव की धूल···

सखाराम : (उसे धकेलकर) चल हट ! भाग यहाँ से ! नहीं तो सर तोड़ दूँगा । जा भाग ! भाग ! हट !

लक्ष्मी उसका पैर पूरी ताकत से पकड़े रहती है । सखाराम कोशिश करके भी पाँव छुड़ा नहीं पा रहा है । क्रोध में गाली दिए जा रहा है । चंपा चुपचाप खड़ी-खड़ी यह देख रही है । सखाराम खिसियाकर लक्ष्मी को घूसों से मारने लगता है । फिर भी लक्ष्मी उसके पैर

से चिपटी हुई है। सखाराम और जोर-जोर से घूंसों से मारे जा रहा है। गाली दिए जा रहा है। चंपा अलग खड़ी हुई यह सब देख रही है।

चंपा : कितना मारोगे। मर जायेगी ऐसे तो!

सखाराम : मर जाय मेरी बला से! पर इसे यहाँ नहीं रहने दूँगा।

और मारता है।

चंपा : और खून हो गया तो फिर मेरा क्या ठिकाना करोगे?

सखाराम : है तो तेरा मरद तेरे लिए···

चंपा : मरद वाली होती तो तेरे घर काहे को मरने आती?

सखाराम : (क्रोध के नए आवेश से लक्ष्मी को फिर मारने लगता है।) ले बेहया, ले कुतिया साली, जोंक साली···

चंपा : (आगे बढ़कर लक्ष्मी को परे हटा देती है और सखाराम के सामने खुद खड़ी हो जाती है।) ले मुझे मार मारना है तो?

सखाराम हाथ रोक कर क्रोध से तड़पता हुआ खड़ा रहता है। चंपा लक्ष्मी को खड़ा करके उसके चेहरे पर से उसका हाथ हटा कर देखती है।

: देखूं···रामराम आँख जरा सी बच गई···पेट में तो नहीं लगा ना? पेट के नीचे? चल भीतर चल।

सखाराम : भीतर नहीं···बाहर···

चम्पा लक्ष्मी को अन्दर ले जाने लगती है।

सखाराम : क्या कह रहा हूँ मैं? सुना नहीं? उसे बाहर कर पहले।

चंपा : लक्ष्मी। चल भीतर, उसकी फिकर न कर।

चम्पा लक्ष्मी को लेकर अन्दर चली

जाती है। सखाराम क्रोध में कसमसाता हुआ खड़ा है। क्या करे कुछ समझ नहीं पा रहा है।

सखाराम : चंपा। उसे बाहर कर! कह रहा हूँ।

चम्पा लक्ष्मी को अन्दर ले जाकर बिठाती है।

चंपा : (लक्ष्मी से) बहुत दुख रही है क्या चोट क्यों? जलन होय रही है? तू बैठ यहीं। उठने का काम नहीं।

बाहर आती है। लक्ष्मी द्वारा रखी हुई बाल्टी और लोटा उठाकर सखाराम से—

• चल पानी डाल दें तेरे पैर पे।

सखाराम क्रोधित खड़ा है।

सखाराम : पहले उसे घर से बाहर कर।

चम्पा खामोश।

: चंपा! उसे निकाल पहले इस घर से! हजार दफे कह दिया

चंपा : पर हम उसे निकालने वाली कौन हैं। घर तेरा है तू जाके निकाल तुझे गरज है तो। हम थोड़े ही ले आई थी उसे पहली बार?

सखाराम : तो फिर तू बीच मे क्यों पड़ी हमारे?

चंपा : क्यों पड़ी? इसीलिए कि तू तो खून करके जेल की चक्की पीसेगा और हमे यह डेढ़ वित्ते का गड्ढा भरने के लिए हर दफे एक नया गिराहक ढूंढना पड़ेगा। रोज दस जानवरो की नोंच खसोट सहने से अच्छा है कि एक ही जो करता है करे! समझ में आया? चल, अब पैर धो ले। चाय तैयार है।

सखाराम उससे कह जाके पहले कि चली जाये यहाँ से मेरा उससे कोई नाता नही।

चंपा : पर वह तेरा क्या बिगाड रही है ? हमे घर के काम के लिए एक आदमी हो जायगा। अपने बूते तेरा मिजाज और घर का धंधा दोनो नही निभने का। घर का वह देख लेगी। उसे कुछ देना लेना नही। दो जून दो कौर खायेगी और हमारा उतारन पहनेगी। तुझे क्या खल रहा है उसमें ?

सखाराम : दो दो औरत पालना अपने बूते नही।

चंपा तो हम चली जाती हैं।

सखाराम नही। उसे जाने को कह। उसी को जाना पडगा यहाँ से। नालायक साली—कहती है मरते बखत पाँव की धूल चाहिए।

: (गरजकर) लक्ष्मी ! निकल जा यहाँ से कह रहा हूँ—फौरन निकल यहाँ से—यहाँ कोई जरूरत नही तेरी।

अन्दर लक्ष्मी सिहर उठती है।

चंपा तू पाँव धोने चलता है कि यह सब यहाँ छोड के हम जायें भीतर ?

सखाराम बेमन से पैर धोने के लिए चंपा के पीछे पीछे बाहर जाता है। लक्ष्मी अन्दर दीवार का सहारा लिए हुए खडी-खडी काँप रही है। बाहर कौवा बोलने लगता है। जल्दी से लक्ष्मी रसोई की खिडकी के पास जाकर उत्सुक हो बाहर देखने लगती है। हाथ मुंह धोकर पोंछता हुआ सखाराम तथा उसके पीछे पीछे चंपा बाहर के कमरे मे जाते

हैं। चंपा लोटा-बाल्टी लिए हुए रसोई में चली जाती है। खिड़की से बाहर देख रही लक्ष्मी को एक नजर देखकर लोटा-बाल्टी रखने के लिए नाली के पास जाती है।

लक्ष्मी : (बाहर देखती हुई) फिर नहीं चिल्लाया।

चंपा : कौन ? सखाराम ? कि कौवा ?

लक्ष्मी : (जैसे यह सुनती ही नहीं) रोज शाम को वह ऐसे ही चिल्लाता है। वही होगा।

चंपा प्याले में चाय डालकर बाहर ले जाती है। सखाराम बैठा है।

सखाराम : (चंपा के हाथ से चाय लेकर) वह गई कि नहीं ?

चंपा : (जरा रुककर) नहीं।

सखाराम : (प्याला-तश्तरी नीचे रखकर) नहीं ? क्यों ?

चंपा : चाय पी सीधे से।

सखाराम : लगता है तेरे सर पर भी गरूर चढ़ गया है।

चंपा : तो क्या करेगा तू ? मारेगा हमें ?

सखाराम : समय पड़ा तो मारूँगा ही। क्या छोड़ दूँगा ?

चंपा : समय पड़ेगा तो देखी जायेगी। अभी चाय पी। ठण्डी हो रही है।

सखाराम : मैं उसको इस घर में रहने नहीं दूँगा चाहे जो हो।

चंपा चाय का प्याला उठाकर उसके मुँह से लगाती है। वह प्याला अपने हाथ से पकड़कर पीने लगता है। नाराजगी के साथ ही।

सखाराम : एक बार छुटकारा हुआ कि छुटकारा ! फिर दुबारा उसे यहाँ आने की जरूरत ही क्या थी ? मैं क्या मरद हूँ

उसका ?

अन्दर लक्ष्मी धीरे-धीरे काम मे जुट गई है। जरा लँगड़ा रही है।

चंपा : दो दिन रहने दो। फिर उससे वह देंगी हम जाने को। यही विचारी के पास ठौर-ठिकाना भी तो नहीं है जहाँ जाये वह ?

सखाराम : तो क्या जिन्दगी भर का ठेका ले रक्खा है उसका ? उसे कल ही यहाँ से जाने को कह दे चंपा ! मुझे दुबारा उसका मुंह न दिखाई दे। बेशरम साली ! कहती है मरते वक्त पाँव की धूल चाहिए।

कुढ़ता रहता है। चाय खत्म होने पर उसके हाथ से प्याला तश्तरी लेकर चंपा रसोई मे जाती है। काम करती हुई लक्ष्मी उसके आते ही काम छोड़कर हट जाती है।

लक्ष्मी : (भयभीत-सी) क्या हुआ ?

चंपा : काम कर लू। नही तो करेगी क्या ? और कोई है क्या देखने वाला तुझे ? पर एक बात याद रख ! यहाँ रहना है तो चुप मार के रह ! बोलने का काम नही।

बाहर सखाराम कमरे भर मे अभी भी बेचैनो से चक्कर काट रहा है। उसी बेचैनी मे ताख के पास जाकर बोतल निकालता है, पीता है। फिर न जाने क्या सोचकर मृदंग निकालता है। धूल झाड़ता है। नीचे रखकर कवर उतारता है। और जोर से उसपर थाप मारता है। भीतर लक्ष्मी मृदंग की आवाज से

सर्वांग सिहर उठती है। सखाराम आपे से बाहर होकर मृदंग बजाने लगता है। रसोई में चंपा और लक्ष्मी काम कर रही हैं। सखाराम बदहवास-सा जोर जोर से मृदंग बजा रहा है। दाऊद आता है। सखाराम का उस पर ध्यान नहीं जाता।

सखाराम (एकाएक दाऊद को आया देखकर) कौन? दाऊद? बड़े दिनों बाद आ। की फुर्सत मिली। क्यों? क्या हो गया था?

दाऊद : कुछ नहीं ऐसे ही। मगर सखाराम भाई! आज मृदंग सुनकर लग रहा है जैसे पुराने दिन फिर लौट आए।

सखाराम : कैसे पुराने दिन?

दाऊद : जब यह पंछी था—यह लक्ष्मी।

सखाराम इस बात के साथ ही मृदंग पर से अपना हाथ खींच लेता है। लक्ष्मी दाऊद की आवाज सुनकर रसोई के दरवाजे पर आकर खड़ी हो जाती है।

लक्ष्मी : (बिना बोले अपने को रोक नहीं पाती) दाऊद भाई!

दाऊद : (आनंदित होकर) अरे! सचमुच! (सखाराम से) क्यों सखाराम भाई। एक से दो पंछी हो गए क्या? कि चंपा गई?

सखाराम : (तीखे स्वर में) चुप रहो! नहीं तो भाग जाओ यहाँ से! बक बक मुझे पसंद नहीं!

मृदंग फिर पीटने लगता है, बहुत उत्तेजित होकर। दाऊद विमूढ़-सा बैठा है। दरवाजे पर लक्ष्मी खड़ी है। रसोई में

चुपचाप काम मे व्यस्त चंपा।

चंपा (लक्ष्मी से) ए! अब काम भी करेगी—या वही खडी खडी तमाशा देखेगी तू ?

लक्ष्मी रसोई मे आ जाती है और काम मे लग जाती है। मृदग बजाता हुआ सखाराम और बगल मे विमूढ़-सा बैठा हुआ दाऊद।

अन्धकार।



दृश्य पाँचवाँ

•

रसोई में हल्का उजाला। रात का अंतिम प्रहर। दूर कहीं मुर्गे की बाँग। रसोई में रखी चिमनी के उजाले में लक्ष्मी की बडी सी काली परछाइँ जो रसोई भर में फैली पसरी हुई है। लक्ष्मी हल्के

हाथ से ताली बजाती हुई धीरे-धीरे बोल रही है।

"सीताराम सीताराम सीताराम जै सीताराम"

धीरे-धीरे स्वर और लय तेज होने लगता है।

: (बाहरवाले कमरे के अन्धकार में से सखाराम की आवाज सुनाई देती है) अरे क्या हो रहा है यह ? बन्द कर यह बक बक। बन्द कर फौरन !

लक्ष्मी फिर हल्के हाथ से ताली बजाती हुई सीताराम जै सीताराम बुदबुदाती रहती है।

सखाराम बन्द कर नहीं तो गला घोट दूंगा तेरा ! ऐंठ जायेगी इसी दम ! साली अच्छी मुसीबत है—

लक्ष्मी अब भी बुदबुदाती जा रही है 'सीताराम, सीताराम' ताली इतनी हल्की कि सुनाई नहीं दे रही है।

: चिमनी बन्द कर सो जा चुपचाप। नहीं तो समझ ले अच्छा नहीं होगा ! चुप साली ! चुप ! नहीं तो वह हाथ दूंगा कि खून उगलन लगेगी अभी।

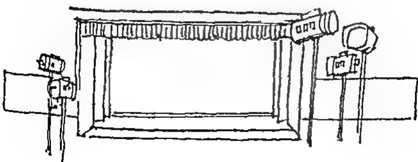
लक्ष्मी को हल्की तालियाँ और बुदबुदाहट इसके साथ ही रुक जाती है। वह डरी डरी सी उठती है। चिमनी फूंककर बुझाती है। कमरे मे पूरी तरह अन्धकार। खिड़की के बाहर दूर से आता हुआ हल्का-सा अप्रत्यक्ष प्रकाश का आभास भर रह जाता है।

: फिर बोल रही है बोलती ही जा रही है

इसके बाद एकदम सन्नाटा । सिर्फ झींगुरों की आवाज और सखाराम की भुनभुनाहट, 'चमरचिट्ट साली मादरचो ' बाहर के कमरे से उठती हुई चपा की नशे मे डूबी बडबडाहट, तथा गहरी निश्वास इस सन्नाटे को तोडती रहती है । अन्धेरी रसोई मे लक्ष्मी पहले बदन सिकोडकर सोने के लिए लेटती है फिर बिस्तर पर ही उठकर बैठ जाती है ।

लक्ष्मी (एकदम उत्तेजित होकर फ्रॅंटिकली) सीताराम सीताराम

फिर एकदम आवाज दबा लेती है । अन्धेरे मे खिडकी के बाहर के अप्रत्यक्ष आलोक के धुधलके मे लक्ष्मी की सिर्फ हिलती हुई आकृति दिखती रहती है । पूर्ण अन्धकार ।



दृश्य छठा

•

उजाला। दिन का समय-दुपहर। घर में कोई नहीं है। कुछ क्षण बीतते हैं फिर बाहर से दरवाजे की साँकल कोई हड़बड़ी मे खोलता है। दरवाजा खोलकर लक्ष्मी अन्दर आती है। वह जोर-जोर से हाँफ रही है। चेहरे पर कुछ बहुत भयंकर घटित हो जाने का-सा भाव। पहले वह भागकर रसोई मे जाती है फिर लौटकर जल्दी से बाहर दरवाजे के पास आती है। झपटकर कुण्डी बन्द करती है। फिर रसोई में भगवान की तस्वीर [illegible] पास जाती है। बैठती है। बहुत जोर से हाँफ रही है जैसे जान निकली जा रही हो।

लक्ष्मी : (हाँफती हुई भगवान की तस्वीर से) तुम्हें…मालूम है? मालूम है तुम्हें? कुछ जाना? ओफ!…भयानक… बहुत ही भयंकर! मुझे तो…लग रहा था कि वह ऊपर सामने गिर ही पड़ूँगी…बाप रे…उई अम्मा रे' क्या था वह…क्या था वह बोलो! हाय अब क्या करूँ मैं…

मेरे तो कुछ समझ नहीं आ रहो है···देखो न भगवान ! कितना भयानक···सीताराम सीताराम···हाय दैया रे वह चंपा···उस मुसलमान के पास···उई रे अम्मा !

फिर हाँफती रहती है।

: उसके पीछे-पीछे न जाती तो अच्छा होता ! मगर जी नहीं माना। (अपने मुँह पर तड़ातड़ मारती हुई) क्यों नहीं माना जी ?

: क्यों गई मैं ? मगर क्यों गई बताऊँ ? मुझे शक पड़ रहा था पिछले हफ्ते भर से कि यह जाती कहाँ है ? इसलिए आज उसके पीछे-पीछे चली गई मैं। जो करम में था वह आदमी फला नहीं। इसको पति मानके पूजा। यहाँ से चली गई तो भी मन ही मन इनकी पूजा किया करती थी।

: यह देखो। (ब्लाउज में से डोरे में पिरोया मंगलसूत्र निकालकर) यह मंगलसूत्र उनके नाम पर। मैं उनकी हूँ ! लात-घूंसा खाऊँगी पर उनको नहीं छोड़ूँगी। उनके पांव पर सिर रखकर मर जाऊँगी। (क्षुब्ध स्वर में) उनके साथ इसका यह व्यवहार ? उनके पीछे उस मुसलमान के पास···

थूक निगलती है।

: सहा नहीं जाता भगवान ! इससे तो अच्छा मैं मर जाती। कितना बड़ा पाप। यह मर के कौन से नरक में जायेगी ? अपने साथ इनको भी ले डूबी (सिहरती है) दय्या रे। घर में दोनों कितनी ढेर दारू पीते हैं···न दिन का पता न रात का···मैं थी तो यह सब कुछ नहीं था। मैं यह सब कभी न होने देती···और अब तो··· अब मैं कैसे क्या करूँ···उनको तो इसके यह सब चरित्तर

मालूम भी नही है'''वह बिचारे जानते भी न होंगे कि यह उस मुसलमान के पास ''

सर्वाङ्ग सिहरती है।

: छिः छि याद करके ही जी मचला रहा है—

मुंह पर हाथ रखकर दबाती है। बाहर के दरवाजे पर खटखटाहट।

: (भयभीत होकर) हाय राम आ गई लगता है। अब क्या करूँ ?

जल्दी-जल्दी तस्वीर के आगे माथा रगड़ती है। बाहर के कमरे में आकर दरवाजा खोलती है। खोलकर अन्दर को जाने लगती है। चपा का आदमी झुका हुआ दरवाजे से अन्दर आता है। अब और अधिक विद्रूप हो उठा है। पैर मे कुछ नहीं है। चेहरे पर चोट का निशान।

व्यक्ति : चपा ' ए चपा'''

अन्दर जा रही लक्ष्मी यह सुनकर चौंकती है और वहीं रुक जाती है।

: चपे' मैं आ गया मार न मुझे मुझे मार तेरे हाथ मरने को आया हूँ चपे। यहाँ से अब मर के ही जाऊँगा ! सुना चपा !

लक्ष्मी मुड़कर देखती है।

: हाय तू चपा नही है ? तू तो कोई और है चपा कहाँ गई फिर ? कहाँ गई ? हाय चपा कहाँ गई ? चपा'

आँखें बन्द कर के हताश-सा नीचे बैठ जाता है।

लक्ष्मी : (यह सब देखकर बहुत भयभीत है) कौन हो तुम ? कौन हो बोलो (जल्दी से अन्दर से थोड़ा पानी लाकर उसे देती है) लो, यह पानी पी ला पहले। लो पियो।

: (यह एक सांस में सारा पानी पी जाता है) कौन हो तुम ? चपा के

वह व्यक्ति चपा का आदमी।

लक्ष्मी सिहर उठती है।

कहाँ चली गई चपा ? मुझे मेरी चपा ला दे ! आज उसके हाथों मरूँगा ! मरने आया हूँ मैं। चपा

लक्ष्मी : घर में नहीं है। कहाँ से आए हो तुम ?

यह सिर्फ हाथ के इशारे से जताता है 'क्या पता'।

: कहाँ रहते हो ?

वह व्यक्ति : सड़क पर, नाले मे, मरघट में (रोता है) कहीं भी

लक्ष्मी : (उसके पास जाए बिना अपने को रोक नहीं पाती) ऐसे रोओ मत। आदमियो यह अच्छा नही लगता। इत्ते बड़े होकर रोते हैं कोई ? क्या हुआ है तुम्हें ? बुखार है क्या ?

उसका बदन छूती है और तुरन्त ही हाथ हटा लेती है।

नहीं तो। फिर क्या बात है ? भूख लगी है क्या ? रुको ! देखती हूँ कुछ है क्या खाने को।

रसोई मे जाती है। एक कटोरी में जल्दी से कुछ डालकर ले आती है। इस बीच वह जेब मे से बोतल निकालकर जल्दी से घूँट भर लेता है और बोतल जल्दी से जेब में रख लेता है।

लो खा लो ये ।

कटोरी उसके सामने रखती है वह वैसे ही बैठा रहता है ।

रुको अच्छा ! मुंह खराब हो गया होगा तुम्हारा !

अन्दर जाकर पानी और एक अगोछा लेकर आती हैं ।

धो लो इससे । यह लो । कुल्ला कर लो ।

वह उसी तरह बैठा हुआ है ।

हाय दैय्या ! पेट मे कुछ भी नही है तुम्हारे ?

साहस करके अपने हाथ से उसका चेहरा पोंछती है ।

: कैसे आदमी हो । लो अब खाओ । अच्छी तरह से बैठ जाओ पहले ।

वह हिलता भी नहीं ।

अपने हाथ से खाने की ताकत नहीं है ?

स्वयं खिलाने लगती है ।

: हाँ, ये लो, खा लो । दो कौर जायेगा पेट में तो जरा अच्छा लगेगा समझे ! दारू पीना भी अच्छा नहीं है ! क्या धरा है उसमे ? वही गंदी सडी गली सब चीजें, छि !

यह व्यक्ति : पानी

लक्ष्मी : पानी ? रुको, अभी ले आती हूँ ।

अन्दर जाती है । वह व्यक्ति फिर जेब से बोतल निकलकर जल्दी-जल्दी दो-तीन घूंट गले के नीचे उतारता है और बोतल फिर जेब मे रख लेता है । लक्ष्मी पानी लेकर आती है ।

: लो पानी पी लो।

अपने हाथ से पिलाती है।

: अभी भी हिम्मत नही है ? कैसी गत बना रक्खी है ! चपा तो बुरी है पर उसके पीछे तुम क्यो ?

उसका चेहरा देखती हुई।

: यहाँ यह चोट कैसे लग गई ?

वह व्यक्ति : उसने उसने मारा है।

लक्ष्मी : किसने ? चपा ने ?

वह सिर हिलाकर हामी भरता है। सुनकर लक्ष्मी स्तभित हो उठती है।

यहाँ पहले आ चुके हो तुम ?

वह सिर हिला कर हाँ करता है।

' मार के उसने तुमको बाहर निकाल दिया ? बाप रे औरत है कि डाइन ! और तुम भी कैसे हो। तुमने उससे मार कैसे खा ली ? अच्छे भले पांच हाथ के आदमी हो के मार खा ली औरत से ?

वह व्यक्ति नही मुझे और मार चाहिए उसके हाथ से मर जाऊँगा 'मुझे अब जीना नहीं है' क्या करूँ जी के ? नौकरी चली गई, औरत चली गई घर चला गया' क्या बचा अब ?

रोता है।

: क्या बचा है ?

लक्ष्मी : अच्छा अब चुप भी हो जाओ। कही कोई सुन लेगा।

अनजाने में उसके मुँह पर हाथ रखती है।

: वह अब आती ही होगी। कहाँ गई है मालूम है तुम्हे ?

बताए या न बताए इस असमंजस मे

कुछ क्षण चुप रहकर।

: अच्छा जाने दो। तुम्हे और दुख लगेगा। तुम यहाँ से अब चले जाओ।

वह वैसे ही बैठा है।

: यही वह आ गई तो बवाल मचायेगी। उठो अब।

वह वैसे ही बैठा रहता है।

: उठो। जाओ।

उसे सहारा देकर उठाने लगती है। वह जान बूझकर लक्ष्मी पर अपना भार डाल देता है। फिर किसी तरह खड़ा हो जाता है।

: जाओ! जी करे तो बाद मे फिर चले आना। पर वह न रहे तब आना! मैं तुमको खाना दूंगी। उसके रहते न आना। अच्छा जाओ अब!

उसे लगभग ढकेल कर बाहर करती है पीछे-पीछे स्वय भी जाती है वापस आती है। क्रोध से दांत पीस कर।

: पापिन! चण्डालिन! कभी भला नही होगा तेरा! अपने आदमी को छोड दे' दूसरे को फँसाया और अब तीसरे से 'विभिचार' करती घूमती है। छि छि छि। ऊपर से आदमी पे हाथ उठाती है राम राम सीताराम?

अन्दर कमरे मे रखी भगवान की तस्वीर के पास तेजी से भाग कर जाती है।

: देखा तुमन? (आँखें बन्द करके) सीताराम सीताराम

अन्धकार।

दृश्य सातवाँ

उजाला। शाम का समय। रसोई मे चंपा। लक्ष्मी सर और कमर पर पानी से भरे हुए घड़े लेकर अन्दर आती है। किसी तरह कमर वाले घड़े को उतार कर नीचे रखती है फिर सिर वाले को भी उतार कर राहत से "हुश्श" करती है। जैसे यह काम उसके बूते से बाहर थे। वह पहले से भी ज्यादा कमजोर लग रही है। चंपा एक बार नजर उठा कर उसे देखती है फिर अपने काम मे लग जाती है। लक्ष्मी एक-एक करके दोनों घड़े रसोई की नाली के पास रखती है। फिर दूसरे कामों में जुट जाती है।

चंपा : एई! आजकल दुपहरी में कौन आता है घर पे?
लक्ष्मी : कौन?
चंपा : हमें का पता कौन? घर पे तो तू रहती है!
लक्ष्मी : (जवाब टालने के लिए) कौन आयेगा?
चंपा : हमारा मरद कित्ती दफा आ चुका घर पे?

लक्ष्मी : (घबरा जाती है) मरद ..?

चंपा : एई देख ! झूठ तुमसे बनेगा नही। सच्ची बात जो है वह झट से बता दे हमे।

लक्ष्मी : तीन दफे।

चंपा : काहे को घुसने दिया हरामी को घर मे ?

लक्ष्मी : (घबराई हुई) वह'''उसकी तबियत अच्छी नही थी। फिर मुझे क्या मालूम कि वह कौन है। और जब वह अपने से आता था तो बाहर कैसे ढकेल देती ?

चंपा : हमारे आने के पहले कैसे चला जाता रहा घर से ?

लक्ष्मी · वह वह अपने से ही चला जाता था' हाँ सच कहती हूँ।

चंपा : तूने हमे बताया क्यो नही कि वह आता है ?

लक्ष्मी . मैं (बहुत घबराई हुई है) मैंने ' मैंने सोचा बताऊँ कि न बताऊँ '

चंपा : (उसके सामने जाकर कमर पर हाथ रखकर खडी हो जाती है) एई ! हमसे चार सौ बीसी न कर, बताए देती हूँ।

लक्ष्मी इस पर कुछ जवाब देने को है पर हिम्मत नहीं पडती।

। सीधे से रहना है तो रह यहाँ। हमी ने रखा है तो रह पाई है यहाँ। याद है कि नही ? उस हरामजादे को फिर से घर के भीतर घुसने न देना कहे देती हैं हम। नही तो तेरी भी हड्डी-पसली एक कर देंगी हम समझी रह।

लक्ष्मी खड़ी-खडी काँप जाती है। उसे कोई बात बहुत जोर से चिल्लाकर चंपा से कहनी है पर वह साहस नहीं कर पा

रही हैं। चम्पा उसके सामने से हटकर फिर से चूल्हे के पास बैठकर काम में लग जाती है।

जा पीछे वाले दरवाजे पे झाड़ू लगा आ जाके।

लक्ष्मी झाड़ू लेकर चली जाती है चम्पा चूल्हे के पास काम में व्यस्त है। अन्धकार।



दृश्य आठवाँ

उजाला। दोपहर का समय। लक्ष्मी भगवान की तस्वीर के पास। घर में और कोई नहीं है।

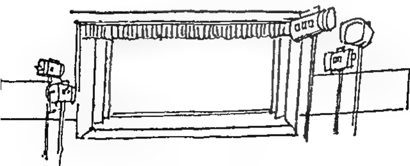
लक्ष्मी (तस्वीर से) सीताराम! सीताराम! देखा भगवान? देखा कुलच्छनी को? अपने आदमी का आना भी बन्द कर दिया। उसे सहारा मिल रहा था ना इसीलिए। मैं

उसकी तबियत अच्छी कर देती। मगर इसको फिर वह भारी पड़ता। सीधा है बिचारा। यही छोड़के आ गई उसको। मिला मिलाया अपन से छोड़ दिया। वह इसको अपने घर ले जाने को कहता है पर यही नहीं जाना चाहती। उसके रहते गुरछर्रे कैसे उड़ायेगी। यह तो चाहती होगी कि वह मर जाये। यह एसी-वैसी नहीं है। बड़ी पक्की है। पापी है पापी मुझे धमका रही थी। क्या कर लेगी मेरा? मैं पापी नहीं हूँ! मेरा चरित्र खरा है इसकी तरह नहीं! मैं हमेशा धरम करम से रहती हूँ। मेरा क्या कर लेगी वह? वह तो अभी भी वहीं होगी उसी मुसलमटे के पास

थूक निगलती है।

उसको कभी छमा नहीं करना भगवान कहे देती हूं। बहुत बुरी है वह।

यह कहते कहते क्रमशः अन्धकार।



दृश्य नवाँ

उजाला। रात का समय। रसोई में लक्ष्मी और चंपा। लक्ष्मी भगवान की तस्वीर के आगे स्तोत्र की फटी हुई पुस्तिका पढ़ रही है। चंपा चूल्हे के पास बैठी हुई तरकारी काट रही है। बाहर के कमरे में सखाराम चिलम सुलगाए हुए दम मार रहा है। पास में रखा हुआ मृदंग और कुछ हटकर बिछावन।

सखाराम : चंपा !

चंपा : (नाराजगी से) आई।

चंपा अपना काम उसी तरह करती रहती है। लक्ष्मी उसकी तरफ एक निगाह देखकर फिर स्तोत्र पढ़ने लगती है।

सखाराम : चंपा ! क्या कर रही है ?

चंपा : (ठण्डे स्वर में) तरकारी काट के धर रही हूँ सवेरे के लिए।

सखाराम : वह सवेरे कट जायगी। सोने चल अब।

चंपा सब्जी काटती ही रहती है। लक्ष्मी सारी बातें सुन-समझ रही है पर अब वह उस तरफ देखना टालती है।

सखाराम : (आवाज में कठोरता) चंपा'

चंपा सब्जी काटना रोककर, सामान सारा पटककर रखती है। उठकर हाथ धोती है और आंचल मे पोंछती हुई बाहर के कमरे मे आती है।

यह दरवाजा बन्द कर बीच वाला और बत्ती बुझा दे।

चंपा जानबूझकर देर लगाकर दोनों काम करती है। बिस्तर के करीब जाती है। रसोई मे लक्ष्मी का ध्यान स्तोत्र से अब उचट गया है। ध्यान बाहर के कमरे मे। सखाराम बिस्तर के पास जाता है। चंपा बैठी हुई है।

: चल। सो चलकर।

वह बैठी ही हुई है। सखाराम जबरन उसे बिस्तर मे लिटा देता है। लक्ष्मी रसोई मे टहलती रहती है। सखाराम उससे कर्कश स्वर मे।

: ए भीतर वाली बत्ती बन्दकर फौरन।

लक्ष्मी जल्दी से चिमनी फूंक देती है।

एकदम अन्धकार।

कुछ देर सब उसी तरह। फिर सहसा कुछ धर पकड़ कुछ रुकफुल होने की आवाजें बाहर के कमरे से उठने लगती हैं।

चंपा (कठोर स्वर मे) नही नही आज नही नहीं

सखाराम चंपा सीधे से

चंपा नही। दूर हट पहले हट उधर हट जा उधर जा नही तो

सखाराम (वेदना से एक चीत्कार) ओह साली मादरचो ठहर बताता हूँ तुझे

चंपा बदन को हाथ न लगा हमारे कह देती है। दूर हटता है कि नही दूर दूर

यह तू तू मैं मैं बढ़ती है फिर चंपा की पाशविक चीत्कार। अन्धकार मे वह झटके से उठकर बिस्तर से बाहर आई हुई दिखाई देती है। रसोई मे लक्ष्मी की छाया स्तब्ध बैठी हुई दिखती है। सखाराम की छायाकृति बिस्तर से उठती है।

सखाराम (चंपा की ओर खूंखार जानवर की तरह बढ़ता हुआ) चल किसे चोचले दिखा रही है तू सड़क पर पडी थी मैंने खाने का ठिकाना किया तेरा चल पहले चल

चंपा हम चिल्लाके गाँव इकट्ठा कर लेंगी, बताए देती हैं। हमे तकलीफ होती है।

सखाराम हुआ करे साली! इस घर मे मेरी इच्छा चलेगी—तेरी नही

चंपा हमसे सहा नही जाता अब।

सखाराम तेरी ऐसी की तैसी। तेरे नखरे उठाने के लिए नही लाया हूँ तुझे यहाँ चल पहले चल चल इधर

चंपा (उसे झिड़क कर) नही! हट यहाँ से! तू जब तक मरद

था तब तक सह लिया तुझे अपने पे'''अब छूने भी न देगी।

सखाराम : चंपे'''

चंपा : हाँ हाँ चिल्ला जित्ता चिल्लाना हो। हमसे अब नहीं सहा जाता। जी नहीं मानता तो जाके अलग पड़ रहा कर। पिछले कित्ते दफे तो हुआ! तुझसे कुछ बनता-बनाता नहीं। उधर भीतर जरा-सी खटखट सुई कि ढीला पड़ जाता है तू, क्यों, झूठ कह रही हैं हम ?

सखाराम : चंपे''

चंपा : अरे चंप-चंपे क्या चिल्ला रहा है रे मुरदे! तू अब मरद नहीं रहा! तू हिजड़ा है हिजड़ा! पौने आठ साला! हरामी! जा, काशी जा के गंगा किनारे बैठ। हमारे रास्ते में न आ कहे देती हूँ'

सखाराम : मुँह सँभाल कर बोल चंपे'''बहुत बुरा आदमी हूँ मैं''

चंपा : अरे जा जा धौंस किसे दिखा रहा है ? उसी लछमी को दिखा अपनी धौंस'''हम वैसी नहीं''

सखाराम : हस्साली मादरचो '

चंपा पर झपटती हुई सखाराम की धुंधली-सी परछाईं। अन्धकार में हाथा-पायी। रसोई में लक्ष्मी स्तब्ध खड़ी हुई है। बाहर के कमरे में चंपा चीखने को है कि वह सखाराम उसका मुँह दबाकर चीख रोक देता है। सखाराम की गुर्राहट। उठापटक। चंपा की चिंघाड़ भरी कराह। सिलसना। सखाराम के शब्द।

: पी साली! पी! पी और पी—खोल मुँह'' थूक रही

है'''स्साली मादरचो'''पी'' पियेगी कि पी

उठापटक अब बन्द हो गई है। स्तब्धता। सिर्फ चंपा की एक गहरी निःश्वास। सखाराम की अस्पष्ट बर्राहट। शेष सन्नाटा। रसोई के दरवाजे के बन्द दरवाजे के पास बेचैन खड़ी हुई लक्ष्मी की आकृति। फिर पूर्ण अन्धकार।



दृश्य दसवाँ

●

अन्धकार कम होता है। बिछावन पर से चंपा की अस्पष्ट बड़बड़ाहट सुनाई दे रही है। सखाराम उठता है फिर चौक के दरवाजे के पास जाता है। कुण्डी खोलता है। आहट होते ही लक्ष्मी झटके से उठकर खड़ी हो जाती है। हड़बड़ा कर जल्दी से दिया जलाती है। दरवाजे पर सखाराम खड़ा है। क्रोध से उसे देख-देखकर।

सखाराम : बाहर निकल यहाँ से। जा'''अभी जा यहाँ से

लक्ष्मी बुरी तरह भयभीत होकर कांपती है।

: तेरे कारण उसने नामरद कहा मुझे। हरामजादी। दुनिया मे तुझे कोई पूछने वाला नही तो मेरी छाती पर क्यो आकर बैठ गई ? मर क्यो नही गई ? मैं क्या लगता था तेरा ? अपना धरम-करम लेकर भले ही कही मर-खप जाती। मुझे दरद न होता। भगवान के बाप का भी करजदार नही हूं मैं। अपने लिए मैं खुद काफी हूं। ब्राह्मण के घर जनम लेकर भी चमार की औलाद हूं। साली क्यो आई तू यहां पर ? क्यो बैठ गई यहां आकर ? जा अभी निकल यहां से। उठा अपना झोला-झंडा, उठा! जा यहां से जा ! मैं पहुंचा दूंगा तेरी गठरी-मुठरी। तू निकल यहां से, पहले। जा कह रहा हूं—चली जा यहां से। मादरचो· सुन रही है कि नही ?

लक्ष्मी : (जैसे-तैसे) सबेरे तक कम से कम· ·

सखाराम : नही, अभी, इसी वक्त। मैं अपने ही तरीके से रहूंगा। तू या तेरी पूजा पाटी की हमारे घर जरूरत नही। उठा तस्वीर यह...उठाती है कि मारूं एक लात ·

वह हड़बड़ाकर जल्दी से उठाकर छाती से चिपका लेती है।

लक्ष्मी : भगवान को क्यो· ·

सखाराम : फिर इस घर मे ले क्यो आई उसे। साला, तेरे बहाने मेरे घर घुस आया हरामखोर !

लक्ष्मी : ऐसे न बोलो—

सखाराम : जा जा मैं नही डरता उससे। मजे से जी रहा हूं · अपने तरीके से। अपनी मर्जी से जी रहा हूं। मजे मे राजा की तरह जिन्दगी बिता रहा हूं। किसी को धोखा नहीं दिया

आज तक। किसी से झूठ-फरेब नही किया। मैं क्यो डरूँ किसी से ? ये तेरा ठाकुर-फाकुर क्या कर लेगा मेरा। जा तू- निकल यहां से पहले जा .जा निकल घर से

लक्ष्मी : (और कोई रास्ता नहीं है यह जानकर कांपते हाथों अपना सामान एकत्र करने लगती है) सबेरे चली जाती

सखाराम का आक्रामक पैंतरा देखकर बहुत भयभीत होकर।

: नही नही—जाती हूँ—अभी ही जा रही हूँ .

सारी चीजें समेट कर उठाती है सखाराम के पास आती है एकाएक उसके पैर पर झुकती है।

सखाराम. : (उसे लात मारकर) बाहर चल

लक्ष्मी बुरी तरह भयभीत होकर कांपती है। बहुत दीन-हीन हो उठती है। सिमटी सकुची बाहर के कमरे मे आती है दर-वाजे के पास तक आती है। पीछे पीछे सखाराम है। वह उसके पैर पर फिर झुकती है। सखाराम पीछे हटकर ।

हट मेरा कोई नाता नही मुझसे ..जा भाग नही वह लात लगाऊँगा पेट मे कि खून उगल देगी !

लक्ष्मी कांपते हाथों से दरवाजा खोलने लगती है। फिर ठिठकती है।

लक्ष्मी : मैं जाती हूँ पर एक बात कहना है..

सखाराम : कुछ कहने की जरूरत नही है ..

लक्ष्मी : अपनी नही। तुम्हारे फायदे की .

सखाराम : कुछ सुनना नही है मुझे !

लक्ष्मी : मैं .मैं ठहरूँगी नही .कहकर झटपट चली जाऊँगी—

बात तुम्हारे फायदे की...

सखाराम : (जरा रुककर) क्या है...

लक्ष्मी : (बेहोश चंपा की तरफ उँगली से इशारा करके) वह... वह अच्छी नहीं है...

सखाराम : यह मैं देख लूंगा...

लक्ष्मी : तुम्हें धोखा देती है वह...

सखाराम : तुझसे मुझे यह सब नहीं सुनना है...निकल तू...

लक्ष्मी : वह ..उस मुसलमान के पास जाती है...रोज...

सखाराम : क्या ? मुसलमान के पास ?

लक्ष्मी : हाँ .दाउद...दाउद के पास...

सखाराम : (आगे बढ़कर उसके मुँह पर थप्पड़ लगाता है) मुँह तोड़ दूँगा।

लक्ष्मी : मैंने देखा है...अपनी आँख से...भगवान की कसम खाती हूँ...

सखाराम लक्ष्मी पर आपे से बाहर होकर टूट पड़ता है—उसे बेतहाशा मारने लगता है—वह लौंदे जैसी गिर पड़ती है। चंपा बेहोशी में बड़बड़ा रही है।

चंपा : (अस्पष्ट) दूर हट मुरदे...दूर हट तू...हट साले हिजड़े हट...नामरद...हट केंचुए...हमें न सता...

सखाराम : (लक्ष्मी को एक और लात जमाकर) हूँ ! (फिर किसी सनक में उसे उठाकर बैठाता हुआ) बोल फिर से...फिर से कह के देख...

लक्ष्मी : (उसी तरह पड़ी हुई) सच है...सच है...कसम खाती हूं मैं ...यह जीभ झूठ कभी भी नहीं बोली...तुम्हें धोखा दे रही है चंपा...हाँ...दाउद...दाउद के साथ वह...दुपहर में...जब तुम प्रेस में रहते हो...मैंने देखा है अपनी आँख

से...अपनी आँख से देखा है।

सखाराम उसे अत्यन्त क्रोध में भरकर ज़ोर से ढकेलता है और तीर को तेजी से बाहर चला जाता है। लक्ष्मी की कराह। चंपा की बेहोशी में बड़बड़ाहट। दूर कहीं कुत्ते के भूंकने की आवाज। अन्धकार।



दृश्य ग्यारहवाँ

•

अन्धकार हल्का होता है। लक्ष्मी दीवार से टेक लगाए निश्चल बैठी हुई है। तस्वीर सामने रखी है। बीच-बीच में कराहती जा रही है। सखाराम दरवाजे से भीतर आता है। दरवाजा बन्द कर लेता है। लक्ष्मी को देखता है। फिर उसको एक लात मारता है। वह दर्द से छटपटाकर बिलखती है। सखाराम चिढ़कर फिर सीधे चंपा के बिछावन के पास जाता है। एक क्षण खड़ा-खड़ा उसे

देखता है फिर झटके से नीचे बैठता है और क्रोध से बेहाल, गरजता हुआ चंपा की गर्दन दोनों हाथों से पकड़ कर पूरी ताकत से दबाता है। चंपा की दमघुटी-सी अस्पष्ट आवाज कुछ देर तक आती है फिर बन्द हो जाती है। मगर सखाराम बार-बार उसकी गर्दन मरोड़ता ही रहता है। फिर निश्चेष्ट पड़ी चंपा की तरफ क्षण भर देखता है। एकाएक भय से सिहर उठता है।

सखाराम : (घबराया हुआ अस्पष्ट) खून ! (स्पष्ट) खून (अस्पष्ट) खून. .

लक्ष्मी भी भय से अवसन्न।

सखाराम : खून...खून ..

लक्ष्मी घिसटती हुई तेजी से चंपा और सखाराम की ओर बढ़ती है। एक बार चंपा की निश्चेष्ट पड़ी हुई देह को और एक बार सखाराम को घबराकर देखती है।

सखाराम : (वहशत से) खून. .खून कर दिया मैंने...खून ..खून... कर दिया।

लक्ष्मी : (एकाएक साहस करके) शश्श...चिल्लाओ नहीं ! बिलकुल नहीं !

निश्चेष्ट पड़ी चंपा को देखती हुई।

: चलो कोई बात नहीं। पापी तो यों ही मर के नरक में ही जायेगी। मैं तो पुण्यवान हूं। मेरे पास बहुत पुण्य हैं। मैं तुम्हारे साथ रहूंगी। तुम्हारी देखभाल ठीक से करूंगी

मैं। तुम्हारी गोद मे मरूँगी। तुम डरो नही। हाँ सच। चलो, हम लोग इसको जल्दी से गाड दें चल के वहाँ पर? बाहर नही बाहर नही यही पर घर के भीतर ही। कह देना कि भाग गई घर से कोई कुछ पूछेगा नही पर कोई पूछेगा तो मैं कह दूंगी उसे कि वह भाग गई अपन से चली गई मैं भगवान की कसम खाकर कह दूंगी। उसे सब पता है। वह तुम्हे पाप नही लगने देगा। मैं उससे कह दूंगी कि वह मेरा पुण्य तुम्हे दे दे। तुम्हारे लिए सब करूँगी मैं हाँ

जल्दी से तस्वीर पर माथा टेककर नमस्कार करती है। सखाराम के माथे से भी तस्वीर लगाती है। वह निश्चल है। लक्ष्मी तस्वीर को नीचे रखकर बारबार उसपर अपना माथा घिसती है। आँखें बन्द कर प्रार्थना करती है।

• (आँख खोलकर) चलो उठो अब। काम मे लगो। बगिया से कुदाल ले आओ जाके। मैं रसोई मे जगह खाली करती हूँ। देर न करो। सबेरा हो जायेगा तो बात फैल जायगी। रात भगवान की होती है। उसी का राज रहता है। आदमी दुष्ट होते है। पापी होते हैं, नीच होते हैं जैसे यह थी। चलो, दिन होने से पहले ही सब काम खतम कर दें हमलोग। चलो भगवान का हाथ मेरे ऊपर है।

भगवान को तस्वीर की तरफ इशारा करती है।

चलो उठो न। देरी न करो डरो नही मैं पुण्यवान हूँ वह तो पापी थी। मैंने कभी किसी से बुरा बर्ताव

नहीं किया। चीटी-चीटे के साथ भी नहीं।

मंगलसूत्र निकाल कर दिखाती है।

यह देखो देखो' तुम्हारे नाम पर बांधा है आज तक। पहले जिसने पहनाया था, उसने खुद तोड दिया था, मैंने नहीं तोड़ा था। इसने अपने मरद को छोड दिया, तुमको धोखा दिया। उसका कभी भी भला नहीं होता तुम अच्छे हो। भगवान तुम्हें क्षमा करेंगे। मैं कह दूंगी उनसे। मेरी सुनेंगे। रुको, मैं ही ले आती हूं कुदाल। तुम बैठे रहो अभी आती हूं मैं

घिसटती लंगडाती बाहर के अंधेरे में जाती है। विचित्र धैर्य से कुदाल लिए हुए आती है। सखाराम के हाथ मे देती है।

. लो चलो रसोई मे चलो

सखाराम आंखें फाडे हुए निश्चेष्ट चंपा को देखे जा रहा है। लक्ष्मी उठती है। पास खडी हुई चादर उठाती है चंपा का शरीर चेहरे तक ढक देती है।

: लो, हो गया ना ? अब कुलच्छनी से छुट्टी मिल गई। अब तो इसकी आत्मा नरक मे पहुंच भी गई होगी। भगवान को न्याय करने में कब देर लगती है।

(चम्पा की देह की ओर देखकर घृणा से) पापिन।

फिर सखाराम का हाथ पकडकर।

उठो। अन्दर चलो जल्दी। सवेरा होने से पहले सब पहले जैसा कर दो। किसी को पता नहीं चलेगा फिर। मैं कह दूंगी सब को कि भाग गई घर से

सखाराम अब बेजान-सा उठता है।

लक्ष्मी उसे रसोई में ले जाती है। कुदाल थमाती है।

: हाँ। लो यह। खोदो गड्ढा। (सखाराम निश्चल और अवाक् खड़ा है) खोदो! न?

सखाराम उसी तरह खड़ा है। कमजोर और चोटिल लक्ष्मी स्वयं कुदाल लेकर पूरी ताकत से गड्ढा खोदने लगती है। एक के बाद एक आघात धरती पर होता रहता है। हर आघात के साथ लक्ष्मी की हुंकार। अचानक दरवाजे पर थपथपाहट होने लगती है। सखाराम बहुत भयभीत और दयनीय। लक्ष्मी तनकर खड़ी हो जाती है। खट-खटाहट सुनती है ध्यान से।

चंपा का पति : (बाहर से दरवाजा खटखटाता हुआ नशे में डूबी आवाज में) चंपा! चंपा! चंपा तू कहाँ है? मुझे मार डाल चंपा! चंपा! दरवाजा खोल चंपा! मैं आ गया, मुझे मार डाल चंपा! मार न! चंपा-चंपू रे

लक्ष्मी : (घबराए सखाराम से) वही उसका मरद! थोड़ी देर खटखटायेगा फिर अपने रास्ते चला जायेगा। तुम बेफ़िकर रहो।

फिर पूरी शक्ति से गड्ढा खोदने लगती है। वह एक विशेष वेग से कुदाल चला रही है। उसकी कुदाल का एक के बाद एक पड़ता हुआ आघात। साथ-साथ उसकी दबी हुई हुंकार। बाहर के दरवाजे पर थपथपाहट। चम्पा के

पति की क्षीण होती हुई पुकार।

चंपा का पति चंपा चंपा चंपू रे। तू कहाँ है चंपा? चंपा मैं आया हूँ दरवाजा खोल चंपा चंपू रे

लक्ष्मी की बगल में खड़ा, बेजान-सा सखाराम। जैसे उसका सारा रस निचुड़ चुका है। बाहर के कमरे में सिर तक चादर से ढकी हुई चंपा की निश्चेष्ट देह। बाहर चम्पा के पति का उसके नाम पर एकसुरा अभद्र रुदन अब शुरू हो गया है। भयावह और क्षीण यह चलता ही रहता है। रात का अन्धकार।

परदा।

विजय तेंडुलकर

• मराठी के युवा नाटककार, जिन्होंने रंगमंच को परम्परा से मुक्त कर के भी सशक्त और लोकप्रिय बनाने में अभूतपूर्व सफलता पायी है। अलमस्त फक्कड़ स्वभाव के तेंडुलकर जनमानस में घुसकर नये नये चरित्र पकड़ने और उन्हें रंगमंच पर प्रस्तुत करने में माहिर हैं। वस्तुत यही उनका असली पेशा है। वैसे कहने को तो वे एक प्रतिष्ठित पत्रकार हैं और मराठी के एक प्रमुख दैनिक अखबार के सह-सम्पादक भी।

•

सरोजिनी वर्मा

• हिंदी प्रदेश में जन्मी और मराठी क्षेत्र में आरम्भिक शिक्षा दीक्षा प्राप्त करने वाली समर्थ भाषा शिल्पी—जिनके अनुवादों ने नाटकों में नयी जिंदगी भर दी है। मराठी साहित्य के आधुनिकतम स्वरूप को हिन्दी पाठक के सामने विविध रंगों में प्रस्तुत करने का श्रेय श्रीमती सरोजिनी वर्मा को ही है।

•